अनुपलब्धि निरूपण

40 पत्र

ले प्रभाकर

विषय- दर्शन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रतियोगिसैं विरोधस्पष्ट है जैसैं प्रागभावादिकनका प्रतियोगिसैं विरोध है तैसैं अत्यंताभावकाबी प्रतियोगिसैं विरोधकह्याचाहिये यद्यपि सकलअभावनका प्रतियोगिसैं विरोध होवै तौ जिसकालमैं भूतलमैं घट धर्‍या होवै तिसकालमैं घटका अन्योन्याभाव भूतलमैं नहीं हुया चाहिये औ घटवाले भूतलमैं घटका अन्योन्याभाव रहै है काहेतैं भेदकूं अन्योन्याभाव कहे हैं जाकूं अपनेसें अतिरिक्तता कहै है भिन्नता कहै है जुदापना कहै है घटवाला भूतलबी घटस्वरूप नहीं किंतु घटसैं अतिरिक्त कहियेहै घटसैं भिन्न कहियेहै घटसैं जुदा कहियेहै इसरीतिसैं घटवाले भूतलमैं घटका अन्योन्याभाव है यातैं घटकै अन्योन्याभावका घटरूप प्रतियोगिसैं विरोध नहीं तैसैं पटादिकनके अन्योन्याभावका पटादिकनसैं विरोध नहीं यातैं सकल अभावनका प्रतियोगीसैं विरोध कहना संभवै नहीं किंतु किसी अभावका प्रतियोगिसैं विरोध है किसीका विरोध नहीं है प्रागभावादिक दृष्टांतसैं अत्यंताभावका प्रतियोगिसैं विरोध साधै तब अन्योन्याभाव दृष्टांतसैं अत्यंताभावका प्रतियोगिसैं अविरोधबी सिद्ध होवैगा यातैं घटकै अन्योन्याभावकी नांई घटका अत्यंताभावबी घटके अधिकरणमैं संभवै है तथापि घटके अधिकरणमैं घट-का अत्यंताभाव संभवै नहीं काहेतैं अभावके दो भेद है एक अन्योन्याभाव है १ दूसरा संसर्गाभाव है २ संसर्गाभाव च्यारि प्रकारका है इसरीतिसैं पंचविध अभाव है तिनमैं अभावत्वधर्म सर्वमैं समान है औ निषेधमुख प्रतीतिकी विषयताबी सर्व अभावनमैं समान है तथापि अन्योन्याभावसैं चतुर्विध संसर्गाभावमैं विलक्षणता अनेकविध है जिसवाक्यमैं प्रतियोगि अनुयोगिबोधक भिन्नविभक्तिवाले पद होवैं तिसवाक्यसैं संसर्गाभावकी प्रतीति होवै है जैसैं उत्पत्तिसैं पूर्व कपाले घटो नास्ति इसवाक्यमैं अनुयोगिबोधक कपाल पद सप्तम्यंत है औ प्रतियोगिबोधक घटपद प्रथमांत है तहां प्रागभावकी प्रतीति होवै है तैसैं मुद्गरादिकनतैं घटका अदर्शन होवै तब तिसीवाक्यतैं घटध्वंसकी प्रतीति होवै है वायौ रूपं नास्ति इस वाक्यतैं वायुमैं रूपात्यंताभावकी प्रतीति होवै है तहांबी अनुयोगिबोधक वायुपद सप्तम्यंत है औ प्रतियोगिबोधक रूप

1489

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1420

पदप्रथमांतहै तैसैंभूतलेघटोनास्ति इसवाक्यजन्यप्रतीतिकाविषयसामयिकाभावहै तहांवीअनुयोगिबोधकभूतलपदसप्तम्यंतहै प्र
तियोगिबोधकघटपदप्रथमांतहै औभूतलंनघटः इसवाक्यसैंभूतलमैंघटकाअन्योन्याभावप्रतीतहोवैहै तहांअनुयोगिबोधकभूतलपदऔ
प्रतियोगिबोधकघटपददोनूंप्रथमांतहै इसरीतिसैंभिन्नविभक्त्यंतपदघटितवाक्यजन्यप्रतीतिकीविषयतासंसर्गाभावमैंहै अन्यो
न्याभावमैंनहीं औसमानविभक्त्यंतपदघटितवाक्यजन्यप्रतीतिकीविषयताअन्योन्याभावमैंहै संसर्गाभावमैंनहीं इसरीतिसैं अन्यो
न्याभावतैंविलक्षणस्वभाववाले चतुर्विधसंसर्गाभावहैं यातैंप्रागभावप्रध्वंसाभावकेदृष्टांतसैंअत्यंताभावकाप्रतियोगितैंविरोधहीसि
द्धहोवैहै विलक्षणस्वभाववालेअन्योन्याभावकेदृष्टांतसैंप्रतियोगितैंअविरोधसिद्धहोवैनहीं संसर्गाभावकी अन्योन्याभावतैंऔरवीविल
क्षणताहैं चतुर्विधसंसर्गाभावकापरस्परविरोधहै अेकसंसर्गाभावकेअधिकरणमैंअपरसंसर्गाभावरहैनहीं जैसैंकपालमैंघटकीउत्पत्ति-
सैंपूर्वघटकाप्रागभावहै तहांघटकाध्वंसवाअत्यंताभाववासामयिकाभावरहैनहीं तैसैंकपालमैंघटकाध्वंसहोवै तबप्रागभावादिक
तीनूंसंसर्गाभावरहैंनहीं औघटकाअन्योन्याभावकपालमैंसदारहैहै तैसैंभूतलमैंघटकासामयिकाभावरहै तहांवीघटकाप्रागभा
वप्रध्वंसाभाव अत्यंताभावतीनूंरहैंनहीं औघटकाअन्योन्याभावतहांवीरहैहै तैसैंवायुमैंरूपकाअत्यंताभावरहैहै तामैंरूपकाप्रागभाव
प्रध्वंसाभावसामयिकाभावतीनूंरहैंनहीं औरूपकाअन्योन्याभाववायुमैंरहैहै इसरीतिसैंचतुर्विधसंसर्गाभावकापरस्परविरोधहै अन्यो
न्याभावकातिनसैंअविरोधहैं जैसैंअन्योन्याभावकाअन्यअभावनतैंअविरोधहोतैंवीप्रागभावादिकनकेपरस्परअविरोधकीसिद्धि
होवैनहीं तैसैंअन्योन्याभावकाप्रतियोगितैंअविरोधिदेषिकैंकिसीसंसर्गाभावकाप्रतियोगिसैंअविरोधसिद्धहोवैनहीं अथअ
भावनकापरस्परऔप्रतियोगिसैंविरोधाविरोधकाविस्तारसैंप्रतिपादनकरैहैं यद्यपिप्रतियोगिकेउपादानकारणमैंप्रागभावप्रध्वंसा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भावदोनूंरहेहैं जैसें घटके उपादानकारणकपालमें घटकाप्रागभाव घटकीउत्पत्तिसें प्रथमरहेहै है मुद्गरादिकनतें घटकूं तोडे तब घटकाप्रध्वं
साभाव तिसीकपालमें रहेहै यातें प्रागभावप्रध्वंसाभावका परस्परविरोधकहना संभवे नहीं तथापि एककालमें दोनूं रहें नहीं किंतु भिन्नका
लमें रहेहैं यातें एकदा सहानवस्थानरूपविरोध प्रागभावप्रध्वंसाभावका परस्पर है तैसें अत्यंताभावकाबी तिनसें विरोध मान्याचाहिये य
द्यपि अन्योन्याभावका किसी अभावसें विरोध नहीं है काहेतें कपालमें घटका प्रागभाव है तहां घटका अन्योन्याभावबी है औ जब कपालमें
घटका प्रध्वंसाभाव होवे तबबी घटका अन्योन्याभाव है औ तंतुमें घटका अत्यंताभाव है तहांबी घटका अन्योन्याभाव है भूतलमें घट
का सामयिकाभाव है तहांबी घटका अन्योन्याभाव है इसरीतिसें अन्योन्याभावका किसी अभावसें विरोध नहीं है तथापि संसर्गाभा
वका यह स्वभाव है चतुर्विधसंसर्गाभावमें एकसंसर्गाभाव एककालमें रहे है दूसरा रहे नहीं जैसें कपालमें उत्पत्तिसें प्रथम घटका प्रागभा
व रहेहै तिसकालमें घटका प्रध्वंसाभाव रहे नहीं प्रध्वंसाभाव घटका होवे तब प्रागभाव रहे नहीं औ सामयिकाभाव अत्यंताभाव कपाल
में घटके कदेबी रहें नहीं यद्यपि कपालमें घटके प्रागभाव प्रध्वंसाभाव होवें तब पटका अत्यंताभावबी रहेहै तथापि एकप्रतियोगिके
दो संसर्गाभाव रहें नहीं यह नियम है अपरप्रतियोगिका दूजा संसर्गाभाव रहनेंका विरोध नहीं तैसें भूतलादिकनमें घटका साम
यिकाभाव रहेहै तहां घटका अत्यंताभाव अथवा प्रागभाव तथा ध्वंसाभाव रहें नहीं औ वायुमें रूपात्यंताभाव है तहां रूपके प्रागभावादि
क रहें नहीं यद्यपि संयोगसंबंधतें कदाचित् भूतलादिकनमें घट रहे है समवायसंबंधतें कपालविना अन्यपदार्थसें घट कदेबी रहे नहीं या
तें समवायसंबंधतें घटका अत्यंताभाव भूतलादिकनमें है औ संयोगसंबंधतें घटका सामयिकाभाव है यातें सामयिकाभाव औ अत्यं
ताभावका परस्परविरोध संभवे नहीं तथापि घटके संयोगसंबंधावच्छिन्न सामयिकाभावका घटके संयोगसंबंधावच्छिन्न अत्यंता

1491

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1452

भावसैंविरोधहै समवायसंबंधावछिन्नअसंताभावसैंविरोधनहीं यातेंयहनियमसिद्धहुयाजिसअधिकरणमैंजाकालमैंजिसपदार्थकाजासंबंधसैं एकसंसर्गाभावहोवैतिसअधिकरणमैंताकालमैंतिसपदार्थकातासंबंधसैंअपरसंसर्गाभावहोवैनहीं अन्यसंबंधसैंहोवैहै जासंबंधसैंजोपदार्थजहांनहोवैतहांतिसपदार्थकातत्संबंधावछिन्नाभावकहियेहै भूतलमैंसंयोगसंबंधतैंकदाचित्घटहोवैहै यातेंसंयोगसंबंधावछिन्नअत्यंताभावघटकाभूतलमैंकदीवीनहीं किंतुभूतलत्वजातिमैंऔभूतलकेरूपादिकगुणनमैंसंयोगसंबंधतैंघटकदाचित्वीरहैनहीं काहेतेंदोद्रव्यकासंयोगहोवैहै द्रव्यकाऔजातिकातैंसैंद्रव्यकाऔगुणकासंयोगहोवैनहीं यातेंभूतलत्वमैंऔभूतलकेरूपादिकगुणनमैंघटकासंयोगसंबंधावछिन्नअत्यंताभावहै औभूतलत्वमैंतैसैंरूपादिकगुणनमैंसमवायसंबंधतैंवीघटकदाचित्वीरहैनहीं काहेतेंकार्यद्रव्यकाअपणेउपादानकारणमैंसमवायसंबंधहोवैहै अन्यमैंनहीं गुणकासमवायगुणीमैंहोवैहै जातिकासमवायव्यक्तिमैंहोवैहै क्रियाकासमवायक्रियावालेमैंहोवैहै अन्यस्थानमैंकहूंसमवायसंबंधहोवैनहीं यद्यपिपरमाणुआदिकनित्यद्रव्यनमैंवीविशेषपदार्थकासमवायनैयायिकमानैहै तथापिविशेषपदार्थअप्रसिद्धहैताकीकल्पनानिष्प्रयोजनहै यह अद्वैतग्रंथनमैंस्पष्टहै औदीधितिकारशिरोमणिभट्टाचार्यनैंवीविशेषपदार्थकाखंडनहीकह्याहै यातेंउपादानकारणगुणीव्यक्तिक्रियावानमैंहीकार्यद्रव्यगुणजातिक्रियाकाक्रमतैंसमवायसंबंधहै औकिसीकाकिसीमैंसमवायसंबंधनहीं इसरीतिसैंभूतलत्वमैंऔभूतलकेरूपादिकगुणनमैंघटकासमवायसंबंधकदीवीहोवैनहीं किंतुकपालमैंहीघटकासमवायहोवैहै यातेंघटकेउपादानकारणकपालकूंत्यागिकेऔरस्थानमैंसारेघटकासमवायसंबंधावच्छिन्नअसंताभावहै औघटकाअन्यसंसर्गाभावतिसअत्यंताभावकेसाथिरहैनहीं काहेतेंघटकाप्रागभावप्रध्वंसाभावतोकपालविनाअन्यस्थानमैंरहैनहीं-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

औसामयिकाभाव तहां होवैहै जहां किसीकालमैंजासंबंधसें प्रतियोगी होवे तहां तिसीसंबंधसें जाकालमें प्रतियोगि न होवे ताकालमें तत्सं
बंधावछिन्नसामयिकाभाव होवैहै जहां किसीकालमैंजासंबंधसें प्रतियोगि होवे नहीं तहां तत्संबंधावछिन्न अत्यंताभाव ही होवैहै कपा
लविना अन्यपदार्थनमैंसमवायसंबंधतें घट कदाचित्वी रहैहै नहीं यातें घटके समवायसंबंधावछिन्न अत्यंताभावके अधिकरणमें घट
कासमवायसंबंधावछिन्नसामयिकाभाव रहैहैनहीं औ विचार करैतो द्रव्यकासमवायसंबंधावछिन्नसामयिकाभाव अप्रसिद्ध है संयोग
संबंधावछिन्नसामयिकाभाव ही द्रव्यका प्रसिद्ध है काहेतें नित्यद्रव्य तो समवायसंबंधतें किसीमें रहैहै नहीं यातें नित्यद्रव्यका तो समवा
यसंबंधावछिन्न अत्यंताभाव ही है समवायसंबंधावछिन्नसामयिकाभाव नित्यद्रव्यका कहूं नहीं औ कार्यद्रव्यका अपनें उपादानका
रणमें तो प्रागभाव अथवा प्रध्वंसाभाव होवैहै तहां समवायसंबंधावछिन्नसामयिकाभाव अथवा समवायसंबंधावछिन्न अत्यं
ताभाव रहैहै नहीं औ अपनें उपादानकारणकूं त्यागिकें अन्यपदार्थमैंसमवायसंबंधतें कार्यद्रव्य कदाचित् रहता होवे कदाचित् नहीं रहता
होवै तो समवायसंबंधावछिन्नसामयिकाभाव होवे औ उपादानसें भिन्नमें कार्यद्रव्य कदाचित्वी रहैहै नहीं यातें उपादानसें भिन्नप
दार्थनमैं कार्यद्रव्यका समवायसंबंधावछिन्नसामयिकाभाव संभवे नहीं किंतु तहांवी समवायसंबंधावछिन्न अत्यंताभाव ही का
र्यद्रव्यका है इसरीतिसें समवायसंबंधावछिन्नसामयिकाभाव द्रव्यका अप्रसिद्ध है औ गुणक्रियावी समवायसंबंधतें जाद्रव्यमें उप
जिकें नष्ट होय जावें ताद्रव्यमें समवायसंबंधावछिन्नसामयिकाभाव नहीं किंतु प्रथम प्रागभाव है पश्चात् प्रध्वंसाभाव है औ घटके गु
णक्रिया समवायसंबंधसें अन्यद्रव्यमैं कदेवी रहैहै नहीं तहांवी तिनका समवायसंबंधावछिन्न अत्यंताभाव है सामयिकाभाव नहीं इ
सरीतिसें गुणक्रियाकावी समवायसंबंधावछिन्नसामयिकाभाव अप्रसिद्ध है तैसें संयोगसंबंधावछिन्नसामयिकाभाववी गुणक्रि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

याकाअप्रसिद्धहै काहेतें संयोगसंबंधतें गुणक्रियाकदाचित् रहतेहोवें कदाचित्नहींरहतेहोवें तोसंयोगसंबंधावछिन्नसामयिकाभावगु
णक्रियाकाहोवे औसंयोगसंबंधतेंगुणक्रियाकिसीमेंकदाचित्रहेनहीं यातेंगुणक्रियाकासंयोगसंबंधावछिन्नअत्यंताभावहीहै सोअ
त्यंताभावसकलपदार्थनमेंहै काहेतें संयोगसंबंधतेंगुणक्रियाकिसीपदार्थमेंरहतेहोवेंतोतिसपदार्थमें संयोग संबंधावछिन्न अत्यंता
भावगुणक्रियाकानहोवे सोसंयोगसंबंधतेंगुणक्रियाकाआधारकोईहैनहीं यातेंगुणक्रियाकासंयोगसंबंधावछिन्नअत्यंताभावके
वलान्वयिहै जाकाअभावकहूंनहोवेसोकेवलान्वयिकहियेहै उक्तअत्यंताभावसारेहै तिसअत्यंताभावकाअभावकहूंनहीं यातेंके
वलान्वयिकहियेहै इसरीतिसेंसमवायसंबंधावछिन्नसामयिकाभावऔसंयोगसंबंधावछिन्नसामयिकाभावगुणकाऔक्रियाका
अप्रसिद्धहै तैसेंजातिकावीसामयिकाभावअप्रसिद्धहै काहेतें संयोग संबंधसेंतोजातिकिसीपदार्थमें कदाचित् वीरहेनहीं यातेंसकल
पदार्थनमेंजातिकासंयोगसंबंधावछिन्नअत्यंताभावहै सामयिकाभावनहीं तैसेंअपनाआश्रयजोव्यक्तितामेंसमवायसंबंधसेंजाति
सदारहेहै तोव्यक्तिमेंजातिकासमवायसंबंधतेंकोईअभावरहेनहीं जैसें घटत्व जाति घट व्यक्तिमेंसमवायसंबंधतेंरहेहै तहांघटत्वका
अत्यंताभाववासामयिकाभावअथवाप्रागभाव तथाप्रध्वंसाभावरहेनहीं काहेतें प्रागभावप्रध्वंसाभावतोअनित्यकेहोवेंहैं घटत्वनि
त्यहै ताकेप्रागभावप्रध्वंसाभावसंभवेनहीं औजहांप्रतियोगिकदाचित् वीहोवेनहीं तहांअत्यंताभावहोवेहै औजहांप्रतियोगिकदाचि
त्होवेकदाचित्नहींहोवे तहांसामयिकाभावहोवेहै घटमें घटत्वसदासमवायसंबंधतें रहेहै यातें घटमें घटत्वकासमवायसंबंधाव
छिन्नात्यंताभाव औसमवायसबंधावछिन्नसामयिकाभावसंभवेनहीं तैसें घटसेंभिन्नजो घटत्वकेअनाधारसकलपदार्थकहेहैं तिन ९
में घटत्वजातिसमवायसंबंधतेंकदेवीरहेनहीं यातेंतिननेमेंवी घटत्वजातिकासमवायसंबंधावछिन्नसामयिकाभावनहीं किंतुसमवा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1495

यसंबंधावछिन्नअत्यंताभावहै इसरितिसैंद्रव्यसैंभिन्नपदार्थका सामयिकाभावअप्रसिद्धहै औद्रव्यवीनित्यअनित्यभेदसैंदोप्रकारकेहैं पृथिवी
जलतेजोवायुद्व्यणुकादिरूपअनित्यहैं आकाशकालदिशाआत्मामनऔपरमाणुरूपपृथिवीजलतेजोवायुयेनित्यद्रव्यहैं सोनित्यद्रव्य
समवायसंबंधतैंकदाचित्किसीपदार्थमैंरहेंहैंनहीं यातैंतिनकातोसमवायसंबंधावछिन्नसामयिकाभावकहूंनहीं किंतुसमवायसंबं
धावछिन्नअत्यंताभावहीसारेहै तैसैंअनित्यद्व्यणुकादिद्रव्यसमवायसंबंधतैंअपनेंअवयवपरमाणुआदिकमैंरहेहैं अवयवविना
अन्यपदार्थमैंअनित्यद्रव्यसमवायसंबंधसैंकदेवीरहेहैंनहीं अवयवनमैंअवयवीका प्रागभावप्रध्वंसाभावहोवैहै यातैंसमवायसं
बंधावछिन्नसामयिकाभावअवयवमैंकार्यद्रव्यकानहींहोवैहै अवयवसैंभिन्नपदार्थनमैंसमवायसंबंधतैंअवयवीकदेवीरहेनहीं यातैं
समवायसंबंधावछिन्नसामयिकाभावतहांनहीं किंतुसमवायसंबंधावछिन्नअत्यंताभावहै इसरीतिसैंद्रव्यकावीसमवायसंबंधाव
छिन्नसामयिकाभावअप्रसिद्धहै केवलसंयोगसंबंधावछिन्नसामयिकाभावद्रव्यकाप्रसिद्धहै सोवी कार्यद्रव्यकाहै नित्यद्रव्यकातोसंयो
गसंबंधावछिन्नअत्यंताभावही सारेहै सामयिकाभावकहूंवीनित्यद्रव्यकानहीं काहेतैंनित्यद्रव्यकाअवृत्तिस्वभावहै यातैंसंयोगसंबं
धतैंनित्यद्रव्यकिसीपदार्थमैंकदाचित्वीरहेंहैंनहीं यद्यपिनित्यद्रव्यकावीअपरद्रव्यसैंसंयोगहोवैहै औजाकासंयोगजामैंहोवे सोतामैंसं
योगसंबंधसैंरहेहैंहै तथापिनित्यद्रव्यकासंयोगवृत्तिनियामकनहीं जैसैंकुंडबदरकासंयोगबदरकीवृत्तिकानियामकहै कुंडकीवृत्तिका
नियामकनहीं तैसैंनित्यद्रव्यकाकार्यद्रव्यसैंसंयोगवीकार्यद्रव्यकीवृत्तिकानियामकहै नित्यद्रव्यकीवृत्तिकानियामकनहीं इसकारणतैं
संयोगसंबंधावछिन्नसामयिकाभावनित्यद्रव्यकाअप्रसिद्धहै संयोगसंबंधतैंवासमवायसंबंधतैंजोपदार्थकिसीमैंरहेनहीं सोअवृत्ति
कहियेहै नित्यद्रव्यमैंतोसंयोगसंबंधतैंऔसमवायसंबंधतैंअन्यपदार्थरहेहैं अन्यपदार्थनमैंसंयोगसंबंधतैंवासमवायसंबंधतैंनि-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वृति॰ सद्व्यर है नहीं यातें नित्यद्रव्यनकूं अवृत्तिकहेहैं इसरीतिसें संसर्गाभावअन्योन्याभावकेभेदतें अभावदोप्रकारकाहैं तिनमेंसंसर्गाभाव प्र॰
१० केच्यारिभेदहैं तिनच्यारूंकापरस्परविरोधहै औतिनच्यारिकाहीअपनेंप्रतियोगिसैंविरोधहै प्रतियोगिसैंविरोधइसभांतिहै जोप्रतियो ६
गीजासंबंधसैंजहांहोवैताकातत्संबंधावछिन्नाभावहोवेनहीं औएकसंबंधसैंप्रतियोगीहोवे अन्यसंबंधतें ताकाअभाववीहोवेहै जै
सैंसंयोगसंबंधतेंभूतलमेंघटहोवे तवसमवायसंबंधतेंघटहैनहीं यातें संयोगसंबंधतें घटवालेभूतलमेंवीघटकासमवायसंबंधावछि
न्नअत्यंताभावहै यातेंजासंबंधसैंप्रतियोगीहोवैतत्संबंधावछिन्नसंसर्गाभावकाप्रतियोगिसैंविरोधहैं संसर्गाभावनकापरस्परविरोध
वीसमानसंबंधसैंहै औएकसंबंधावछिन्नएकसंसर्गाभावजहांहोवै तहांवीअन्यसंबंधावछिन्नअपरसंसर्गाभावहोवेहै जैसेंघटश्
न्यभूतलमेंघट कासंयोगसंबंधावछिन्नसामयिकाभावहै औतिसीघटकासमवायसंबंधावछिन्न अत्यंताभावतिसीभूतलमेंरहेहै इ
सरीतिसैंप्रतियोगितैंसंसर्गाभावकाएकसंबंधतेंविरोधहै औसमानसंबंधतेंहीपरस्परसंसर्गाभावनकाविरोधहै औअन्योन्याभाव-
कातोजैसेंप्रागभावादिकनतेंविरोधनहीं तैसैंस्वप्रतीयोगीसैंवीविरोधनहीं औविचारकरेंतोंअन्योन्याभावकाअन्यभावनतें यद्यपिविरो
धनहींतथापिअपनेंप्रतियोगितैंअन्योन्याभावकावीविरोधहै औ बहुतग्रंथनमैंयहलिख्याहै संसर्गाभावकाप्रतियोगिसैंविरोधहै औअन्योन्या
भावकाप्रतियोगिसैंविरोधनहीं किंतुप्रतियोगितावछेदकधर्मसैंविरोधहै जैसेंभूतलमेंघटहोवैतिसकालमें वीघटकाअन्योन्याभावहै का
हेतेंभेदकूंअन्योन्याभावकहेहैं घटवालाभूतलवीघटरूपनहीं किंतुघटसैंभिन्नहै घटसैंभिन्नकहिये घटकेभेदवालाभूतलहै भेदवा
लाऔअन्योन्याभाववालाकहनेमेंएकहीअर्थहै घटविनाऔरसारेपदार्थघटभिन्नहै घटमेंघटत्वरहेहै तहांघटकाभेदरूपघटान्यो १०
न्याभावरहेनहीं घटविनाऔरकिसीपदार्थनमेंघटत्वरहेनहीं तहांसारेघटकाअन्योन्याभावहै इसरीतिसैंघटान्योन्याभावकाघटसें

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1497

विरोधनहीं किंतुघटत्वसेंविरोधहै तहांघटान्योन्याभावकाप्रतियोगीघटहै औप्रतियोगितावछेदकघटत्वहै जाकाअभावहोवे सोप्रतियोगी
कहियेहै औप्रतियोगिमेंजोधर्मरहेसोप्रतियोगितावछेदककहियेहै यद्यपिप्रतियोगीमेंरहनेवाले धर्मबहुतहैं जैसेंघटमेंघटत्वहै औ
पृथ्वीत्वद्रव्यत्वपदार्थत्वादिकवीघटमेंरहेहैं तिनमेंपृथ्वीत्वादिकवीघटान्योन्याभावकेप्रतियोगितावछेदकहुयेचाहिये औपृथि
वीत्वादिकघटान्योन्याभावकेप्रतियोगितावछेदकनहीहैं पृथिवीअन्योन्याभावकाप्रतियोगितावछेदकपृथ्वीवीत्वहै द्रव्यान्योन्या
भावकाप्रतियोगितावछेदकद्रव्यत्वहै घटान्योन्याभावकेप्रतियोगितावच्छेदकपृथिवीत्वद्रव्यत्वादिकनहींहैं औघटरूपप्रतियोगिमें
तोरहेहैं यातेंघटत्वकीनांई घटान्योन्याभावकेपृथिवीत्वद्रव्यत्वादिकप्रतियोगितावच्छेदककहेचाहियें तथापिअभावबोधकपदकेसा
थिप्रतियोगिबोधकपदकेउच्चारणकरेंजिसधर्मकीप्रतीतिहोवेसोप्रतियोगितावछेदककहियेहै घटान्योन्याभावकहनेमें प्रतियोगि
बोधकघटपदहैं तैसेंपटोघटोन इसरीतिसेंवीप्रतियोगिबोधकघटपदहै ताकेंउच्चारणकरेंघटत्वकीप्रतीतिहोवेहै पृथिवीत्वद्रव्यत्वा
दिकनकीप्रतीतिहोवेनहीं यातेंघटान्योन्याभावकाप्रतियोगितावछेदकघटत्वहै पृथिवीत्वादिकनहीं औजलंपृथिवीन इसरीतिसें कहैं
औपृथिवीअन्योन्याभावकहें तवप्रतियोगिबोधकपृथिवीपदहै ताकेंउच्चारणकरेंपृथिवीत्वकीप्रतीतिहोवेहै तहांप्रतियोगितावछेदक
पृथिवीत्वहै गुणोद्रव्यंन इसरीतिसेंकहें औद्रव्यान्योन्याभावकहें तवप्रतियोगिबोधकद्रव्यपदहै ताकेंउच्चारणकरेंद्रव्यत्वकीप्रतीतिहो
वेहै तहांप्रतियोगितावछेदकद्रव्यत्वहै घटपदकेउच्चारणकरेंघटत्वकीप्रतीतिहोवेहै पृथिवीत्वादिकनकीनहीं यामेंयहहेतुहै घट
पदकीघटत्वविशिष्टमेंशक्तिहै जिसधर्मविशिष्टमेंजापदकीशक्तिहोवेतिसधर्मकीतापदसेंप्रतीतिहोवेहै इसरीतिसें घटान्योन्याभा
वकाप्रतियोगितावछेदकघटत्वहै सोघटमेंरहेहै घटान्योन्याभावघटमेंरहेनहीं घटसेंभिन्नसकलपदार्थनमें घटकाअन्योन्याभाव

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रहैहै तहांघटत्वरहैनहीं यातैं घटत्वरूपप्रतियोगितावछेदकसैंघटान्योन्याभावकाविरोधहै औघटरूपप्रतियोगिसैंविरोधनहीं औ
संसर्गाभावकाप्रतियोगिसैंविरोधहै इसरीतिसैं बहुतग्रंथकारोंनैंलिष्याहै औसंसर्गाभावअन्योन्याभावकेलक्षणवीइसीअर्थकेअनु
सारीकरैहैं प्रतियोगिविरोधीजोअभावसोसंसर्गाभावकहियेहै औप्रतियोगितावछेदकविरोधीअभावअन्योन्याभावकहियेहै इसरी
तिकेलक्षणकहनैंसैंवीअन्योन्याभावकाप्रतियोगिसैं अविरोधहीसिद्धहोवैहै औचतुर्विधसंसर्गाभावकाप्रतियोगिसैंविरोधसिद्धहोवैहै
परंतुग्रंथकारनकायहसमग्रलेखस्थूलदृष्टिसैंहै विवेकदृष्टिसैंनहीं काहेतैंअत्यंताभावकाजिसरीतिसैंप्रतियोगितैंविरोधहै तिसरी
तिसैंअन्योन्याभावकावीप्रतियोगितैंविरोधहै जाभूतलमैंसंयोगसंबंधतैंघटहोवैतिसीभूतलमैंसमवायसंबंधावछिन्नघटका
अत्यंताभावकावीप्रतियोगिसैंसर्वथाविरोधनहीं किंतुजिससंबंधसैंप्रतियोगीहोवैतत्संबंधावछिन्नअत्यंताभावहोवैनहीं यातैं
अभावकाप्रतियोगितावछेदकसंबंधविशिष्टप्रतियोगिसैंविरोधहै प्रतियोगितावछेदकसंबंधतैं अन्यसंबंधविशिष्टप्रतियोगिसैं-
किसीअभावकाविरोधनहींजिससंबंधसैंपदार्थकाअभावकहियेसोप्रतियोगितावछेदकसंबंधकहियेहै अत्यंताभावकेप्रतियो-
गितावछेदकसंबंधअनेकहैं काहेतैंजिसअधिकरणमैं एकसंबंधतैंजोपदार्थहोवैतिसीअधिकरणमैंअपरसंबंधावछिन्नअत्यं
ताभावतिसपदार्थकाहोवैहै जैसैंपृथिवीमैंसमवायसंबंधतैंगंधहोवैहै संयोगसंबंधतैंकदेवीहोवैनहीं यातैंपृथिवीमैंगंधकासं
योगसंबंधावछिन्नअत्यंताभावहै तहांप्रतियोगितावछेदकसंयोगसंबंधहै जलमैंसंयोगसंबंधतैंवासमवायसंबंधतैंगंधनहीं
किंतुकालिकसंबंधतैंजलमैंवीगंधहै यातैंजलमैंगंधकासंयोगसंबंधावछिन्नअत्यंताभावहै औसमवायसंबंधावछिन्नअत्यंताभाव ११
है तहांप्रथमअभावकाप्रतियोगितावछेदकसंयोगसंबंधहै द्वितीयअभावकाप्रतियोगितावछेदकसमवायसंबंधहै औकालिक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1499

संबंधसें एकएकजन्यमेंसारेपदार्थरहेहैंहैं यातेंद्व्यणुकादिरूपजलमेंगंध होनेतें जलवृत्तिगंधाभावकाप्रतियोगितावच्छेदककालिकसंबंधनहीं
ओनित्यपदार्थमें कालिकसंबंधसें कोईपदार्थरहेहेनहीं यातें परमाणुरूपजलमेंगंधकाकालिकसंबंधावच्छिन्नअत्यंताभाववीहै यातें परमा-
णुवृत्तिगंधाभावकाप्रतियोगितावच्छेदककालिकसंबंधहै इसरीतिसें अत्यंताभावकेप्रतियोगितावच्छेदकसंबंधअनेकहै अन्यअभाव
नकाप्रतियोगितावच्छेदकसंबंधएकएकहै जैसें कपालमेंघटकाप्रागभावहै अन्यमेंकहूं घटकाप्रागभावनहीं सोकपालमेंघटकेप्राग
भावकाप्रतियोगितावच्छेदकसमवायसंबंधहै प्रागभावकाप्रतियोगितावच्छेदकअन्यसंबंधनहीं यत्संबंधावच्छिन्नप्रागभावजाका
जामेंहोवे तासंबंधसेंताकीउत्पत्तितिसमेंहोवेहै यहनियमहै कपालमेंघटकीउत्पत्तिसमवायसंबंधतेंहोवेहै अन्यसंबंधसेंन
हींहोवेहै यातेंकपालमेंघटकासमवायसंबंधावच्छिन्नप्रागभावहै ताकाप्रतियोगितावच्छेदकएकसमवायसंबंधहै तैसेंकपालेस
मवायेनघटोनष्टः ऐसीप्रतीतिप्रध्वंसाभावकीहोवेहै यातेंध्वंसकाप्रतियोगितावच्छेदकवीएकसमवायसंबंधहै तैसें सामयिकाभा
ववीजन्यद्रव्यकाहींहोवेहै ओजन्यद्रव्यकावीसंयोगसंबंधावच्छिन्नसामयिकाभावहीहोवेहै समवायसंबंधावच्छिन्नसामयिकाभा
वअप्रसिद्धहै यहपूर्वकहीहै यातेंसामयिकाभावकावीप्रतियोगितावच्छेदकसंयोगसंबंधहै तैसेंअन्योन्याभावकाप्रतियोगिताव
छेदकएकअभेदसंबंधहै तिसअभेदकूंहीनैयायिकतादात्म्यसंबंधकहेहैं अभेदसंबंधावच्छिन्नाभावकूंहीअन्योन्याभावकहेहैं
अन्यसंबंधावच्छिन्नाभावकूं संसर्गाभावकहेहैं अन्योन्याभावकहेनहीं इसरीतिसें अन्योन्याभावकाप्रतियोगितावच्छेदकसंबंधएकता
दात्म्यनामाअभेदहै औरकोईसंबंधअन्योन्याभावकाप्रतियोगितावच्छेदकनहीं औप्रतियोगितावच्छेदकसंबंधविशिष्टप्रतियोगिका
अभावसेंविरोधहै अन्यसंबंधविशिष्टप्रतियोगिकातोअत्यंताभावसेंवीविरोधनहीं यहनिर्णीतहीहै अन्योन्याभावकाजोप्रतियो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वृति. १२

गितावछेदकअभेदसंबंधहै ताअभेदसंबंधसैंअपनेंआत्मामैंहीघटरहैहै भूतलकपालादिकनमैंअभेदसंबंधसैंघटकदाचीरहेंनहींज प्र.
हांअभेदसंबंधसैंघटनहींरहे तहांसारैघटकाअन्योन्याभावहै औअपनेंस्वरूपमेंअभेदसंबंधसैंघटरहैहै तहांघटकाअन्योन्याभाव ६
नहीं इसरीतिसैंप्रतियोगितावछेदकसंबंधविशिष्टप्रतियोगिकाजेसैंअत्यंताभावसैंविरोधहैतेसैंअन्योन्याभावसैंवीप्रतियोगिता
वछेदकसंबंधविशिष्टप्रतियोगीकाविरोधस्पष्टहै प्रतियोगितावछेदकसंबंधविशिष्टप्रतियोगिसैंअत्यंताभावकीनांईअन्योन्याभा
वकाविरोधस्पष्टहोतैंप्रतियोगिसैंअविरोधकथनसकलग्रंथकारोंनेंविवेकनेत्रनिमीलनसैंकह्याहै यातैंसकलअभावनकाप्रतियो
गिसैंविरोधहै प्रथमप्रसंगयहहै जहांभूतलादिकनमैंकदाचित्घटहोवैकदाचित्नहींहोवै तहांघटकासामयिकाभावहै अत्यंताभा
वनहीं काहेतैं अभावकाप्रतियोगिसैंविरोधहोवैहै सोविरोधपूर्वउक्तरीतिसैंनिर्णीतहै यातैंभूतलमैंसंयोगसंबंधतैंघटहोवैतब
तोघटकासंयोगसंबंधावछिन्नअत्यंताभावनहीं औघटकूंउठायलेवैतबघटकासंयोगसंबंधावछिन्नअत्यंताभावहै असामान
नाहोवैगा यातैंभूतलमैंघटकेअत्यंताभावकेउत्पत्तिनाशमाननेहोवैंगे उत्पत्तिनाशमानेविनाकदाचित्हैकदाचित्नहीं यहकहना
अत्यंताभावमैंसंभवैनहीं सोउत्पत्तिनाशघटात्यंताभावकेसंभवैनहीं काहेतैं जहांसंयोगसंबंधतैंघटनहीं तहांसारेघटकासंयोगसं
बंधावछिन्नअत्यंताभावहै सोघटकाअत्यंताभावसारेपदार्थनमैंएकहैनानानहीं काहेतैंप्रतियोगिभेदसैंअभावकाभेदहोवैहै अधि
करणभेदसैंअभावकाभेदहोवैनहीं यहतार्किकसिद्धांतहै जैसैंघटाभावपटाभावकेप्रतियोगिभिन्नहैं सोअभावभिन्नहैं औभूतलमैंसं
योगसंबंधतैंघटात्यंताभावहै तैसैंभूतलत्वमैंवीसंयोगसंबंधतैंघटनहीं है तैसैंघटत्वजातिमैंवीसंयोगसंबंधतैंघटनहीं यातैंसं १२
योगसंबंधावछिन्नघटात्यंताभावहै तैसैंपटत्वादिकनमैंवीसंयोगसंबंधावछिन्नघटात्यंताभावहै इसरीतिसैंअनंतअधिकरणमैंसं

1500

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

योगसंबंधावच्छिन्नघटात्यंताभावहै तिसके अधिकरण यद्यपिअनंतहैं तथापिप्रतियोगि एकघटहै यातें संयोगसंबंधावच्छिन्नघटात्यं
ताभावएकहै परंतुभूतलत्वघटत्वादिकजातिसें तौ घटकासंयोगसंबंधकदीवीहोवेनहीं यातें भूतलत्वघटत्वादिकजातिमें घटकासंयो
गसंबंधावच्छिन्नअत्यंताभावउत्पत्तिनाशरहितनित्यहै औ भूतलादिकनमें संयोगसंबंधतें कदाचित् घटहोवैहै कदाचित्नहींहोवैहै यातें
घटकालमें भूतलवृत्ति घटात्यंताभावनष्टहोवैहै औ घटकेअपसरणकालमें घटात्यंताभावउपजैहै इसरीतिसें घटत्वादिजातिमें घटा
त्यंताभावनित्यकहनासोई घटात्यंताभावभूतलादिकनमेंउत्पत्तिनाशवाला अनित्यहैं यहकहनाअसंगतहै यातें जहांसंयोगसंबंधतें कदाचि
त्घटहोवै तहांघटशून्यकालमें घटकासंयोगसंबंधावच्छिन्नाभावकोई अनित्यअभावमान्याचाहियेसोईसामयिकाभावकहियेहै औतिसी
भूतलमें समवायसंबंधतें कदाचित्वी घटहोवेनहीं यातें घटकासमवायसंबंधावच्छिन्नअत्यंताभावहै तैसें घटत्वभूतलत्वादिकनमें सं-
योगसंबंधतें कदाचित्वी घटहोवेनहीं औ समवायसंबंधतेंवी कपालविना अन्यपदार्थमें घटहोवेनहीं यातें घटत्वादिकनमें संयोगसंबंधा
वच्छिन्नघटात्यंताभावहै औ समवायसंबंधावच्छिन्नघटात्यंताभावहै सोअत्यंताभावउत्पत्तिनाशरहितनित्यहै यातें यहनिष्कर्षसिद्धहु
वा जहां कदाचित्संयोगसंबंधतें प्रतियोगीहोवै कदाचित्नहींहोवै तहांसंयोगसंबंधावच्छिन्नसामयिकाभावकहियेहै घटकेसा
मयिकाभावउत्पत्तिनाशवालेहैं यातें प्रतियोगिभेदविनावी एकघटकेसामयिकाभावअनंतहैं औ जासंबंधसें जहांघटरूपप्रतियो-
गिकदेंवीरहेनहीं तहांघटकातत्संबंधावच्छिन्नअत्यंताभावकहियेहै सोअत्यंताभावउत्पत्तिनाशरहितहै यातें नित्यहै औ घटकासंयो
गसंबंधावच्छिन्नअत्यंताभावअनंतअधिकरणमें एकहै तैसें समवायसंबंधावच्छिन्नघटात्यंताभावबी अनंतअधिकरणमें एकहै किसी
अधिकरणकानाशबीहोयजावै तोबी सोई अत्यंताभावअन्यअधिकरणमें रहैहै यातें अत्यंताभावकानाशहोवेनहीं जैसें घटकासमवायसंबं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धावछिन्नअत्यंताभावतंतुमेंहै तंतुत्वजातिमें है घटत्वमेंहै पटत्वमेंहै कपालत्वमेंहै एककपालकूंत्यागिकैंसारेपदार्थनमेंहै तिनमेंसारे सम
वायसंबंधावछिन्नघटात्यंताभावएकहै तंतुआदिकअनित्यपदार्थनकानाशहुयेंबीतंतुत्वादिकनित्यपदार्थनमेंसोईअत्यंताभावरहैहै
यातेंअत्यंताभावनित्यहै औप्रतियोगिभेदसेंअत्यंताभावकाभेदहोवैहै जैसेंघटात्यंताभावसेंपटात्यंताभावभिन्नहै औप्रतियोगिता
वछेदकसंबंधकेभेदतेंप्रतियोगिभेदविनाबीअत्यंताभावकाभेदहोवैहै समवायसंबंधावछिन्नगंधात्यंताभावका औसंयोगसंबंधाव
छिन्नगंधात्यंताभावकाप्रतियोगीतोएकगंधहै परंतुप्रतियोगितावछेदकसंबंधदोहोनेतेंदोअभावहैं जोदोनहींहोवै एकहीमा
नें तो पृथिवीमेंसमवायसंबंधावछिन्नगंधात्यंताभावकेनहींहोनेतेंसंयोगसंबंधावछिन्नगंधात्यंताभावबीनहींहोवैगा जोऐसें
कहै पृथिवीमेंसंयोगसंबंधावछिन्नअत्यंताभावबीनहींहैतोपृथिव्यांसंयोगेननगंधोनास्तिऐसीप्रतीतिनहींहुईचाहिये यातेंपृ
थिवीमेंसंयोगसंबंधावछिन्नगंधात्यंताभावहै औसमवायसंबंधावछिन्नगंधात्यंताभावनहींहै यातेंप्रतियोगीभेदतें जैसेंअत्यंता
भावकाभेदहोवैहै तैसेंप्रतियोगितावछेदकसंबंधभेदतेंबी अत्यंताभावकाभेदहोवैहै औसामयिकाभावकाप्रतियोगितावछेदकसं
बंधकेभेदविनाबीसमयभेदसेंभेदहोवैहै जैसेंभूतलमेंघटकासंयोगजितनेंहोवैनहीं तबघटकासंयोगसंबंधावछिन्नसामयिकाभावहै
औभूतलमेंघटकासंयोगहोवैतबघटकेप्रथमसामयिकाभावकानाशहोयजावैहै जबभूतलसेंघटकूंउठायलेवैंतबघटकासंयोगसंबं
धावछिन्नसामयिकाभावऔरउपजैहै तिसीघटकूंभूतलमेंफेरिल्यावैंतबदूजासामयिकाभावनष्टहोवैहै फेरितिसघटकूंउठायलेवैं
तबतिसीघटकासंयोगसंबंधावछिन्नसामयिकाभावऔरतृतीयउपजैहै इसरीतिसेंप्रतियोगिभेदविना औप्रतियोगितावछेदकसं १३
बंधभेदविनाबीकालभेदसेंसामयिकाभावकाभेदहोवैहै यहसामयिकाभावऔअत्यंताभावकीविलक्षणतास्पष्टहै इसरीतिसेंन्या

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1503

यसंप्रदायमें पांचप्रकारका अभावहै औ नवीन तार्किक सामयिकाभावकूं नहीं मानैंहैं भूतलादिकनमें घटादिकनका जहां सामयिकाभा
वकह्याहै तहांवी सारे घटादिकनका अत्यंताभावहै औरजो भूतलादिकनमें घटादिकनका संयोगसंबंधावच्छिन्न अत्यंताभाव मानैं
में दोष कह्याहै जातिगुणादिकनमें घटका संयोगसंबंधावच्छिन्न अत्यंताभाव नित्यहै औ भूतलादिकनमें तिसी घटका संयोगसंबंधा
वच्छिन्न अभाव अनित्यहै सो नित्य अनित्य परस्पर भिन्नहैं एक नहीं जातिगुणादिकनमें औ भूतलादिकनमें संयोगसंबंधावच्छिन्न घ
टाभावका भेद नहीं मानैं तौ नित्यता औ अनित्यतारूप जो विरोधी धर्म तिनका संकर होवैगा ताका समाधान इसरीतिसें गंगेशोपाध्याया
दिक नवीन करैहैं भूतलादिकनमेंवी घटका संयोगसंबंधावच्छिन्न अभाव अनित्य नहीं किंतु नित्यहै जव भूतलमें घटका संयोग होवै ति
सकालमेंवी घटका संयोगसंबंधावच्छिन्न अत्यंताभाव रहैहै ताका नाश होवै नहीं यातें अत्यंताभाव केवलान्वयिहै जाका अभाव कहूं न
होवै किंतु सकल पदार्थनमें सर्वदा रहै सो केवलान्वयि कहियेहै औरजो यह शंका होवै संयोगसंबंधतें घटके होतें संयोगसंबंधावच्छि
न्न घटात्यंताभाव मानैंगे तौ संयोगसंबंधतें घटवाले भूतलमें संयोगेन घटो नास्ति ऐसी प्रतीति हुई चाहिये ताका यह समाधान करैहैं य
द्यपि संयोगसंबंधतें घटवाले भूतलमेंवी निर्घट भूतलकी नाईं संयोगसंबंधावच्छिन्न अत्यंताभाव घटकाहै तथापि निर्घट भूतलमें तौ संयो
गेन भूतले घटो नास्ति ऐसी प्रतीति होवैहै औ सघट भूतलमें उक्त प्रतीति होवै नहीं काहेतें उक्त प्रतीतिका विषय केवल घटका अत्यंताभा
व नहीं है किंतु भूतलसंबंधी घटके आधारकालतें अतिरिक्त काल औ संयोगसंबंधावच्छिन्न घटात्यंताभाव ये दोनूं जहां होवै तहां संयोगे
न घटो नास्ति ऐसी प्रतीति होवैहै भूतलमें संयोगसंबंधतें घट नहीं होवै तव भूतलसंबंधी घटाधारकाल नहीं है किंतु भूतल असंबंधी
जो घट ताका आधारकालहै यातें भूतलसंबंधी घटके आधारकालसें अतिरिक्त कालहै औ संयोगसंबंधावच्छिन्न घटात्यंताभाव है

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वृत्ति. यातें संयोगेनघटोनास्ति ऐसीप्रतीतिहोवैहै औजहांभूतलमेंसंयोगसंबंधतें घटहै तहांवीअत्यंताभावकूंनित्यता होनेतें संयोगसं प्र.
१५ बंधावछिन्नघटात्यंताभावतोहै परंतुभूतलसंबंधीजोघट ताकाआधारकालहै यातें भूतलसंबंधीघटाधारकालसें अतिरिक्तकालन- ६
हीं है यातें संयोगसंबंधतें घटहोतें संयोगेनभूतले घटोनास्ति ऐसीप्रतीति होवैनहीं इसरीतिसें अत्यंताभावतोसारेदेशमें प्रतियोगि
केहोतें औनहींहोतें सर्वदारहै है परंतुअभावकाघटादिकप्रतियोगिकासंबंधिजोभूतलादिकूअनुयोगी ताकाआधारकालप्रतियोगीकेहो
तें होवैहै प्रतियोगिसंबंधीअनुयोगीकेआधारकालसें अतिरिक्तकाल होवैनहीं यातें प्रतियोगीनास्ति ऐसीप्रतीतिप्रतियोगीके होतें हो
वैनहीं औप्रतियोगीनहींहोवे तबप्रतियोगिसंबंधीअनुयोगीके आधारकालसें अतिरिक्तकाल औअत्यंताभावदोनूंहैं यातें भूतले सं
योगेनघटोनास्ति ऐसीप्रतीतिहोवैहै इसरीतिसें जहांप्राचीनसामयिकाभावमानेहैं तहांवीसारे अत्यंताभावहै औअत्यंताभावकूंअ
नित्यताहोवैनहीं औउक्तकालके अभावतें प्रतियोगीकेहोतें अत्यंताभावकीप्रतीतिहोवैनहीं यहनवग्रंथकारोंकामतहै सोसमीचीन
नहीं प्राचीनमतहीसमीचीनहै काहेतें प्रतियोगीकेहोतें अत्यंताभावमानेतोप्रतियोगीअभावकापरस्परविरोधहै याकथाकाउछेदहुया
चाहिये औरजोनवीनऐसेंकहैं विरोधदोप्रकारका होवैहै एकतोसहानवस्थानरूप होवैहै औदूजासहाप्रतीतिरूपविरोधहोवैहै एक
अधिकरणमें एककालमें नहींरहैं तिनकासहानवस्थानरूपविरोधकहियेहै जैसें आतपशीतताकाहै ऐसाविरोधअभावप्रतियोगी
कानहींहै काहेतें प्रतियोगीकेहोतें अत्यंताभावरहैहै किंतुअभावप्रतियोगीकासहाप्रतीतिरूपविरोधहै एककालमें एकअधिकरण
में जिनकीप्रतीतिनहोवै तिनकासहाप्रतीतिरूपविरोधकहियेहै प्रतियोगीकेहोतें अत्यंताभावकीप्रतीतिहोवैनहीं यातें प्रतियोगीअभाव १५
कासहाप्रतीतिरूपविरोधहै सहानवस्थानरूपविरोधनहीं इसरीतिसें नवीनकासमाधानसर्वलोकशास्त्रसें विरुद्धहै काहेतें अभावकाअ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भावप्रतियोगिक कहियेहै जहां अभाव न होवै तहां अभावका अभाव होवैहै जैसें घटवाले देशमें घटका अभाव नहीं है किंतु घटाभावका अ-
भावहै सोई घटहै औ घटाभावका प्रतियोगी है इसरीतिसें अभावके अभावकूं सर्वशास्त्रनमें प्रतियोगी कहेहैं नवीनरीतिसें सोकथन
असंगत होवेगा काहेतें नवीनमतमें घटवाले देशमें घटका अभाव वी है यातें घटाभावका अभाव कहना बनैनहीं यद्यपि वक्ष्यमाणरीति
सें घटतें भिन्न नहीं घटाभावाभाव है घटरूप नहीं तथापि घटके समनियत घटाभावाभाव है यह वार्ता निर्विवाद है औ नवीनरीतिसें घटवा
ले देशमें घटाभाव है यातें घटाभावका अभाव नहीं होनेतें दोनूंकी समनियतता संभवै नहीं यातें नवीनमत शास्त्रविरुद्ध है औ प्रतियोगि
अभाव समानाधिकरण होवै नहीं यह सर्वलोकमें प्रसिद्ध है ता लोकप्रसिद्ध अर्थका नवीनकल्पनासें बाध होवेगा औ घटके अधिकरणमें
घटका अत्यंताभाव मानना प्रमाणशून्य है किसी प्रमाणसें सिद्ध होवै नहीं जहां घट नहीं है तहां घटो नास्ति इस प्रतीतिसें अत्यंताभाव सिद्ध
होवैहै घटवाले देशमें घटो नास्ति ऐसी प्रतीति होवै नहीं और कोई प्रतीति घटवाले देसमें अत्यंताभावकी साधक है नहीं यातें प्रतियोगिदेस
में अत्यंताभावका अंगीकार प्रमाणसिद्ध नहीं उलटा घटवाले देसमें घटात्यंताभावो नास्ति ऐसी प्रतीति होवैहै ताप्रतीतिसें विरुद्ध अ
त्यंताभावका अंगीकार है औ घटवाले देशमें जो घटात्यंताभावकूं मानें ताकूं वृद्धि वांछा करिके चले पुरुषका मूल वी नष्ट होयगया इस
न्यायकी प्राप्ति होवेगी काहेतें अत्यंताभावकूं केवलान्वयि साधनें वास्ते औ नित्यता साधनें वास्ते घटवाले देशमें घटात्यंताभाव मा-
न्याहै परंतु घटवाले देशमें घटात्यंताभाव मानें सो अत्यंताभाव वहां निष्फल औ निष्प्रमाण होय जावेगा तथाहि सर्व पदार्थनका फल व्य
वहारसिद्ध है घटो नास्ति इस व्यवहारकी सिद्धि बिना और तो घटात्यंताभावका फल संभवै नहीं उक्त व्यवहारकी सिद्धि ही फल है औ
घटो नास्ति या प्रतीतिसें ही घटात्यंताभाव सिद्ध होवैहै उक्तप्रतीति बिना घटात्यंताभावके होनेमें कोई प्रमाण नहीं नवीनमतमें घटा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त्यंताभावसें घटोनास्तिइसव्यवहारकीसिद्धिहोवैनहीं किंतुघटसंबंधीभूतलाधिकरणकालतें अतिरिक्तकालसें उक्तव्यवहारकीसिद्धि
होवैहै क्याहैतें घटसंबंधीभूतलाधिकरणकालतें अतिरिक्तकालहोवैतबघटोनास्तियहप्रतीतिहोवैहै घटसंबंधीभूतलाधिकरण-
कालहोवैतबघटोनास्तिऐसीप्रतीतिहोवैनहीं इसरीतिसें घटोनास्तियाप्रतीतिसें घटसंबंधीभूतलाधिकरणकालतें अतिरिक्तका
लकीसिद्धिहोवैहै घटात्यंताभावकीसिद्धिहोवैनहीं प्रतीतिकीनाईं घटोनास्तिइसव्यवहारकीसिद्धिनवीनमततें घटात्यंताभावसें होवै
नहीं किंतुउक्तकालसें घटोनास्तियहव्यवहारहोवैहै यातें घटात्यंताभावनवीनमततें निष्फलऔ निष्प्रमाणहै शब्दप्रयोगकूं व्यव
हारकहैहैं ज्ञानकूं प्रतीतिकहैहैं इसरीतिसें नवीनमततें अत्यंताभावकूं नित्यतामाननेंवास्तेप्रतियोगीवालेदेशमें अत्यंताभावमा
नेंमूलतें अत्यंताभावकीहानिहोवैगी यातें घटवालेदेशमें घटात्यंताभावसंभवैनहीं औजहांभूतलमेंकदाचित्घटहोवैतहांअ
त्यंताभावहोवैतौ अत्यंताभावयहसंज्ञाबीनिरर्थकहोवैगी जहांअत्यंतअभावहोवैतीनिकालमेंप्रतियोगीनहोवैसोअत्यंताभाव
संज्ञाकीरीतिसें सिद्धहोवैहै यातें जहांकदाचित्प्रतियोगीहोवैकदाचित्नहोवैतहांकालत्रिमेंप्रतियोगिकाअभावनहीं यातें अत्यंताभा
वनहीं तासें भिन्नकोईअभावहै ताकूं सामयिकाभावकहैहैं इसरीतिसें च्यारिप्रकारका संसर्गाभाव औअन्योन्याभावमिलिकैपां
चप्रकारका अभावहै सोअभावएकएकदोप्रकारकाहै एकभावप्रतियोगिकहोवैहै दूजाअभावप्रतियोगिकहोवैहै भावकाअभा
वभावप्रतियोगिकअभावकहियैहै अभावकाअभावअभावप्रतियोगिकअभावकहियैहै जैसें प्रागभावदोप्रकारकाहै घटादिकन
काकपालादिकनमें प्रागभावभावप्रतियोगिकहै जैसें भावपदार्थकाप्रागभावहै तैसें अभावकाबीप्रागभावहोवैहै परंतुसादिपदार्थन १५
काप्रागभावहोवैहै अनादिकाप्रागभावहोवैनहीं अत्यंताभावअन्योन्याभावप्रागभावतौअनादिहैं यातें तिनकातौप्रागभावसं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भवैनहीं प्रध्वंसाभावअनंततोहै परंतुसादिहै यातेंप्रध्वंसाभावकाप्रागभावहोवैहै सोप्रध्वंसाभावकाप्रागभावप्रतियोगिरूपऔप्रतियोगी
काप्रागभावरूपहोवैहै जैसेंमुद्गरादिकनतें घटकानाशहोवैताकूं घटकाप्रध्वंसाभावकहैहैं सोप्रध्वंसाभावमुद्गरादिजन्यहै मुद्गरादिकनके
व्यापारतें पूर्वघटकालमेंऔघटकेप्रागभावकालमेंनहींहोनेतेंसादिहै यातेंमुद्गरादिव्यापारतें पूर्वघटध्वंसकाप्रागभावहै सोध्वंसका
प्रागभावघटकालमेंहै औघटकीउत्पत्तिसें पूर्वघटकेप्रागभावकालमेंहै यातेंघटध्वंसकाप्रागभाव घटकालमेंतोघटरूपहै औघटकी
उत्पत्तिसें पूर्वघटकाप्रागभावरूपहै इसरीतिसें घटध्वंसकाप्रागभावघट औघटकेप्रागभावकेअंतर्भूतहै तिनतेंन्यारानहीं यहसांप्रदा
यिकमतहै परंतुयहमतयुक्तिविरुद्धहै काहेतें घटतोभावरूपहै औसादिहै घटकाप्रागभावअभावरूपहै औअनादिहै एकहीघटध्वं
सप्रागभावकूंकदाचित्भावरूपताकदाचित्अभावरूपताकहनाविरुद्धहै तैसेंकदाचित्सादिरूपता औकदाचित्अनादिरूपताकहना
बीविरुद्धहै औघटकालमेंकपालेसमवायेन घटोस्तिघटप्रध्वंसोनास्ति इसरीतिसेंविधिरूपऔनिषेधरूपदोप्रतीतिविलक्षणहोवै
हैं तिनकेविषयबीपरस्परविलक्षणदोपदार्थमानेचाहियें तैसेंघटकीउत्पत्तिसेंपूर्वबीकपालेघटोनास्तिघटप्रध्वंसोनास्ति इसरीतिसेंदोप्र
तीतिहोवैहै यद्यपिसोदोनूंप्रतीतिनिषेधमुखहैं तथापिविलक्षणहैं काहेतें प्रथमप्रतीतिमेंतोनास्तिकहनेसें प्रतीतिजोहोवैहै अभावता
काप्रतियोगीघटप्रतीतहोवैहै औदूसरेप्रतीतिमेंनास्तिकहनेसें प्रतीतहुयेअभावकाघटप्रध्वंसप्रतियोगीप्रतीतहोवैहै यातेंप्रतियो-
गीकाभेदहोतें घटप्रागभावकाघटप्रध्वंसप्रागभावकाअभेदसंभवैनहीं किंतुघट औताकेप्रागभावतें घटप्रध्वंसकाप्रागभावन्यारा
माननायोग्यहै अनुभवसिद्धपदार्थकालाघवबलसेंलोपसंभवैनहीं यातेंसांप्रदायिकरीतिसें घटप्रध्वंसप्रागभावकाघटऔताकेप्रा
गभावमेंअंतर्भावमानेंलाघवबीअकिंचित्करहै इसरीतिसेंप्रध्वंसाभावकाप्रागभावअभावप्रतियोगिकप्रागभावअभावहै तैसेंसाम

1507

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यिकाभाववीसादिहोवैहै ताकाप्रागभाववीअभावप्रतियोगिकप्रागभावहोवैहै औप्रध्वंसाभाववीअत्यंताभावअन्योन्याभावकातौहोवैनहीं
काहेतैंदोनूंअभावअनादिअनंतहैं तैसैंप्रध्वंसाभाववीअनंतहै ताकावीप्रध्वंससंभवैनहीं परंतु प्रागभावऔ सामयिकाभावकाप्रध्वंस
होवैहै सांप्रदायिकरीतिसैंप्रागभावध्वंसवीप्रतियोगिप्रतियोगिऔप्रतियोगिप्रतियोगीकेध्वंसकेअंतर्भूतहैतिनतैंपृथक्नहीं जैसैं
घटके प्रागभावकाध्वंसहोवैहै सोघटकालमैंहै औघटकेध्वंसकालमैंहै घटकालमैंतोघटप्रागभावकाध्वंसप्रतियोगिप्रतियोगी
स्वरूपहै काहेतैंघटप्रागभावकेध्वंसकाप्रतियोगीघटप्रागभावहै औघटप्रागभावकाप्रतियोगीघटहै यातैंघटकालमैंघटप्रागभावका
ध्वंसप्रतियोगिकाप्रतियोगीस्वरूपहै औमुद्गरादिकनतैंघटकानाशहोवै तिसकालमैंवीघटप्रागभावकाध्वंसहै औघटहैनहीं यातैंतिस
कालमैंघटप्रागभावकाध्वंसप्रतियोगिप्रतियोगिकाध्वंसरूपहै काहेतैंघटप्रागभावध्वंसकाप्रतियोगिजोघटप्रागभावताकाप्रतियोगिघ
टहैताघटकाध्वंसही घटप्रागभावकाध्वंसहै घटध्वंसतैंपृथक्घटप्रागभावध्वंसनहीं इसरीतिसैंप्रागभावकाध्वंसकदाचित्अपनेप्रति
योगीकाप्रतियोगीरूपहै औकदाचित्अपनेप्रतियोगिकेप्रतियोगीकाध्वंसरूपहै प्रागभावध्वंसपृथक्नहीं यहसांप्रदायिकरीतिवीयुक्तिविरुद्धहै काहे
तैंघटतोसांतहै औभावरूपहै औघटध्वंसअनंतहैअभावरूपहै एकहीघटप्रागभावध्वंसकूंसांतऔअनंतसैंअभेदकथनतैंभावऔअभावसैंअभेदक
थनविरुद्धहै औघटकीउत्पत्तिहोवैतबघटोजातः औघटप्रागभावोनष्टइसरीतिसैंदोविलक्षणप्रतीतिहोवैहै तिनमैंघटोजातः याप्रतीतिकाविषयउ
त्पन्नघटहै औघटप्रागभावोनष्टः याप्रतीतिकाविषयघटप्रागभावकाध्वंसहै तिनकाअभेदकथनसंभवैनहीं तैसैंमुद्गरादिकनसैंघट
काध्वंसहोतैंही ऐसीप्रतीतिहोवैहै इदानींघटध्वंसोजातः घटप्रागभावध्वंसःपूर्वंघटोत्पत्तिकालेजातः तहांवर्तमानकालमैंघटध्वंस १६
कीउत्पत्तिऔअतीतकालमैंघटप्रागभावध्वंसकीउत्पत्तिसिद्धहोवैहै वर्तमानकालमैंउत्पत्तिवालेसैंअतीतकालकीउत्पत्तिवालेकाअभे

1508

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दसंभवेनहीं यातें घटप्रागभावकाध्वंसघटऔघटकेध्वंसतेंपृथक्है यद्यपिवेदांतपरिभाषादिकअद्वैतग्रंथनमेंबी ध्वंसप्रागभावऔप्राग
भावकाध्वंसपृथक्नहींलिखे किंतुपूर्वउक्तन्यायसंप्रदायकीरीतिसें अंतर्भावहीदिख्याहै तथापिश्रुतिसूत्रभाष्यतेंइसनिरूपणमेंउदा-
सीनहैं यातें जैसाअर्थयुक्तिअनुभवकेअनुसारहोवैसोमान्यांचाहिये युक्तिअनुभवसेंविरुद्धआधुनिकग्रंथकारकालेखप्रमाणनहीं या
तें पूर्वउक्तअर्थप्रमाणविरुद्धनहीं उलटापृथक्माननानाहीयुक्तिअनुभवकेअनुसारहै इसरीतिसें प्रागभावकाध्वंसअभावप्रतियोगिकप्र
ध्वंसाभावहै सामयिकाभावकेवलद्रव्यकाहीहोवैहै यहपूर्वप्रतिपादनकरीहै यातेंअभावप्रतियोगिकसामयिकाभावअप्रसिद्धहै अभाव
प्रतियोगिकअत्यंताभावकेतोअनेकउदाहरणहैं कपालमेंघटकाप्रागभावऔप्रध्वंसाभावहै तंतुमेंनहीं यातेंतंतुमेंघटप्रागभावकाअत्यं
ताभावहै औघटप्रध्वंसाभावकाअत्यंताभावहै तैसेंकपालमेंघटकासामयिकाभावऔघटकाअत्यंताभावनहीं यातेंकपालमेंघटकेसा
मयिकाभावकाअत्यंताभावहै औघटात्यंताभावकाअत्यंताभावहै तैसेंकपालमेंकपालकाअन्योन्याभावनहीं तहांकपालान्योन्याभाव
काअत्यंताभावहै तैसें घटमेंघटकाअन्योन्याभावनहीं तहांघटान्योन्याभावकाअत्यंताभावहै परंतुअन्योन्याभावकाअत्यंताभाव
पृथक्नहीं किंतुअन्योन्याभावकाप्रतियोगितावच्छेदकधर्मरूपहै जैसें घटान्योन्याभावकाप्रतियोगितावच्छेदकधर्मघटत्वहै सोकेवल
घटमेंहीरहैहै औघटान्योन्याभावकाअत्यंताभावबी घटमेंहीरहैहै घटसेंभिन्नसकलपदार्थनमेंघटान्योन्याभावरहैहै यातेंघटान्यो
न्याभावकाअत्यंताभावघटसेंभिन्नपदार्थनमेंरहैनहीं इसरीतिसें घटत्वकेसमनियतघटान्योन्याभावकाअत्यंताभावहोनेतेंघट
त्वरूपहीघटान्योन्याभावकाअत्यंताभावहै इसरीतिकाप्राचीनलेखबीश्रद्धायोग्यनहीं काहेतेंघटेसमवायेनघटत्वंयाप्रतीतिकाविष
यघटत्वहै औघटेघटान्योन्याभावोनास्ति याप्रतीतिकाविषयघटान्योन्याभावकाअत्यंताभावहै यातेंअन्योन्याभावकाअत्यंताभा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1510

वृत्ति॰ वश्चअन्योन्याभावकाप्रतियोगीतावच्छेदकधर्मरूपनहीं तासेंपृथक्हीअभावरूपहे तैसेंअत्यंताभावकेअत्यंताभावकूंवीप्रथमअभाव प्र॰
१७ काप्रतियोगिरूपप्राचीनमानेंहैं ताकाखंडनतोनवीनन्यायग्रंथनमेंस्पष्टहे तथाहिजहांघटकदीवीनहोवे तहांघटकाअत्यंताभावहे ज ६
हांघटहोवे तहांघटात्यंताभावनहींहे यातेंताकाअत्यंताभावहे इसरीतिसेंघटात्यंताभावकाअत्यंताभावप्रथमात्यंताभावकाप्रतियोगिजो
घटताकेसमनियतहोनेंतें घटस्वरूपहे तासेंपृथक्नहीं ओघटात्यंताभावकाअत्यंताभावघटरूपनहींमानें पृथक्मानेंतोअत्यंताभाव
नकीअनवस्थाहोवेगी जैसेंघटात्यंताभावकाअत्यंताभावपृथक्हे तैसेंद्वितीयअत्यंताभावकातृतीयअत्यंताभावतृतीयकाचतुर्थअ
त्यंताभावताकापंचम इसरीतिसेंअत्यंताभावनकीकहूंसमाप्तिनहोवे ऐसीअनंतधाराहोवेगीओद्वितीयअत्यंताभावकूंप्रथमअत्यं
ताभावकाप्रतियोगिस्वरूपमानेंतवअनवस्थादोषनहीं काहेतेंघटात्यंताभावकाअत्यंताभावघटरूपमानेंद्वितीयात्यंताभावकाअत्यंता
भाववीघटात्यंताभावहीहे काहेतेंद्वितीयअत्यंताभावघटरूपहे यातेंताकाअत्यंताभावघटकाहीअत्यंताभावहे तैसेंतृतीयअत्यंताभा
वकाचतुर्थअत्यंताभावफेरिघटरूपहे चतुर्थअत्यंताभावकापंचमअत्यंताभावघटात्यंताभावरूपहे इसरीतिसेंप्रतियोगीओएकअ
त्यंताभावकेअंतर्भूतसारेअत्यंताभावहोवेहैं अनवस्थादोषहोवेनहीं यातेंअत्यंताभावकाअत्यंताभावप्रथमात्यंताभावकाप्रतियो-
गिस्वरूपप्राचीनोनेंमान्याहे तहांनवीनग्रंथकारोंनेंयहदोषलिख्याहे जहांभूतलमेंघटहोवे तहांभूतलेघटोस्तिभूतलेघटात्यंताभा
वोनास्ति इसरीतिसेंविलक्षणप्रतीतिदोहोवेहे विधिमुखप्रतीतिओनिषेधमुखप्रतीतिकाएकविषयसंभवेनहीं यातेंविधिमुखप्रती
तिकाविषयघटहे ओनिषेधमुखप्रतीतिकाविषयघटात्यंताभावकाअत्यंताभावहे सोघटरूपनहीं किंतुअभावरूपहे यातेंघटसेंपृ १७
थक्हे ओद्वितीयअत्यंताभावकूंपृथक्मानेंअनवस्थादोषकह्याहे ताकायहसमाधानहे द्वितीयअत्यंताभावप्रथमअत्यंताभावके

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रतियोगीकेसमनियतहै औतृतीयाभावप्रथमाभावकेसमनियतहै औप्रतियोगिकेसमानदेशमैंजोद्वितीयाभावताके
समनियतचतुर्थाभावहै प्रथमतृतीयकेसमनियतपंचमअभावहै इसरीतिसैं युग्मसंख्याकेसारेअभावद्वितीया
भावकेसमनियतहै औविषमसंख्याकेसारेअभावप्रथमाभावकेसमनियतहैं तहांद्वितीयाभाव यद्यपिप्रथमाभावके
प्रतियोगिकेसमनियतहैं तथापिभावअभावकीएकतावनैनही यातैंघटकेसमनियतवीघटात्यंताभावाभावघटसैंपृथक्है
औप्रथमाभावकेसमनियततृतीयाभावतोप्रथमाभावस्वरूपहैपृथक्नहीं काहेतैंघटोनास्तिऐसीनिषेधमुखप्रतीतिकाविषयप्र
थमाभावहै औघटात्यंताभावाभावोनास्तिऐसीनिषेधमुखप्रतीतिकाहीविषयतृतीयाभावहै यातैंतृतीयाभावप्रथमाभावरूपहै तैसैं
घटात्यंताभावोनास्तिऐसीनिषेधमुखप्रतीतिकाविषयद्वितीयाभावहै औतृतीयाभावोनास्तिइसरीतिसैंचतुर्थाभाववीनिषेधमु
खप्रतीतिकाविषयहै यातैंद्वितीयाभावकेसमनियतचतुर्थाभावद्वितीयाभावरूपहै परंतुघटकेसमनियतवीद्वितीयाभावभावरूप
घटसैंपृथक्अभावरूपहै इसरीतिसैंप्रथमाभावऔद्वितीयाभावकेअंतर्भूतसारीअभावमालाहोवैहै अनवस्थादोषनहीं यद्यपिप्राचीन
रीतिसैंप्रतियोगीऔअभावकेअंतर्भूतसारेअभावहोवैहैं यातैंएकहीअभावमाननाहोवैहै नवीनरीतिसैंदोअभावमाननेहोवैहैं या
तैंनवीनमतमैंगौरवहै तथापिभावाभावकीएकतावनैनहीं यातैंप्राचीनमतप्रमाणविरुद्धहै औनवीनमतअनुभवानुसारीहै यातैंप्र
माणसिद्धगौरवदोषकरनहीं इसरीतिसैंघटात्यंताभावकाअत्यंताभाववीअभावप्रतियोगिकअभावहै इसरीतिसैं अभावप्रतियोगि
कसंसर्गाभावकेउदाहरणकहेऔअभावप्रतियोगिकअन्योन्याभावकेउदाहरणअतिस्पष्टहैं जैसैंप्रागभावकाअन्योन्याभावप्रागभा
वमैंनहीं औरसकलपदार्थनमैंहै काहेतैंभेदकूंअन्योन्याभावकहैहैं स्वरूपमैंभेदरहैनहीं स्वरूपातिरिक्तसर्वमैंसर्वकाभेदरहैहै या

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वृति. तैंप्रागभावभिन्नपदार्थनमैंप्रागभावकाअन्योन्याभावहै प्रध्वंसाभावतैंभिन्नमैंप्रध्वंसाभावकाअन्योन्याभावहै अत्यंताभावसैंभिन्नमैंअ प्र.
१८ त्यंताभावकाअन्योन्याभावहै अन्योन्याभावसैंभिन्नमैंअन्योन्याभावकाअन्योन्याभावहै अन्योन्याभावसैंभिन्नच्यारिप्रकारकासंसर्गा- ६
भावऔरसारेभावपदार्थहै काहेतैंसंसर्गाभावऔभावपदार्थअन्योन्याभावरूपनहीं यातैंअन्योन्याभावसैंभिन्नहै जोजासैंभिन्नहोवै
तामैंतिसकाअन्योन्याभावहोवैहै यातैंसंसर्गाभावमैंऔरसकलभावपदार्थनमैंअन्योन्याभावकाअन्योन्याभावहै इसरीतिसैंपंच
विधअभावमैंसामयिकाभावतोकेवलद्रव्यकाहीहोवैहै यातैंअभावप्रतियोगिकहैनहीं च्यारिअभावनकेअभावप्रतियोगिककेउदा
हरणकहे अभावप्रतियोगिकअभावकूंकितनीजग्यामैंप्राचीनभावरूपमानैहै जैसैंघटप्रागभावकेध्वंसकूं घटरूपमानैहै घटध्वंसके
प्रागभावकूंघटमानैहैं घटान्योन्याभावकेअत्यंताभावकूंघटत्वमानैहै घटात्यंताभावकेअत्यंताभावकूंघटमानैहै ताकाखंडनकन्या
यातैंअभावप्रतियोगिकवीअभावहै औभावप्रतियोगिकअभावतोअतिप्रसिद्धहै इसरीतिसैंअभावकानिरूपणन्यायशास्त्रकी
रीतिसैंकियाऔकहूंप्राचीनमतमैंवानवीनमतमैंदोषकहे सोवीन्यायकीमर्यादालेकेदोषकहेहैं औउक्तप्रकारसैंअभावकानिरूपण
वेदांतशास्त्रसैंवीविरुद्धनहीं औजितनाअंशवेदांतविरुद्धहै सोदिखावैहै कपालमैंघटकेप्रागभावकूंअनादिकहेहैं सोप्रमाणविरु
द्धहै यातैंवेदांतकेअनुसारीनहीं काहेतैंघटप्रागभावकाअधिकरणकपालसादिऔप्रतियोगिघटवीसादिप्रागभावकूंअनादित्व
किसरीतिसैंहोवै औमायामैंसकलकार्यकेप्रागभावकूंअनादिताकहैतोसंभवैहै काहेतैंमायाअनादिहै परंतुमायामैंकार्यकाप्राग
भावमाननाव्यर्थहै औसिद्धांतमैंइष्टवीनहीं काहेतैंघटकीउत्पत्तिकपालमैंहोवैहै अन्यमैंनहीं तैसैंपटकीउत्पत्तितंतुमैंहोवैहै क १८
पालमैंनहीं यातैंघटकाप्रागभावकपालमैंहै तंतुमैंनहीं पटकाप्रागभावतंतुमैंहै कपालमैंनहीं जाकाजिसमैंप्रागभावहै ताकीतिसमैंउ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त्पत्तिहोवैहै अन्यमें होवैनहीं सर्वसें सर्वकार्यकीउत्पत्तिमतिहोवै इसवास्तेंप्रागभावकाअंगीकारहै औ मुख्यप्रयोजनप्रागभावकानैयायि 1513
कयहकहैहैं कपालतंतुआदिकनके घटपटादिकपरिणामतोहैनहीं किंतुकपालमें घटकाआरंभहोवैहै तंतुमेंपटकाआरंभहोवैहै औ घ
टपटादिकहोवैंतबपूर्वकीन्याईकपालतंतुवीविद्यमानरहैहै जोपरिणामवादहोवैतोघटाकारकूंप्राप्तहुयांपाछेस्वरूपसेंकपालरहै नहीं
तैसेंपटाकारकूंप्राप्तहुयांपाछेतंतुरहैनहीं सोपरिणामवादतोहैनहीं आरंभवादहै कपालज्यूंकात्यूंरहैहै औ अपनेंमें घटकीउत्पत्तिक
रैहै जबघटउत्पन्नहोयलेवैतबवीघटकीसामग्रीपूर्वकीनांईबनीरहैहै परिणामवादमेंतोकार्यकीउत्पत्तिहुयांउपादानकारणरहैनहीं क्याहैतेंपरि
णामवादमेंउपादानकारणहीकार्यरूपकूंप्राप्तहोवैहै यातेंघटरूपकूंप्राप्तहुयांकपालघटकीसामग्रीनहीं औ आरंभवादमेंउपादानका
रणअपनेंस्वरूपकूंत्यागैनहीं उपादानसेंभिन्नकार्यकीउत्पत्तिहोवैहै अपनेंस्वरूपसेंउपादानकारणवन्यारहैहै यातेंघटकीउत्पत्तिहुयां
वीज्यूंकीत्यूंसामग्रीहोनेंतेंफेरिघटकीउत्पत्तिचाहिये यद्यपिएकघट कीउत्पत्तिहुयांअन्यघटकीउत्पत्तिमेंतोप्रथमघटप्रतिबंधकहै
घटसेंनिरुद्धकपालमें अन्यघटकीउत्पत्तिहोवैनहीं तथापिप्रथमउत्पन्नघटकीफेरिउत्पत्तिहुईचाहिये जोप्रथमउत्पन्नकीफेरिउत्पत्तिमा
नैंतौजैसेंउत्पत्तिकालमेंघटउत्पद्यतेयहव्यवहारहोवैहै तैसेंउत्पत्तिकालसेंउत्तरकालमेंवीघटउत्पद्यतेयहव्यवहारहुयाचाहियेसिद्ध
घटकाजोआधारकालसोघटकीउत्पत्तिकालसेंउत्तरकालहै सिद्धघटकेआधारकालमेंउत्पन्नोघटः यहव्यवहारहोवैहै औ उत्पद्यतेघटः ऐसा
व्यवहारउत्पत्तिक्षणमेंहोवैहै घटकेआधारद्वितीयादिक्षणमेंउत्पद्यतेऐसाव्यवहारहोवैनहीं क्याहैतेंवर्त्तमानउत्पत्तिवालाघटहै य
हअर्थघटःउत्पद्यतेयाकहनेंसेंप्रतीतहोवैहै उत्पन्नोघटः याकहनेंतेंअतीतउत्पत्तिवालाघटहैयहअर्थप्रतीतहोवैहै उत्पन्नकीउत्पत्तिमा
नैंतौघटकीसिद्धदशामेंवीकोईउत्पत्तिवर्त्तमानरहैगी यातेंउत्पन्नघटमेंवीउत्पद्यतेघटः ऐसाव्यवहारचाहिये यातेंउत्पन्नघटकीफेरिउत्पत्ति

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वृत्ति- नहीं दूषनैतैं घटकीउत्पत्तिकीसामग्रीनहीरहैहै ऐसामान्यांचाहियें तहांऔरसामग्रीकपालादिकतोहैं तिसघटकाप्रागभावनहींरहैहै घटको प्र०

१९ प्रागभावकायटउत्पत्तिक्षणमेंध्वंसहोवैहै सोघटकाप्रागभावघटकीउत्पत्तिमेंकारणहै ताकेअभावतैंउत्पन्नघटकीफेरिउत्पत्तिहोवैनहीं यह ६

प्रागभावकामुख्यप्रयोजनहै सोमायामेंघटादिकनकेप्रागभावकाप्रथमप्रयोजनतोसंभवैनहीं काहेतैंघटादिकनकासाक्षातउपादान

मायानहीं किंतुकपालादिकहैं औमायाकूंसर्वपदार्थनकासाक्षात्उपादानतासिद्धांतपक्षमेंमानीहै तौबीकार्यकीउत्पत्तिमेंदूसरेकारणन

कीअपेक्षाकरैनहीं अद्भुतशक्तिमायामेंहै यातैंप्रागभावादिरूपअन्यकारणकीअपेक्षानहीं यातैंमायामेंकिसीकाप्रागभावनहीं औकपा

लमेंघटकीउत्पत्तिहोवैहै पटकीनहीं यामेंप्रागभावहेतुकह्यासोबीबनैनहीं कपालमेंघटकीकारणताहैपटकीनहीं काहेतैंअन्वयव्य

तिरेकसैंकारणताकाज्ञानहोवैहै औकपालकेअन्वयकहियेसत्ताहोवेतौघटकाअन्वयहोवैहै कपालकेव्यतिरेककहियेअभावतेघटकाव्य

तिरेकहोवैहै इसरीतिसैंकपालकेअन्वयव्यतिरेकनैंघटकाअन्वयव्यतिरेकदेखियेहैपटकानहीं यातैंकपालमेंघटकीकारणताहैपटकीनहीं

इसवासतेंकपालसैंघटहीहोवैहै पटादिकहोवैनहीं पटादिकनकीव्यावृत्तिवासतेंघटकाप्रागभावकपालमेंसंभवैनहीं औजोमुख्यप्रयोजन

प्रागभावकाकह्याकपालमेंघटकीउत्पत्तिसैंअनंतरउत्पत्तिहुईचाहियेसोबीपरिणामवादमेंदोषनहीं काहेतैंस्वरूपसैंस्थितकपालघट

कीउत्पत्तिकरैहै कार्यरूपकूंप्राप्तहुयेकपालसैंघटकीउत्पत्तिहोवैनहीं यातैंपरिणामवादमेंप्रागभावनिष्फलहै औविचारकरैतौआरंभ

वादमेंबीप्रागभावनिष्फलहै काहेतैंघटकीउत्पत्तिहुयांफेरिउत्पत्तिहुईचाहियेजोऐसैंकहैंताकूंयहपूछ्याचाहिये घटांतरकीउत्पत्तिहुईचा

हिये अथवाजोघटजिसकपालमेंउपज्याहैतिसकीउत्पत्तिहुईचाहियें जोऐसैंकहै अन्यघटकीउत्पत्तिहुईचाहियेसोतोसंभवैन १९

हीं काहेतैंजिसकपालसैंजोघटहोवैहैतिसकपालमेंतिसीघटकीकारणताहै घटांतरकीकारणताकपालांतरमेंहै यातैंअन्यघटकीउत्प

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त्तिकी प्राप्तिनहीं औ जो ऐसें कहै जो घट पूर्व उपज्या है तिसकी उत्पत्ति होवैगी सो बी संभवै नहीं काहेतें जहां कपालसें घटकी उत्पत्ति होवै तहां
प्रथमउत्पत्तिअन्यउत्पत्तिकी प्रतिबंधक है यातें फेरिउत्पत्तिकी प्रतीतिनहीं प्रागभाव निष्फल है औ उत्पत्तिके स्वरूपका सूक्ष्मविचारक
रै तौ फेरिउत्पत्ति हुई चाहिये यह कथन हीं विरुद्ध है काहेतें आद्यक्षणसें संबंधकूं उत्पत्ति कहै हैं घटका आद्यक्षणसें संबंध घटकी उत्पत्ति क
हियेहै घटाधिकरणक्षणके ध्वंसका अनधिकरण जो क्षण सो घटका आद्यक्षण कहिये है घटके अधिकरण अनंतक्षण हैं तिनमें घटके अधिक
रणजो द्वितीयादिक्षण तिनमें घटाधिकरण प्रथमक्षणका ध्वंस रहै है औ प्रथमक्षणमें घटाधिकरणक्षणका ध्वंस रहै नहीं यातें घटाधि-
करणक्षणके ध्वंसका अनधिकरण घटका प्रथमक्षण है ताक्षणसैं संबंध ही घटकी उत्पत्ति कहिये है द्वितीयादिक्षणमें प्रथमक्षणसें संबंध
होवै नहीं यातें प्रथमक्षणमें हीं उत्पद्यते ऐसा व्यवहार होवैहै द्वितीयादिक्षणमें नहीं इसरीतिसें प्रथमक्षणसंबंधरूपउत्पत्ति फेरिहु
ई चाहिये ऐसा कहना मम जननी वंध्या इसवाक्य तुल्य है काहेतें घटकी उत्पत्तिसें उत्तरक्षण घटाधिकरणके ध्वंसका अधिकरण ही-
होवैगा यातें घटाधिकरणक्षणके ध्वंसका अनधिकरणक्षण फेरि संभवै नहीं यातें उत्पन्नकी उत्पत्ति हुई चाहिये यह कहना विरुद्ध है इस
रीतिसें प्रागभाव निष्फल है कपाले समवायेन घटो नास्ति या प्रतीतिका विषय सामयिकाभाव ही संभवै है औ कपाले घटो भविष्यति या प्र
तीतिका विषय बी घटका भविष्यत् काल है प्रागभाव असिद्ध है औ अपनें शास्त्रके संस्कारसें नैयायिक प्रागभावकूं मानें तौ बी सादि मान्या
चाहिये अनादि संभवै नहीं काहेतें अन्यमतमें तौ सारे अभावनका अधिकरणभेदसें भेद होवै है औ नैयायिकमतमें अधिकरणभेद-
सें अभावका भेद नहीं किंतु प्रतियोगिभेदसें अभावका भेद होवै है यातें एकप्रतियोगिक अभाव नाना अधिकरणमें एक ही होवै है परं
तु प्रागभाव तौ नैयायिकमतमें बी अधिकरणभेदसें भिन्न ही होवै है काहेतें घटका प्रागभाव घटके उपादानकारण कपालमें

1515

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वृत्ति. हीरहेहैं तिनमेंवीजोघटजिसकपालमेंहोवै ताघटकाप्रागभावतिसकपालमेंहै अन्यघटकाप्रागभावअन्यकपालमेंहै इसरीतिसें प्र.
२० एकप्रागभावएकहीअधिकरणमेंरहेहै सोकपालादिकप्रागभावकेअधिकरणसादिहैं तिनमेंरहनेवाला प्रागभावकिसींरीतिसेंअ ६
नादिसंभवैनहीं जोअनादिअधिकरणमेंऔसादिमें एकप्रागभावरहै ताहोवै तौअनादिकहनावीसंभवै सोनानाअधिकरणमेंप्रा
गभावसंभवैनहीं यातेंकपालमात्रवृत्तिघटप्रागभावकूंअनादितासंभवैनहीं औजोऐसेंकहैकपालकीउत्पत्तिसें पूर्वकपालकेअ
वयवनमेंघटकाप्रागभावरहेहै तिसतें पूर्वअवयवकेअवयवनमेंरहेहै इसरीतिसेंअनादिपरमाणुमेंघटकाप्रागभावअनादिहैसो
संभवैनहीं काहेतें अपनेंप्रतियोगिकेउपादानकारणमेंप्रागभावरहेहै अन्यमेंनहीं यहनैयायिकनकानियमहै कपालकेअवयवक
पालकेउपादानकारणहैं घटकेनहीं यातेंकपालावयवमेंकपालकाहीप्रागभावसंभवैहै घटकाप्रागभावकपालमेंहीहै कपालावय
वमेंसंभवैनहीं इसरीतिसें परमाणुकेवलद्व्यणुककाउपादानकारणहै यातेंद्व्यणुककाप्रागभावहीपरमाणुमेंहीरहेहै द्व्यणुक
सेंआगेअणुकादिकघटपर्यंतकेप्रागभावपरमाणुमेंसंभवैनहीं औपरमाणुमेंद्व्यणुकभिन्नपदार्थनकावीप्रागभावमानेंतौपर
माणुसेंवीघटकीउत्पत्तिहुईचाहिये औपरिणामवादमेंतौकार्यकारणकाअभेदहै यातेंद्व्यणुकसेंलेकेअंत्यावयवीघटपर्यंतका
र्यकारणधाराकाभेदनहीं तिसमतमेंतौपरमाणुमें द्व्यणुककाप्रागभावहीघटपर्यंतकार्यधाराकाप्रागभावहै यातेंपरमाणुमेंघटा
दिकनकेप्रागभावकहनासंभवैसो आरंभवादमेंकार्यकारणकाअभेदतौहैनहीं किंतुकार्यकारणकापरस्परअत्यंतभेदहै यातेंकपा
लावयवमेंघटकाप्रागभावनहीं तैसेंपरमाणुमेंद्व्यणुककेकार्यकाप्रागभावसंभवैनहीं इसरीतिसेंसादिकपालादिकनमेंघटादिक २०
नकेप्रागभावकूंअनादिताकथनअसंगतहै तैसेंनैयायिकमतमें प्रध्वंसाभाववीअपनेंप्रतियोगिकेउपादानमेंहीरहेहै यातेंघ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

टका ध्वंस कपालमात्रवृत्ति है सो अनंत है यह कथन असंगत है घटध्वंसका अधिकरण जो कपाल ताके नाशतैं घटध्वंसका नाश होवे है
औ घटध्वंसका नाश मानेंतैं नैयायिक यह दोष कहे हैं घटध्वंसका ध्वंस होवे तौ घटका उज्जीवन हुया चाहिये काहेतैं प्रागभावप्रध्वंसाभाव
का अनाधार काल प्रतियोगिका आधार होवे है यह नियम है जा कालमें घटध्वंसका ध्वंस होवे सो काल घटध्वंसका अनाधार होवेगा औ 1517
प्रागभावका अनाधार होवेगा यातें घटका आधार होवेगा इस रीतिसें ध्वंसका ध्वंस माने घटादिक प्रतियोगीका उज्जीवन होवेगा
यह दोष वी नहीं काहेतैं प्रागभावकूं अनादिता औ ध्वंसकूं अनंतता मानैं तो उक्त नियमकी सिद्धि होवे औ उक्त नियम मानैं तो प्राग
भावकूं अनादिताकी औ ध्वंसकूं अनंतताकी सिद्धि होवे औ सिद्धांत पक्षमें प्रागभाव सादि है यातें प्रागभावकी उत्पत्तिसें पूर्वकाल
घटके प्रागभावका औ घटके ध्वंसका अनाधार है घटका आधार नहीं अथवा सुखसिद्धांतमें सर्वथा प्रागभावका अंगीकार नहीं
यातें घटकी उत्पत्तिसें पूर्वकाल घटके प्रागभावका अनाधार है औ घटके ध्वंसका अनाधार है घटरूप प्रतियोगीका अनाधार है घट
रूप प्रतियोगीका आधार नहीं यातें प्रागभाव ध्वंसका अनाधार काल प्रतियोगीका आधार होवे है यह नियम संभवे नहीं यातें घटध्वंस
का वी ध्वंस होवे है औ उक्त नियमकी असिद्धिसें घटका उज्जीवन होवे नहीं तैसें अन्योन्याभाव वी सादि सांत अधिकरणमें सादि सां
त है जैसें घटमें पटका अन्योन्याभाव है ताका अधिकरण घट है सो सादि है औ सांत है यातें घटवृत्ति पटान्योन्याभाव वी सादि सांत है
अनादि अधिकरणमें अन्योन्याभाव अनादि है परंतु अनादि वी सांत है अनंत नहीं जैसें ब्रह्ममें जीवका भेद है सो जीवका अन्योन्याभाव है
ताका अधिकरण ब्रह्म है सो अनादि है यातें ब्रह्ममें जीवका भेदरूप अन्योन्याभाव अनादि है औ ब्रह्मज्ञानसें अज्ञाननिवृत्ति द्वारा भेद
का अंत होवे है यातें सांत है अनादि पदार्थ की वी ज्ञानसैं निवृत्ति अद्वैतवादमें इष्ट है इसी वास्ते शुद्ध चेतन १ जीव २ ईश्वर ३ अविद्या ४

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वृत्ति. अविद्याचेतनकासंबंध ५ अनादिकापरस्परभेद ६ येषट्पदार्थअद्वैतमतमैंस्वरूपसें अनादिकहेहैं औरकछुचेतनविनापांचकीज्ञान प.
२१ सैंनिवृत्तिमानेहैं यामैंयहशंकाहोवैहै जीवईश्वरकूंअद्वैतवादमैंमायिककहेहैं मायाकाकार्यमायिककहीयेहै जीवईशमायाकेकार्य ६
हैं औरअनादिहैंयहकहनाविरुद्धहै ताशंकाकायहसमाधानहै जीवईशमायाकेकार्यहैं यहमायिकपदकाअर्थनहींहै किंतुमाया
कीस्थितिकेअधीनजीवईशकीस्थितिहै मायाकीस्थितिविनाजीवईशकीस्थितिहोवैनहीं यातैंमायिकहैंऔरमायाकीनांईअनादिहैं
इसरीतिसैंअनादिअन्योन्याभाववीसांतहै अन्योन्याभावअनंतनहीं तैसैंअत्यंताभाववीआकाशादिकनकीनांईअविद्याकाका
र्यहै औरविनाशीहै इसरीतिसैंअद्वैतवादमैंसारेअभावविनाशीहैं कोईअभावनित्यनहीं औरअद्वैतवादमैंअनात्मपदार्थसारेमाया
काकार्यहैं यातैंआत्मभिन्नकूंनित्यतासंभवैनहीं जैसैंघटादिकभावपदार्थमायाकेकार्यहै तैसैंअभाववीमायाकेकार्यहै यद्यपि
अद्वैतवादमैंमायाकूंभावरूपकहेहैं यातैंअभावपदार्थकीउपादानतामायाकूंसंभवैनहींकार्यकै सजातीयउपादानहोवैहै अभा
वकैसजातीयमायानहीं किंतुमायाऔरअभावभावत्वअभावत्वसैंविजातीयहैंमायामैंभावत्वहै औरअभावमैंअभावत्वहै तथापिसकलअ-
भावनकाउपादानमायाहीहै काहेतैंअनिर्वचनीयत्वमिथ्यात्वज्ञाननिवर्त्यत्वअनात्मत्वादिकधर्मनतैंमायाऔरअभावसजातीयहैं
औरसकलधर्मनसैंउपादानऔकार्यकीसजातीयताकहै तौ घटकपालमैंवी घटत्वकपालत्वविजातीयधर्महोनेतैंघटकाउपादा
नकपालनहींहोवैगा जैसैंमृन्मयत्वादिकधर्मनसैंघटकपालसजातीयहैं तैसैंअनिर्वचनीयत्वादिकधर्मनसैंअभावमायावीस
जातीयहैं यातैंसकलअभावमायाकेकार्यहैं यातैंमिथ्याहैं औकोईग्रंथकारअद्वैतवादीएकअत्यंताभावकूंमानेहैं औरअभावनकूंअलीककहेहैं जे २१
सैंघटकाप्रागभावकपालमैंकहेहैं सोअलीकहै काहेतैंघटकीउत्पत्तिसैंपूर्वकालसंबंधीकपालहीघटोभविष्यतियाप्रतीतिकाविषयहै घ-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

टकाप्रागभावअप्रसिद्धहै तैसेंमुद्गरादिकनसैंचूर्णीकृतकपाल अथवाविभक्तकपालनसैंपृथक्घटध्वंसवांअप्रसिद्धहै तैसेंघटासंबंधीभू
तलहीघटकासामयिकाभावहै घटहोवेतवघटकासंबंधीभूतलहै यातैंघटासंबंधीभूतलनहीं इसरीतिसैंसामयिकाभावअधिकरणसेंपृथ
क्नहीं तैसेंघटसेंपटकेभेदकूं घटवृत्तिपटान्योन्याभावकहैहैं सोदोनूंकैंअभेदकाअत्यंताभावरूपहै दोपदार्थनकेअभेदात्यंताभावसैंपृ
थक्अन्योन्याभावअप्रसिद्धहै इसरीतिसैं एकअत्यंताभावहीहै और कोईअभावनहीं इसरीतिसैंअभावकेनिरूपणमैंबहुतविचारहै ग्रंथवृद्धिके
भयतैंरीतिमात्रजनाईहै अभावकास्वरूपनिरूपणकियातामें प्रमाणनिरूपणकरियेहै अभावकाज्ञानदोप्रकारकाहै एकभ्रमरूपहै दूजा
प्रमारूपहै भ्रमज्ञानवीप्रमाकीनाईप्रत्यक्षपरोक्षभेदसेंदोप्रकारकाहै घटवालेभूतलमें इंद्रियकासंयोगहुयेवीकिसीप्रकारतैंघटकीउ
पलब्धिनहोवै तहांघटाभावकाप्रत्यक्षभ्रमहोवैहै परंतुविषयविनाप्रत्यक्षज्ञानहोवैनहीं अन्यथाख्यातिवादीकेमतमैंतोभ्रमप्र-
त्यक्षमैंविषयकीअपेक्षानहीं किंतुअन्यपदार्थकाअन्यरूपतैंज्ञानकूंअन्यथाख्यातिकहैहैं यातैंजापदार्थकाअन्यरूपतैंज्ञानहोवै
तिसकीतोअपेक्षाहै जैसैंरज्जुकासर्पत्वरूपतैंज्ञानहोवैहै तामैंरज्जुकीअपेक्षाहै तथापिजिसविषयकाज्ञानमैंआकारप्रतीतहोवै
तिसकीअपेक्षाअन्यथाख्यातिवादीकेमतमैंनहीं जैसैंसर्पकाआकारभ्रममैंभासैहै ताकीअपेक्षानहीं तथापिसिद्धांतमैंअनि
र्वचनीयख्यातिहै जहांप्रत्यक्षभ्रमहोवै तहांभ्रमज्ञानकीनाईअनिर्वचनीयविषयकीवीउत्पत्तिहोवैहै यातैंव्यावहारिकघटवा
लेभूतलमैंप्रातिभासिकघटाभावअनिर्वचनीयउपजैहै व्यावहारिकघटकाव्यावहारिकघटाभावतैंविरोधहै प्रातिभासिकघ
टाभावतैंव्यावहारिकघटकाविरोधनहीं यातैंव्यावहारिकघटवालेभूतलमैंअनिर्वचनीयघटाभावऔरताकाअनिर्वचनीय
ज्ञानदोनूंउपजैहैं तहांघटाभावकाप्रत्यक्षभ्रमकहियेहै जहांअंधकूंविप्रलंभकवचनतैंघटवालेभूतलमैंघटाभावकाज्ञानहो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जैसे अभावका परोक्षभ्रम है परोक्षज्ञानमें विषयकी अपेक्षा नहीं काहेतें अतीत का औ अनागत का वी परोक्षज्ञान होवै है यातें अभाव काजहां परोक्षभ्रम होवै तहां प्रातिभासिक अभावकी उत्पत्ति होवै नहीं केवल अभावाकार वृत्तिरूप ज्ञानकी ही उत्पत्ति होवै है अथवा परोक्षभ्रमकी नांई जहां अभावका प्रत्यक्षभ्रम होवै तहां वी प्रातिभासिक अभावकी उत्पत्ति होवै नहीं किंतु अभावका भ्रम अन्यथाख्याति रूप है काहेतें रज्जु आदिकनमें सर्पादिभ्रमकूं अन्यथाख्यातिरूप मानें तौ यह दोष है रज्जुमें सर्पत्वधर्मकी प्रतीतिकूं अन्यथाख्याति कहै है सो संभवै नहीं काहेतें इंद्रियका संबंध रज्जुसें औ रज्जुत्वसें है सर्पत्वसें इंद्रियका संबंध नहीं औ विषयतें संबंध विना इंद्रियजन्यज्ञान होवै नहीं यातें रज्जुका सर्पत्वधर्मसें प्रतीतिरूप अन्यथाख्याति संभवै नहीं इस रीतिसें प्रत्यक्षभ्रमस्थलमें अन्यथाख्यातिका निषेध करिकै अनिर्वचनीयख्याति मानी है ताकी रीति पूर्व कही है परंतु जहां अधिष्ठान औ आरोप्य दोनूं इंद्रियसंबंधी होवें तहां उक्त दोष संभवै नहीं यातें सिद्धांतग्रंथनमें वी तहां अन्यथाख्याति ही लिखी है जैसें पुष्पके उपरि धरे स्फटिकमें रक्तताका प्रत्यक्षभ्रम होवै है तहां पुष्पकी रक्ततासें वी नेत्रका संयुक्तसमवाय अथवा संयुक्ततादात्म्य संबंध है औ स्फटिकसें नेत्रका संयोगसंबंध है तहां रक्तता आरोप्य है औ स्फटिक अधिष्ठान है तहां पुष्पकी व्यावहारिक रक्तता स्फटिकमें प्रतीत होवै है स्फटिकमें अनिर्वचनीय रक्तताकी उत्पत्ति होवै नहीं काहेतें जो रक्ततासें सर्पत्वकी नांई नेत्रका संबंध नहीं होता तौ विषयतें संबंध विना इंद्रियजन्यज्ञान होवै नहीं यह दोष होता नेत्रसें रक्तताका संबंध होनेतें उक्त दोष संभवै नहीं यातें आरोप्यके सन्निधानस्थलमें अन्यथाख्याति ही संभवै है जैसें घटवाले भूतलमें घटाभावभ्रम होवै तहां आरोप्य अधिष्ठानका सन्निधान होनेतें आरोप्यसें वी अधिष्ठानकी नांई इंद्रियका संबंध है काहेतें अधिष्ठान भूतल है औ आरोप्य घटाभाव भूतलमें तौ नहीं है परंतु भूतलवृत्ति भूतल- २२

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त्वमें घटाभाव है औ भूतलवृत्ति जो रूपस्पर्शादि गुण हैं तिनमें घटाभाव है भूतलत्वमें औ भूतलके रूपादिक गुणनमें घटका संयोग कदीवा होवे नहीं काहेतें दो द्रव्यनका संयोग होवे है घट तो द्रव्य है भूतलत्व द्रव्य नहीं किंतु जाति है तासें घटका संयोग संभवे नहीं भूतलके रूपस्पर्शादिक वी द्रव्य नहीं किंतु गुण हैं तिनमें वी घटका संयोग संभवे नहीं औ जामें जाका संयोगसंबंध नहीं होवे तो तिसमें तिस पदार्थका संयोगसंबंधावच्छिन्न अत्यंताभाव होवे है इसरीतिसें भूतलमें संयोगसंबंधतें घट होतें वी भूतलत्वमें औ भूतलके गुणनमें संयोगसंबंधतें घट नहीं होनेतें संयोगसंबंधावच्छिन्न घटात्यंताभाव है तहां अधिष्ठान भूतल है औ आरोप्य घटात्यंताभाव है ताका भूतलसें स्वाधिकरणसमवायसंबंध है स्व कहिये घटात्यंताभावता का अधिकरण भूतलत्व औ भूतलके रूपादि गुण तिनका समवाय भूतलमें है औ भूतलका घटात्यंताभावसें स्वसमवेतवृत्तित्व संबंध है स्व कहिये भूतल तामें समवेत कहिये समवायसंबंधसें रहनेवाले भूतलत्व औ गुण तिनमें वृत्तित्व कहिये आधेयता अत्यंताभावकी है इसरीतिसें आरोप्य अधिष्ठानके परस्पर संबंध होनेतें संन्निधान है यातें भूतलत्ववृत्ति औ रूपस्पर्शादिवृत्ति जो व्यावहारिक घटात्यंताभावता की भूतलमें प्रतीति होनेतें अभावका भ्रम अन्यथाख्यातिरूप है प्रातिभासिक अभावकी उत्पत्ति निष्प्रयोजन है इसरीतिसें प्रत्यक्षपरोक्षभेदसें अभावभ्रम दोप्रकारका है तैसें अभावकी प्रमा वी प्रत्यक्ष परोक्ष भेदसें दोप्रकारकी है नैयायिकमतमें तो इंद्रियजन्य ज्ञानकूं अपरोक्षज्ञान कहे हैं तासें भिन्न ज्ञानकूं परोक्षज्ञान कहे हैं औ अभावसें वी इंद्रियका विशेषणता अथवा स्वसंबद्धविशेषणता संबंध जहां होवे तहां अभावकी प्रत्यक्षप्रमा औ परोक्षप्रमा कहिये है जैसें श्रोत्रसें शब्दाभावका विशेषणता संबंध है तहां शब्दाभावकी श्रोत्रजन्य प्रत्यक्षप्रमा है तैसें भूतलमें घटाभाव होवे तहां नेत्रसंबंधभूतलमें विशेषणता संबंध अभावका होनेतें नेत्रजन्य प्रत्यक्षप्रमा घटाभावकी होवे है

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

परंतुपुरुषशून्यभूतलमेंजहांस्थाणुमेंपुरुषभ्रमहोवैहै तहांपुरुषाभावहै औपुरुषाभावतेंनेत्रकास्वसंबद्धविशेषणतासंबं
धवीहै तथापिपुरुषाभावकाप्रत्यक्षहोवैनहीं यातेंअभावकेप्रत्यक्षमेंइंद्रियकरणहै प्रतियोगीकाअनुपलंभसहकारीहै जहांस्था
णुमेंपुरुषभ्रमहोवैतहांप्रतियोगीकाअनुपलंभनहींहै किंतुपुरुषरूपप्रतियोगीकाउपलंभकहियेज्ञानहै जैसें घटादिकद्रव्य
केचाक्षुषप्रत्यक्षमेंनेत्रकरणहै औअंधकारमेंघटकाचाक्षुषप्रत्यक्षहोवैनहीं यातेंनेत्रजन्यचाक्षुषप्रत्यक्षमेंआलोकसंयोगस
हकारीहैं यातेंअंधकारस्थघटहोवै तहांनेत्रइंद्रियहै औनेत्रइंद्रियकाघटसेंसंयोगवीहै तथापिघटकाआलोकसेंसंयोग
रूपसहकारीनहीं यातेंअंधकारस्थघटकाचाक्षुषप्रत्यक्षहोवैनहीं चाक्षुषप्रत्यक्षमें आलोकसंयोगसहकारीहै तहांइंद्रि
यसेंआलोककासंयोगहेतुनहीं किंतुविषयसेंआलोकसंयोगहेतुहै यातेंप्रकाशमेंस्थितपुरुषकूंअंधकारस्थघटकाप्रत्यक्षहो
वैनहीं तहां इंद्रियसेंतो आलोकसंयोगहैविषयजोघटतासेंआलोकसंयोगनहीं औअंधकारस्थपुरषकूंप्रकाशस्थघटकाप्र
त्यक्षहोवैहै तहांइंद्रियसेंतोआलोककासंयोगनहींहै विषयनेंआलोककासंयोगहै यातेंविषयऔआलोकसंयोगनेत्रजन्य
ज्ञानमेंसहकारीहै तथापिघटकेपूर्वदेशमेंआलोककासंयोगहोवै पश्चिमदेशमेंनेत्रकासंयोगहोवै तहांघटकाचाक्षुषप्रत्य
क्षहोवैनहींहुयाचाहिये काहेतेंविषयतें आलोककासंयोगरूपसहकारीहै औसंयोगरूपव्यापारवालानेत्रइंद्रियकरणवीहै
यातेंजिसघटके.देशमेंनेत्रकासंयोगहोवैतिसीदेशमेंआलोकसंयोगसहकारीहै यहमान्याचाहिये दीपसूर्यादिकनकीप्र
भाकूंआलोककहैहैं जैसेंद्रव्यकेचाक्षुषप्रत्यक्षमेंआलोकसंयोगसहकारीहै तैसेंअभावकेप्रत्यक्षमेंइंद्रियकरणहै औप्र २३
तियोगीकाअनुपलंभसहकारीहै यातेंस्थाणुमें पुरुषभ्रमहोवै तहांपुरुषाभावकाप्रत्यक्षहोवैनहीं तैसेंजहांभूतलमें घ

1522

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

टनहींहोवे औघटकेसदृशअन्यपदार्थधन्याहोवे तामेंघटभ्रमहोयजावे ताभूतलमें घटाभावहै औघटाभावसेंइंद्रियकास्वसंबद्ध
विशेषणता संबंधवीहै काहेतें घटकातोभ्रमहुयाहै औ घटहै नहीं किंतु घटाभावहै ताकाभूतलमेंविशेषणतासंबंधहै तिसभूत
लसेंइंद्रियकासंयोगहै यातेंइंद्रियसंबद्धकहिये इंद्रिसेंसंबंद्धवाले भूतलमें अभावकाविशेषणतासंबंधहै यातेंसंबंधरूपव्यापारवाला
इंद्रियकरण तोहै प्रतियोगीकाअनुपलंभसहकारी नहीं काहेतेंज्ञानकूंउपलंभकहैहैं सोज्ञानभ्रमहोवे अथवाप्रमाहोवे यामेंविशे
षनहीं जहांघटकाभ्रमहोवे तहांघटाभावकाप्रतियोगीजोघट ताकाअनुपलंभनहीं किंतुभ्रमरूपउपलंभकहियेज्ञानहै इसरीतिसेंअ
भावके प्रत्यक्षमेंइंद्रियकरणहै औप्रतियोगीकाअनुपलंभसहकारीहै केवलप्रतियोगीके अनुपलंभकूंसहकारीकहें तौवी निर्वाहहो
वेनहीं काहेतेंस्तंभमेंपिशाचकाभेद तोप्रत्यक्षहै औस्तंभमेंपिशाचका अत्यंताभावप्रत्यक्षनहीं यहस्तंभपिशाचनहीं ऐसा अनुभव
सर्वलोकनकूंहोवेहै औस्तंभमेंपिशाचनहींहै ऐसानिश्चयहोवेनहीं तहांप्रथम अनुभवकाविषयस्तंभवृत्तिपिशाचान्योन्याभा
वहै औद्वितीयअनुभवकाविषयपिशाचात्यंताभावहै दोनूंअभावनकाप्रतियोगीपिशाचहै ताकाअनुपलंभहै औइंद्रियसंबद्धस्तंभहै
तामेंपिशाचान्योन्याभाव औपिशाचात्यंताभाव दोनूंविशेषणतासंबंधसेंरहेहै यातेंपिशाचान्योन्याभावकी नांईपिशाचात्यंताभावका-
प्रत्यक्षहुयाचाहिये तैसेंआत्मामेंसुखाभावदुःखाभावकाप्रत्यक्षहोवेहै औधर्माभावअधर्माभावकाप्रत्यक्षहोवेनहीं यहवार्ता
सर्वकेंअनुभवसिद्धहै इदानींमयिसुखंनास्ति इदानींमयिदुःखंनास्ति इसरीतिका अनुभवसर्वकूंहोवेहै सोअनुभवन्यायमत
मेंमानसप्रत्यक्षरूपहै मनकासुखाभावतें औदुःखाभावतें स्वसंयुक्तविशेषणतासंबंधहै काहेतें स्वकहियेमनतासेंसंयुक्तकहिये
संयोगवाला आत्मा तामेंविशेषणतासंबंधसेंसुखाभावदुःखाभावरहैहै तैसेंधर्माभावअधर्माभावसेंवीमनकास्वसंयुक्तविशेषणता

1523

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1524

संबंधहै तथापिप्रत्यक्षहोवैनहीं मयिधर्मोनास्तिमयिअधर्मोनास्ति ऐसाप्रत्यक्षअनुभवकिसीकूंहोवैनहीं औसुखाभावदुःखाभावकेप्रतियोगीसुखदुः
खहैं तिनकाजैसें अनुपलंभअभावकालमेंहोवैहै तैसें धर्माभावअधर्माभावकेप्रतियोगीजोधर्मअधर्मतिनकावीअनुपलंभहोवैहै यातेंप्रतियोगिकाअनुप
लंभरूपसहकारीसहितमनतेंसुखाभावदुःखाभावकाप्रत्यक्षहोवैहै तैसेंधर्माधर्मरूपप्रतियोगीकाअनुपलंभरूपसहकारीसहितमनतेंधर्माधर्मकेअभावका
वीप्रत्यक्षहुयाचाहिये तैसेंवायुमेंरूपाभावप्रत्यक्षहै औगुरुत्वाभावप्रत्यक्षनहींहै रूपाभावकाप्रतियोगीरूपहै गुरुत्वाभावकाप्रतियोगीगुरुत्वहै तिनदोनूंका
वायुमेंअनुपलंभहै औनेत्रकावायुसेंसंयोगसंबंधहोवैहै नेत्रसंयुक्तवायुमेंरूपाभावगुरुत्वाभावविशेषणतासंबंधसेंरहैहै यातेंस्व
संबद्धविशेषणतासंबंधसें जैसेंवायुमेंरूपाभावकाचाक्षुषप्रत्यक्षहोवैहै तैसेंस्वसंबद्धविशेषणतासंबंधगुरुत्वाभावसेंवीनेत्रकाहैं या
तेंवायौरूपंनास्ति इसचाक्षुषप्रतीतिकीनांईवायौगुरुत्वंनास्ति ऐसीचाक्षुषप्रतीतिवीहुईचाहिये यातेंइंद्रियजन्यअभावकेप्रत्यक्ष
मेंकेवलअनुपलंभसहकारीनहींहै किंतुयोग्यानुपलंभसहकारीहै वायुमेंअनुपलंभजैसेंरूपकाहै तैसेंगुरुत्वकावीअनुपलंभहै प
रंतुयोग्यानुपलंभरूपकाहै गुरुत्वकायोग्यानुपलंभनहीं काहेतें प्रत्यक्षयोग्यकीअप्रतीतिकूंयोग्यानुपलंभकहेहैं रूपतोप्रत्यक्षयोग्यहै
औगुरुत्वप्रत्यक्षयोग्यनहीं काहेतेंतराजूकेऊर्द्धादिभावसेंगुरुत्वकीअनुमितिहोवैहै किसीइंद्रियसेंगुरुत्वकाज्ञानहोवैनहीं यातेंप्रत्यक्ष
योग्यगुरुत्वनहींहोनेतें ताकाअनुपलंभयोग्यानुपलंभनहीं तैसेंआत्मामेंसुखाभावदुःखाभावकामानसप्रत्यक्षहोवैहै तहांवीप्रत्यक्ष
योग्यसुखकाअनुपलंभऔप्रत्यक्षयोग्यदुःखकाअनुपलंभहोनेतें योग्यानुपलंभसहकारीकासंभवहै औधर्माभावअधर्माभावका
आत्मामेंमानसप्रत्यक्षहोवैनहीं तहांवीधर्माधर्मरूपप्रतियोगीकाअनुपलंभतोहै परंतुधर्माधर्मकेवलशास्त्रवेद्यहैं प्रत्यक्षयोग्यनहीं
यातेंधर्माधर्मकायोग्यानुपलंभनहीं ताकेअभावतेंधर्माभावअधर्माभावकामानसप्रत्यक्षहोवैनहीं तैसेंस्तंभमेंपिशाचात्यंताभावका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रत्यक्षहोवैनहीं तहांबीपिशाच रूपप्रतियोगीकाअनुपलंभतौहै परंतुप्रत्यक्षयोग्यपिशाचनहीं यातैंयोग्यानुपलंभनहीं प्रत्यक्षयोग्यप्रतियोगीकेअनुपलंभकूंयोग्यानुपलंभकहैहैं पिशाचात्यंताभावकाप्रतियोगीजोपिशाचसोप्रत्यक्षयोग्यनहीं यातैंपिशाचकाअनुपलंभ योग्यानुपलंभनहीं यामैंयहशंकारहैहै स्तंभमैंपिशाचकाभेदबीप्रत्यक्षनहींचाहिये काहेतैंपिशाचान्योन्याभावकूंपिशाचभेदकहैहैं ताकाप्रतियोगीबीपिशाचहैसोप्रत्यक्षयोग्यनहीं यातैंयोग्यानुपलंभकेअभावतैंपिशाचात्यंताभावकीनांईपिशाचान्योन्याभावबीअप्रत्यक्षहुयाचाहिये जोसिद्धांतीऐसैंकहैउक्तरूपयोग्यानुपलंभनहींहै किंतुप्रत्यक्षयोग्यअधिकरणमैंप्रतियोगीकेअनुपलंभकूंयोग्यानुपलंभकहैहैं प्रतियोगीचाहेप्रत्यक्षयोग्यहोवै अथवाअप्रत्यक्षहोवै अभावकाअधिकरणप्रत्यक्षयोग्यचाहिये तामैंप्रतियोगीकाअनुपलंभचाहिये स्तंभमैंजोपिशाचान्योन्याभावताकाप्रतियोगीपिशाचहै सोतौप्रत्यक्षयोग्यनहींहै औतामैंप्रत्यक्षयोग्यताकीअपेक्षाबीनहीं तथापिपिशाचान्योन्याभावकाअधिकरणस्तंभहै सोप्रत्यक्षयोग्यहोनेतैंयोग्यानुपलंभकासद्भावहै यातैंपिशाचकाअन्योन्याभावस्तंभमैंप्रत्यक्षसंभवैहै सिद्धांतिकायहसमाधानसंभवैनहीं काहेतैंउक्तरीतिसैंयहसिद्धहोवैहै अभावकाप्रतियोगि प्रत्यक्षयोग्यहोवै अथवाप्रत्यक्षकेअयोग्यहोवै जहांअभावकाअधिकरणप्रत्यक्षयोग्यहोवै तामैंप्रतियोगीकाअनुपलंभहोवै औसोयोग्यानुपलंभअभावकेप्रत्यक्षमैंसहकारीहै ऐसाअर्थमानैंस्तंभमैंपिशाचात्यंताभावबीप्रत्यक्षहुयाचाहिये तैसैंआत्मामैंधर्माभावअधर्माभावबीप्रत्यक्षहुयाचाहिये काहेतैंस्तंभवृत्तिपिशाचात्यंताभावकाअधिकरणस्तंभहै सोप्रत्यक्षयोग्यहै आत्मवृत्तिधर्माभावअधर्माभावकाअधिकरणआत्माप्रत्यक्षयोग्यहै परंतुइतनाभेदहै स्तंभतौबाह्यइंद्रियजन्यप्रत्यक्षयोग्यहै यातैंस्तंभमैंपिशाचात्यंताभावकाबाह्यइंद्रियजन्यप्रत्यक्षहुयाचाहिये औआत्मामानसप्रत्यक्षयोग्यहै यातैंआत्मामैंधर्माभावअधर्माभावकामानस

1525

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वृत्ति.
२५

प्रत्यक्षहुयाचाहिये औवायुकूंप्रत्यक्षयोग्यतामानैंतौ वायुवृत्तिगुरुत्वाभावकाप्रत्यक्षहुयाचाहिये औवायुकूंप्रत्यक्षयोग्यतानहींमानैंतौ प.
वायुवृत्तिरूपाभावकाबीप्रत्यक्षनहींहुयाचाहिये औवायुमेंरूपाभावप्रत्यक्षहै यहसिद्धांतहै औअनुभवसिद्धहै यहअर्थआगेंस्पष्ट ६
होवैगा औजोसिद्धांतीइसरीतिसेंसमाधानकरै योग्यानुपलंभदोप्रकारकाहै एकतोप्रत्यक्षयोग्यप्रतियोगीकाअनुपलंभयोग्यानुपलंभ
है औदूसराप्रत्यक्षयोग्यअधिकरणमेंप्रतियोगीकाअनुपलंभयोग्यानुपलंभहै अत्यंताभावकेप्रत्यक्षमेंप्रथमयोग्यानुपलंभसहकारी 1526
है यातेंअधिकरणतोप्रत्यक्षयोग्यहोवै अथवाअयोग्यहोवै जिसअत्यंताभावकाप्रतियोगीप्रत्यक्षयोग्यहोवैताकाअनुपलंभअत्यं
ताभावकेप्रत्यक्षमेंसहकारीहै औअन्योन्याभावकेप्रत्यक्षमेंद्वितीयायोग्यानुपलंभसहकारीहै यातेंअन्योन्याभावकाप्रतियोगीप्रत्यक्षयोग्य
होवै अथवाअयोग्यहोवैप्रत्यक्षयोग्यअधिकरणमेंप्रतियोगीकाअनुपलंभअन्योन्याभावकेप्रत्यक्षमेंसहकारीहै यातेंकहूंबीदोषन
हीं स्तंभमेंपिशाचात्यंताभावकाप्रतियोगीपिशाचप्रत्यक्षयोग्यनहीं यातेंस्तंभवृत्तिपिशाचात्यंताभावअप्रत्यक्षहै औस्तंभवृत्तिपिशा
चान्योन्याभावकाअधिकरणस्तंभहैसोप्रत्यक्षहै यातेंस्तंभमेंपिशाचान्योन्याभावप्रत्यक्षहै आत्मवृत्तिसुखात्यंताभावदुःखात्यंताभाव
केप्रतियोगीसुखदुःखमानसप्रत्यक्षयोग्यहैं तिनकेअत्यंताभावनकामानसप्रत्यक्षहोवैहै धर्मअधर्मप्रत्यक्षयोग्यनहीं यातेंतिनकेअ
त्यंताभावनकाप्रत्यक्षहोवैनहीं रूपगुणतोप्रत्यक्षयोग्यहै यातेंवायुमेंरूपात्यंताभावकाप्रत्यक्षहोवैहै गुरुत्वगुणप्रत्यक्षयोग्यनहीं
यातेंवायुमेंगुरुत्वात्यंताभावप्रत्यक्षनहीं इसरीतिसेंयहअर्थसिद्धहुयाअधिकरणमेंप्रत्यक्षयोग्यताऔप्रतियोगीकाअनुपलंभअन्यो
न्याभावकेप्रत्यक्षमेंसहकारीहैं औप्रतियोगीमेंप्रत्यक्षयोग्यताऔप्रतियोगीकाअनुपलंभअत्यंताभावकेप्रत्यक्षमेंसहकारीहैं ऐसानिय २५
मसिद्धांतीकहैंसोबीसंभवैनहीं काहेतेंअन्योन्याभावकेप्रत्यक्षमेंअधिकरणकीयोग्यताहेतुहोवैतौवायुमेंरूपवद्भेदकाप्रत्यक्षहोवैहै सो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नहीं हुयाचाहिये वायुरूपवान्नऐसाप्रत्यक्षसर्वकूंहोवैहै औवक्ष्यमाणरीतिसैंऐसाप्रत्यक्षसंभवैहै तहांअन्योन्याभावकाअधिकरण वायुहैसोप्रत्यक्षयोग्यनहीं औवायुकूंआग्रहसैंप्रत्यक्षयोग्यतामानेतौवायुमैंगुरुत्ववच्छेदकावीप्रत्यक्षहुयाचाहिये औवायुर्गुरुत्व वान्नऐसाप्रत्यक्षकिसीकूंहोवैनहीं वक्ष्यमाणरीतिसैंसंभवैवीनहीं औस्तंभमैंपिशाचवच्छेदअप्रत्यक्षहै अन्योन्याभावकेप्रत्यक्षमैं अधिकर णकीयोग्यताहेतुहोवैतौपिशाचवच्छेदकाअधिकरणस्तंभहैताकूंप्रत्यक्षयोग्यताहोनेतैंपिशाचवदन्योन्याभावरूपपिशाचवच्छेदप्रत्यक्ष हुयाचाहिये औस्तंभःपिशाचवान्नऐसाप्रत्यक्षहोवैनहीं यातैंप्रत्यक्षयोग्यअधिकरणमैंप्रतियोगीकाअनुपलंभरूपयोग्यानुपलंभअन्यो न्याभावकेप्रत्यक्षमैंसहकारीहैं यहनियमसंभवैनहीं तैसैंअत्यंताभावकेप्रत्यक्षमैंप्रतियोगीकीयोग्यताकूंसहकारीमानेंतौजलपरमा णुमैंपृथिवीत्वात्यंताभावकाप्रत्यक्षहुयाचाहिये काहेतैंजलपरमाणुवृत्तिपृथिवीत्वकेअत्यंताभावकाप्रतियोगीपृथिवीत्वहै ताकाघटादि कनमैंचाक्षुषप्रत्यक्षहोवैहै यातैंप्रत्यक्षयोग्यप्रतियोगीहै औताकाजलपरमाणुमैंउपलंभकहियेप्रतीतिहोवैनहीं यातैंअनुपलंभहै औजलपरमाणुसैंनेत्रकासंयोगहोवैहै यातैंजलपरमाणुवृत्तिपृथिवीत्वात्यंताभावसैंनेत्रकास्वसंयुक्तविशेषणतासंबंधवीहै औजो ऐसैंकहै परमाणुनिरवयवहै तासैंनेत्रकासंयोगसंभवैनहीं काहेतैंपदार्थकेएकदेशमैंसंयोगहोवैहै अवयवकूंदेशकहेहैं परमाणुके अवयवरूपदेशसंभवैनहीं सकलपरमाणुमैंसंयोगकहैतौअव्याप्यवृत्तिसंयोगकास्वभावनहींहोवैगा एकदेशमैंहोवै एकदेशमैंन- हींहोवै सोअव्याप्यवृत्तिकहियेहै यातैंपरमाणुसैंनेत्रकासंयोगहोवैनहीं सोसंभवैनहीं काहेतैंपरमाणुकासंयोगनहींहोवैतौद्व्यणुकन हींहोवैगा औपरमाणुमैंमहत्वात्यंताभावकाचाक्षुषप्रत्यक्षहोवैहै सोनहींहोवैगा परमाणुमैंमहत्वाभावकाप्रत्यक्षहोवैहै यहआगे स्पष्टहोवैगा यातैंनेत्रसंयुक्तविशेषणतासंबंधसैं जैसैंपरमाणुमैंमहत्वाभावकाप्रत्यक्षहोवैहै तैसैंनेत्रसंयुक्तविशेषणतासंबंधसैंपृ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

थ्वीत्वाभावकाबीप्रत्यक्ष हुयाचाहिये नेत्रसंयुक्त परमाणुमेंमहत्त्वाभावकीनांई पृथिवीत्वाभावकाविशेषणतासंबंधहै परमाणुकासंयो
गव्याप्यवृत्तिहोवैहै यहमंजूषाकीटीकामेंलिख्याहै यातेंजलपरमाणुमेंपृथिवीत्वात्यंताभावकेप्रत्यक्षकीसामग्रीहोनेतेंताकाबीप्रत्य
क्षहुयाचाहिये औवक्ष्यमाणरीतिसेंजलपरमाणुमेंपृथिवीत्वात्यंताभावकाप्रत्यक्षहोवैनहीं इसरीतिसेंसकलअभावनकेप्रत्यक्षमें
एकरूपयोग्यानुपलंभसंभवैनहीं औअन्योन्याभावअत्यंताभावकेप्रत्यक्षमेंभिन्नभिन्नरूपवालायोग्यानुपलंभसहकारीकहनाबी
संभवैनहींयासंकाकायहसमाधानहै योग्येअनुपलंभःयोग्यानुपलंभः ऐसासप्तमीसमासकरैंतौअधिकरणमेंप्रत्यक्षयोग्यताहोवै तहांयोग्यानुपलंभसिद्ध
होवैहै औयोग्यस्यअनुपलंभः योग्यानुपलंभः ऐसाषष्ठीसमासकरैंतौप्रतियोगीमेंप्रत्यक्षयोग्यताहोवै तहांयोग्यानुपलंभसिद्धहोवै
है तहांएकएकप्रकारकें योग्यानुपलंभमाननेमेंदोषकह्या तैसेंअन्योन्याभावकेप्रत्यक्षमेंअधिकरणयोग्यताकासाधकसप्तमीसमास
वालायोग्यानुपलंभमानें औअत्यंताभावकेप्रत्यक्षमेंप्रतियोगीकीयोग्यतासाधकषष्ठीसमासवालायोग्यानुपलंभसहकारीमानेंतौअ
भावभेदसेंदोनूंकाअंगीकारहोवै तामेंबीदोषकह्या यातेंअन्यप्रकारकायोग्यानुपलंभसहकारीहै औयोग्यानुपलंभशब्दमेंसप्तमीस
मासऔषष्ठीसमासनहीं किंतुनीलघटः याशब्दकीनांई प्रथमासमासहै सोइसरीतिसेंहै जैसेंनीलश्चासौघटोनीलघटः याशब्दमें
प्रथमासमासहै ताकूंव्याकरणमेंकर्मधारयकहैहैं जहांकर्मधारयसमासहोवै तहांपूर्वपदार्थकाउत्तरपदार्थसेंअभेदप्रतीतहोवैहै
जैसेंनीलघटः याशब्दमेंकर्मधारयसमासकरैंनीलपदार्थकाघटपदार्थसेंअभेदप्रतीतहोवैहै तैसेंयोग्यश्चासौअनुपलंभःयो
ग्यानुपलंभः इसरीतिसेंकर्मधारयसमासकरैं योग्यानुपलंभशब्दसेंयोग्यपदार्थकाअनुपलंभपदार्थसेंअभेदप्रतीतहोवैहै यातें
अभावकेप्रतियोगीऔअधिकरणचाहे जैसेंहोवैतिनकीयोग्यतासेंप्रयोजननहीं अनुपलंभमेंयोग्यताचाहिये जहांप्रतियोगी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

काअनुपलंभयोग्यहोवै तहांअभावकाप्रत्यक्षहोवैहै जहांप्रतियोगीकाअनुपलंभअयोग्यहोवै तहांअभावकाप्रत्यक्षहोवैनहीं अनु
पलंभमैंयोग्यताअयोग्यताइसप्रकारकीहै उपलंभाभावकूंअनुपलंभकहैहैं प्रतीतिज्ञानउपलंभयेपर्यायशब्दहैं प्रतियोगीकीप्रतीतिका
अभावअनुपलंभशब्दकाअर्थहै यातैंइंद्रियसैंघटाभावकेप्रत्यक्षमैंघटकीप्रतीतिकाअभावसहकारीहैं तहांघटाभावकाज्ञानप्रमा
रूपफलहै औघटज्ञानकाअभाव घटाभावप्रमाकासहकारीकारणहै सोघटज्ञानकाअभावयोग्यचाहिये घटज्ञानाभावकूंही घटा
नुपलंभकहैहैं तिसअभावरूपअनुपलंभमैंअन्यप्रकारकीतोयोग्यतासंभवैनहीं किंतुजाअनुपलंभकाउपलंभरूपप्रतियोगी
योग्यहोवैसोअनुपलंभयोग्यकहियेहै जाअनुपलंभकाप्रतियोगीउपलंभअयोग्यहोवै सोअनुपलंभअयोग्यकहियेहै यातैं
यहसिद्धहुया योग्यउपलंभकाअभावरूपयोग्यानुपलंभसहकारीहैं इसरीतिसैं अनुपलंभकीयोग्यताकहनेकाउपलंभकीयोग्यतासैं
पर्यवसानहोयैहै यातैंउपलंभमैंयोग्यताचाहिये योग्यउपलंभकाअभावयोग्यानुपलंभकहियेहै उपलंभकीयोग्यताकाअनुपलंभमैं
व्यवहारहोवैहै यद्यपिप्रथमैंही योग्यउपलंभकेअभावकूंयोग्यानुपलंभकहेंलाघवहै उपलंभरूपप्रतियोगीद्वाराअनुपलंभकूंयो
ग्यकहनानिष्फलहै तथापिव्याकरणकीमर्यादासैं योग्यानुपलंभशब्दकाअर्थकरैं तबअनुपलंभमैंयोग्यताप्रतीतहोवैहै यातैं
उपलंभवृत्तिमुख्ययोग्यताकाअनुपलंभसैंआरोपकह्याहै यातैंयहसिद्धअर्थहै जहांप्रतियोगिकेयोग्यउपलंभकाअभावहोवै
तहांअभावकाप्रत्यक्षहोवैहै जहांप्रतियोगीकीसत्तासैंनियमकरिकेप्रतियोगीकेउपलंभकीसत्ताहोवै सोउपलंभयोग्यहैताका
अभावअनुपलंभवीयोग्यकहियेहै जहांप्रतियोगीहुयेंवीनियमकरिकेप्रतियोगीकाउपलंभनहोवै सोउपलंभअयोग्यहै ताकाअ
भावअनुपलंभवीअयोग्यकहियेहै जैसैंआलोकमैंघटकीसत्ताहोवै तबनियमकरिकेघटकाउपलंभहोवैहै तहांघटकाउपलंभयो

1529

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ग्यहै ताकाअनुपलंभवीयोग्यकहियेहै तैसेंसंयोगसंबंधसें जहांपिशाचहोवैतहांपिशाचसत्तासेंनियमकरिकैंपिशाचकाउप
लंभहोवैनहीं यातैंपिशाचकाउपलंभअयोग्यहै ताकाअभावपिशाचानुपलंभवीअयोग्यकहियेहै इसरीतिसेंघटानुपलंभयो-
ग्यहै सोघटाभावकैंप्रत्यक्षमेंहेतुहै औरपिशाचानुपलंभयोग्यनहीं यातैंपिशाचानुपलंभतैंपिशाचात्यंताभावकाप्रत्यक्षहोवै
नहीं यद्यपिघटाभावाधिकरणमें घटकीसत्ताऔघटोपलंभकीसत्तासंभवैनहीं तथापि घटकाऔघटोपलंभकाऐसाआरोपहो
वैहै यदिभूतलेघटःस्यात्तदाघटोपलंभःस्यात् यातैंघटाभावाधिकरणमेंवीआरोपित.घटकीसत्ताऔघटानुपलंभहोतेंवीआ
रोपितघटोपलंभकीसत्तासंभवैहै यातैंयहनिष्कृष्टअर्थहै जिसअभावके अधिकरणमेंप्रतियोगिकाआरोपकरेंप्रतियोगीकेउ
पलंभकानियमतैंआरोपहोवै सोउपलंभयोग्यहै तिसकाअनुपलंभवीयोग्यकहियेहै औतिसअधिकरणमेंसोअभावप्रत्यक्ष
है जिसअभावकेंअधिकरणमेंजिसअभावकेप्रतियोगीकाआरोपकरेंप्रतियोगीकेउपलंभकाआरोपहोवैनहीं सोअभावअप्र
त्यक्षहै जैसेंअंधकारमेंघटाभावप्रत्यक्षनहीं काहेतैंअंधकारमें यदिअत्रघटःस्यात् तदातस्योपलंभस्यात् इसरीतिसेंघटके
आरोपतैंघटकेउपलंभकानियमतैंआरोपसंभवैनहीं यातैंअंधकारमें घटकाप्रत्यक्षहोवैनहीं स्तंभमेंपिशाचकाभेदप्रत्यक्षहै काहेतैं यदिता
दात्म्येनपिशाचःस्तंभेस्यात्तदाउपलभ्येत इसरीतिसें स्तंभवृत्तितादात्म्यसंबंधसेंपिशाचकेआरोपतें पिशाचकेउपलंभकाआ
रोपनियमसेंहोवैहै काहेतैं स्तंभमेंतादात्म्यसंबंधसेंस्तंभहै ताकानियमतैंउपलंभहोवैहै तैसेंपिशाचवी तादात्म्यसंबंधसेंस्तंभ
मेंहोवैतोस्तंभकीनांईताकावीनियमतैंउपलंभहोवैताउपलंभकेअभावतैंस्तंभमेंतादात्म्यसंबंधसेंपिशाचनहीं यातैंपिशाचका
स्तंभमेंतादात्म्यसंबंधावछिन्नाभावहै तादात्म्यसंबंधावछिन्नाभावकूंहीअन्योन्याभावकहैहैं औरस्तंभमेंसंयोगसंबंधावछिन्न

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पिशाचात्यंताभाव तथा समवायसंबंधावछिन्नपिशाचात्यंताभाव प्रत्यक्ष नहीं काहेतें स्तंभे यदि संयोगेन पिशाचः स्यात् समवायेन वा पिशा
चः स्यात् तदा तस्योपलंभः स्यात् इसरीतिसें संयोगसंबंधतें अथवा समवायसंबंधतें पिशाचका स्तंभमें आरोप करें पिशाचका उपलंभ-
का आरोप होवैनहीं काहेतें जहां स्मशानके वृक्षादिकनमें संयोगसंबंधसें पिशाच रहेहै औ अपने अवयवनमें समवायसंबंधसें पिशाच रहे
है तहां वी पिशाचका उपलंभ होवैनहीं औ जो स्तंभमें संयोगसंबंधसें अथवा समवायसंबंधसें होवै तिन सर्वका उपलंभ होवै तो स्तंभमें संयोग
संबंधतें वा समवायसंबंधतें पिशाचके आरोपतें पिशाचके उपलंभका आरोप होवै औ स्तंभमें ही द्व्यणुकादिकनका संयोग है औ वायुका सं
योग है यातें द्व्यणुक वायु संयोगसंबंधसें स्तंभवृत्ति हैं तिनका उपलंभ होवैनहीं औ समवायसंबंधसें गुरुत्वादिक अप्रत्यक्ष गुण
रहैहैं तिनका स्तंभमें उपलंभ होवैनहीं यातें स्तंभमें संयोगसंबंधतें वा समवायसंबंधतें पिशाचके आरोपतें ताके उपलंभका
आरोप होवैनहीं यातें स्तंभमें संयोगसंबंधावछिन्नपिशाचात्यंताभाव औ समवायसंबंधावछिन्नपिशाचात्यंताभाव अप्रत्यक्ष है
यद्यपि जहां तादात्म्यसंबंधसें पिशाच होवै तहां पिशाचका नियमतें उपलंभ होवैनहीं काहेतें तादात्म्यसंबंधसें पिशाचमें पिशा
च है औ उपलंभ होवैनहीं यातें तादात्म्यसंबंधसें पिशाचके आरोपतें वी नियमतें पिशाचोपलंभका आरोप संभवैनहीं अत्यंताभा
वकी रीति ही अन्योन्याभावमें है तथापि अन्यप्रकारसें भेद है स्तंभमें जो तादात्म्यसंबंधसें होवै ताका नियमतें उपलंभ होवै है स्तं
भमें तादात्म्यसंबंधसें स्तंभ है अन्य नहीं औ स्तंभका नियमतें उपलंभ होवै है जो और कोई पदार्थ स्तंभमें तादात्म्यसंबंधसें रहे
तौ स्तंभकी नांई ताका वी उपलंभ चाहिये यातें तादात्म्यसंबंधसें स्तंभमें पिशाचके आरोपतें ताके उपलंभका नियमतें आरोप होवैहै
यदि तादात्म्येन पिशाचः स्तंभः स्यात्तदा तस्यं स्तंभस्येव उपलंभः स्यात् इसरीतिसें स्तंभमें तादात्म्यसें पिशाचके आरोपतें पिशाचो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पलंभकाआरोपहोवैहै यातैंस्तंभमैंपिशाचभेदप्रत्यक्षहै तिसीस्तंभमैंपिशाचवत्काभेदअप्रत्यक्षहै काहेतैंयदितादात्म्येनस्तं
भः पिशाचवान्स्यात्तदापिशाचवत्वेनस्तंभस्योपलंभःस्यात् इसरीतिसैंस्तंभमैंतादात्म्यसैंपिशाचवत्केआरोपतैंपिशाचवत्के
उपलंभकाआरोपसंभवैनहीं काहेतैंपिशाचवत्वृक्षादिकनमैंपिशाचवत्ताकाउपलंभहोवैनहीं यातैंस्तंभमैंपिशाचवत्ताकाभे
दअप्रत्यक्षहै पिशाचकेभेदकीनांईप्रत्यक्षनहीं इसप्रकारसैंबुद्धिमानअनुभवसैंदेखिलेवैप्रतियोगीकेउपलंभकाआरोपज
हांसंभवै सोअभावप्रत्यक्षहोवैहै जैसैंआत्मानियदिसुखंदुःखंवास्यात्तदासुखस्यदुखस्यचउपलंभःस्यात् इसरीतिसैं-
आत्मामैंसुखदुःखकेआरोपतैंतिनकेउपलंभकानियमतैंआरोपहोवैहै काहेतैंकदीबीअज्ञातसुखदुःखहोवैनहीं ज्ञातही
होवैहै यातैंसुखदुःखकाआरोपहुयेतिनकाउपलंभकानियमतैंआरोपहोवैहै यातैंआत्मवृत्तिसुखाभावदुःखाभावप्रत्यक्षहै औरआ
त्मानिधर्मोयदिस्यात् अधर्मोवास्यात्तदानस्यउपलंभःस्यात् इसरीतिसैंधर्माधर्मकेआरोपतैंतिनकेउपलंभकाआरोपहोवैनहीं
काहेतैंप्रत्यक्षज्ञानकूंउपलंभकहैहै यद्यपिज्ञानप्रतीतिउपलंभयेशब्दपर्यायहैं यातैंज्ञानमात्रकानामउपलंभहै तथापिइस
प्रसंगमैंजाइंद्रियतैंअभावकाप्रत्यक्षहोवै ताइंद्रियजन्यज्ञानकाउपलंभशब्दसैंग्रहणजानना जैसैंसुखाभावकामनसैंप्रत्य
क्षहोवैहै तहांसुखकेआरोपतैंसुखकेउपलंभकाआरोपकहियेमानसप्रत्यक्षकाआरोपहोवैहै तैसैंवायुमैंरूपाभावका-
चाक्षुषप्रत्यक्षहोवैहै तहांरूपकेआरोपतैंताकेउपलंभकाआरोपकहियेचाक्षुषप्रत्यक्षकाआरोपहोवैहै इसरीतिसैंअन्य
इंद्रियतैंजहांअभावकाप्रत्यक्षहोवै तहांअन्यइंद्रियजन्यप्रत्यक्षहीउपलंभशब्दकाअर्थजाणना औधर्मअधर्मकेवलशास्त्र २८
वेद्यहैं तिनकाउपलंभइंद्रियजन्यज्ञानकदीबीहोवैनहीं यातैंधर्मअधर्मकेआरोपतैंतिनकेउपलंभकाआरोपहोवैनहीं या-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तैं धर्माभाव अधर्माभाव प्रत्यक्ष नहीं तैसैं वायुमैं गुरुत्वात्यंताभाव प्रत्यक्ष नहीं औ वायुमैं रूपात्यंताभाव प्रत्यक्ष है काहेतैं वायुमैं जो गुरुत्व होता तौ ताका उपलंभ होता इसरीतिसैं गुरुत्वके आरोपतैं गुरुत्वके उपलंभका आरोप होवै नहीं काहेतैं जहां पृथिवीजलमैं गुरुत्व है तहांबी गुरुत्वका प्रत्यक्षरूप उपलंभ होवै नहीं किंतु अनुमितिज्ञान गुरुत्वका होवै है यातैं गुरुत्वके आरोपतैं उपलंभका आरोप होवै नहीं इस कारणतैं वायुमैं गुरुत्वाभाव प्रत्यक्ष नहीं औ जो वायुमैं रूप होता तौ घटरूपकी न्याईं वायुरूपका उपलंभ होता केवलरूपका ही उपलंभ नहीं होता वायुकाबी उपलंभ होता काहेतैं जा द्रव्यमैं महत्व गुण होवै औ उद्भूतरूप होवै सो द्रव्य प्रत्यक्ष होवै है औ जा द्रव्यमैं महत्व होवै ताका रूप प्रत्यक्ष होवै है परमाणु द्व्यणुकमैं महत्व न होनै तिनका रूप प्रत्यक्ष नहीं यातैं त्र्यणुकादिरूप वायुमैं महत्व है तामैं रूप होता तौ त्र्यणुकादिरूप वायुका प्रत्यक्ष होता औ ताके रूपकाबी प्रत्यक्ष होता इसरीतिसैं परमाणु द्व्यणुकरूप वायुकूं त्यागिकै त्र्यणुकादिरूप वायुमैं रूपके आरोपतैं रूपके उपलंभका आरोप होवै है यातैं त्र्यणुकादिरूप वायुमैं रूपाभाव प्रत्यक्ष है परमाणु द्व्यणुकरूप वायुमैं रूपका आरोप हुयेबी महत्वके नहीं होनैतैं रूपके उपलंभके आरोपके नहीं होनैतैं परमाणु द्व्यणुक वायुमैं रूपाभाव प्रत्यक्ष नहीं तैसैं जल परमाणुमैं पृथिवीत्वाभाव प्रत्यक्ष नहीं काहेतैं जल परमाणुमैं पृथिवीत्व होवै तौ ताका उपलंभ होवै इसरीतिसैं पृथिवीत्वके आरोपतैं पृथिवीत्वके उपलंभका आरोप होवै नहीं काहेतैं आश्रय प्रत्यक्ष होवै तौ जातिका प्रत्यक्ष होवै यातैं जल परमाणुमैं जलत्व है जैसैं जलत्वका प्रत्यक्ष नहीं तैसैं आरोपित पृथिवीत्वके उपलंभका आरोप संभवै नहीं यातैं जल परमाणुमैं पृथिवीत्वका अभाव प्रत्यक्ष नहीं औ परमाणुमैं महत्वका अभाव प्रत्यक्ष है काहेतैं परमाणुमैं चाक्षुष प्रत्यक्षकी सामग्री उद्भूतरूप है औ त्वाच प्रत्यक्षकी सामग्री उद्भूतस्पर्शबी है परंतु महत्व नहीं है यातैं परमाणुका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1534

प्रत्यक्षहोवैनहीं औपरमाणुकेप्रत्यक्षयोग्यरूपादिकगुणनकावीमहत्वाभावतैंप्रत्यक्षहोवैनहीं महत्ववालेद्रव्यकेरूपादिकगुणप्रत्यक्षहोवैहै जोपरमाणुमैंमहत्वहोतातौपरमाणुकाप्रत्यक्षहोताऔपरमाणुकेप्रत्यक्षयोग्यगुणनकावीप्रत्यक्षहोता घटादिकनकामहत्वप्रत्यक्षहै यातेंरूपादिकनकीनांईमहत्वगुणवीप्रत्यक्षयोग्यहै आकाशादिकनमैंमहत्वतोहै परंतुउद्भूतरूपसमानाधिकरणमहत्वकाप्रत्यक्षहोवैहै आकाशादिकनमैंउद्भूतरूपहैनहीं यातेंतिनकेमहत्वकाप्रत्यक्षहोवैनहीं तथापिमहत्वगुणप्रत्यक्षयोग्यहै इसरीतिसैंपरमाणुमैंमहत्वविनाअन्यसामग्रीप्रत्यक्षकीहै जोमहत्वहोतातौपरमाणुऔताकेगुणनकाप्रत्यक्षहोता यातेंपरमाणुमैंमहत्वकेआरोपतैंताकेउपलंभकाआरोपसंभवैहै महत्वकेआरोपतैंकेवलमहत्वकेउपलंभकाआरोपनहींहोवैहै किंतुपरमाणुकेउपलंभकाऔपरमाणुमैंसमवेतप्रत्यक्षयोग्यगुणादिकनकेउपलंभकाआरोपहोवैहै जोपरमाणुमैंमहत्वहोवैतौपरमाणुकाउपलंभहोवै औपरमाणुमैंसमवेतप्रत्यक्षयोग्यगुणनकावीउपलंभहोवै औप्रत्यक्षयोग्यजातिकातथाक्रियाकावीउपलंभहोवैसोपरमाणुआदिकनकाउपलंभनहीं यातेंपरमाणुमैंमहत्वनहीं इसरीतिसैंपरमाणुमैंमहत्वाभावप्रत्यक्षहै इसरीतिसैंजिसअधिकरणमैंजाअभावकेप्रतियोगीकेआरोपतैंउपलंभकाआरोपहोवैतिसअधिकरणमैंसोअभावप्रत्यक्षहै परंतुजिसइंद्रियजन्यउपलंभकाआरोपहोवैतिसइंद्रियतैंअभावकाप्रत्यक्षहोवैहै जैसैंभूतलमैंघटहोवैतोनेत्रसैंघटकाउपलंभहुयाचाहिये उपलंभहोवैनहीं यातैंघटनहीं इसरीतिसैंजहांनेत्रजन्यउपलंभकाआरोपहोवै तहांघटाभावकाचाक्षुषप्रत्यक्षहोवैहै औभूतलमैंघटहोवैतौत्वक्इंद्रियतैंघटकाउपलंभहुयाचाहियेइसरीतिसैं अंधकूंअथवाअंधकार २९
मैंत्वक्इंद्रियजन्यउपलंभकाआरोपहोवैतहांघटाभावकात्वाचप्रत्यक्षहोवैहै इसरीतिसैंजिसइंद्रियकेउपलंभकाआरोपहोवैति

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1535

प्रत्यक्ष होवै नहीं औ परमाणुमें महत्त्व होता तो घ्यणुकमहत्त्वकी नांई नेत्रसें ताका उपलंभ होता इसरीतिसें चाक्षुषउपलंभका आरो
पहोवैहै ताका उपलंभ का नहीं आत्मामें सुखाभावादिकनका मानसप्रत्यक्षही होवैहै काहेतें आत्मामें सुख होता तो मनसें सुख-
का उपलंभ होता इसकालमें सुखका उपलंभ होवै नहीं यातें इसकालमें मेरे विषे सुख नहीं इसरीतिसें आत्मामें सुखके आरोपतें
ताके मानसउपलंभका आरोप होवैहै यातें सुखाभावका मानसप्रत्यक्ष होवैहै तैसें दुःखाभाव इच्छाभाव द्वेषाभावका बी मानसप्र
त्यक्ष होवैहै परंतु अपने सुखादिकनके अभाव प्रत्यक्ष है परसुखादिकनके अभाव प्रत्यक्ष नहीं किंतु शब्दादिकनसें तिनका परोक्ष
ज्ञान होवैहै काहेतें अन्यकूं सुखादिक हुयेंबी तिनका उपलंभ दूजेकूं होवै नहीं यातें अन्यमें सुख होता तो मेरेकूं उपलंभ होता इसरी
तिसें अन्यवृत्तिसुखादिकनका आपकूं उपलंभका आरोप होवै नहीं यातें अन्यवृत्तिसुखादिकनका अभाव प्रत्यक्ष नहीं इसरीतिसें
प्रतियोगीके आरोपतें जहां उपलंभका आरोप होवै सो अभाव प्रत्यक्ष है ऐसे उपलंभका अभावरूप अनुपलंभकूं योग्यानुपलंभ
कहैहैं यातें प्रतियोगीके आरोपतें जिसउपलंभका आरोप होवै सो उपलंभ जाका प्रतियोगी होवै ताकूं योग्यानुपलंभ कहैहै या अ
र्थमें कोई दोष नहीं इसरीतिसें जा अधिकरणमें जिसपदार्थका इंद्रियजन्य आरोपित उपलंभ संभवै तिसअधिकरणमें ताका अ
भाव प्रत्यक्ष है एकही पिशाचका भेद स्तंभमें प्रत्यक्ष है औ परमाणुमें अप्रत्यक्ष है यातें जिसअधिकरणमें कह्या जिसपदार्थका
इंद्रियजन्य आरोपित उपलंभ संभवै तिसके अभावकूं प्रत्यक्ष कहनेतें तौ पिशाचका इंद्रियजन्य आरोपित उपलंभ बी स्तंभमें होवै
है परमाणुमें बी पिशाचका भेद प्रत्यक्ष होवैगा यातें अधिकरणका नाम लेके कह्या है स्तंभ अधिकरणमें उपलंभका आरोप तो होवै
है स्तंभमें ही पिशाचभेद प्रत्यक्ष है औ परमाणुमें तादात्म्यसंबंधसें पिशाच हुयां बी परमाणुकी नांई ताका उपलंभ संभवै नहीं यातें

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सीइंद्रियसैंअभावकाप्रत्यक्षहोवैहै वायुमेंरूपाभावकाचाक्षुषप्रत्यक्षहोवैहै ताचप्रत्यक्षहोवैनहीं काहेतैंवायुमेंरूपहोतातौरूपका
नेत्रइंद्रियजन्यउपलंभहोता औउपलंभहोवैनहीं यातैंवायुमेंरूपनहीं इसरीतिसैंनेत्रइंद्रियजन्यरूपोपलंभकाआरोपहोवैहै औ
वायुमेंरूपहोतातोत्वक्सैंताकाउपलंभहोता इसरीतिसैंत्वक्इंद्रियजन्यरूपोपलंभकाआरोपहोवैनहीं काहेतैंरूपसाक्षात्कारकाहेतु
केवलनेत्रहै त्वक्नहीं तैसेंरसनादिइंद्रियजन्यरूपोपलंभकाआरोपबीहोवैनहीं यातैंरूपाभावकाचाक्षुषप्रत्यक्षहीहोवैहै तैसेंम
धुरद्रव्यमेंतिक्तरसाभावकारासनप्रत्यक्षहीहोवैहै काहेतैंसितामेंतिक्तरसहोतातोताकारसनइंद्रियतैंउपलंभहोता औउपलं
भहोवैनहीं यातैंसितामेंतिक्तरसनहीं इसरीतिसैं सितामेंतिक्तरसकेआरोपतैंरसनजन्यतिक्तरसोपलंभकाआरोपहोवैहै अन्य
इंद्रियजन्यउपलंभकाआरोपहोवैनहीं यातैंरसनेंद्रियजन्यहीरसाभावकाप्रत्यक्षहोवैहै तैसेंस्पर्शाभावकाप्रत्यक्षत्वक्जन्यहीहो
वैहै काहेतैंअग्निमेंशीतस्पर्शहोतातोताकात्वक्इंद्रियतैंउपलंभहोता औअग्निमेंशीतस्पर्शकात्वक्सैंउपलंभहोवैनहीं इसरीति
सैंअग्निमेंशीतस्पर्शकेआरोपतैंत्वक्जन्यउपलंभकाआरोपहोवैहै यातैंस्पर्शाभावकाप्रत्यक्षकेवलत्वक्जन्यहोवैहै तैसेंपरमा
णुमेंमहत्वाभावकाचाक्षुषप्रत्यक्षहीहोवैहै काहेतैंपरमाणकाभेदमहत्वहै औपरिमाणगुणकाज्ञानचक्षुऔत्वचादोनूंसैंहोवैहै
यहअनुभवसिद्धहै घटकाछोटापनाबडापनानेत्रसैं औत्वचासैंजानियेहै यातैंदोनूंइंद्रियकाविषयमहत्वहै तथापिअपकृष्टतम
महत्वकात्वचासैंज्ञानहोवैतो अणुकेमहत्वकात्वचासैंज्ञानहुयाचाहिये यातैंअपकृष्टतममहत्वकाकेवलनेत्रसैंज्ञानहोवैहै औ
परमाणुमेंबीअपकृष्टतममहत्वकाहीआरोपहोवैगा ताअपकृष्टतममहत्वकात्वाचप्रत्यक्षतौहोवैनहीं चाक्षुषप्रत्यक्षहोवैहै
यातैंपरमाणुमेंमहत्वकेआरोपतैंनेत्रजन्यउपलंभकाहीआरोपहोतैंपरमाणुमेंमहत्वाभावकाचाक्षुषप्रत्यक्षहोवैहै औवैं

1536

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1537

परमाणुमेंपिशाचभेदप्रत्यक्षनहीं औजिसपदार्थकाऐसाकहनेंतें वायुमें रूपात्यंताभावकीनांई गुरुत्वात्यंताभावप्रत्यक्षहोवेनहीं जोजिस
अधिकरणमेंइंद्रियजन्यआरोपितउपलंभसंभवेतिसअधिकरणमेंअभावप्रत्यक्षहै इतनाहींकहेंतौवायुअधिकरणमेंरूपकाइंद्रिय
जन्यआरोपितउपलंभसंभवेहै गुरुत्वाभावबीप्रत्यक्षहोवेगा यातेंजिसपदार्थकाउपलंभसंभवेताकाअभावप्रत्यक्षकह्या यातेंरू
पकेआरोपितउपलंभसेंवायुमेंगुरुत्वकाअभावप्रत्यक्षहोवेनहीं इसरीतिसेंजहांप्रतियोगीकाजाइंद्रियजन्यआरोपितउपलंभहो
वेतिसइंद्रियतेंअभावकाप्रत्यक्षहोवेहै औजहांउक्तरीतिसेंउपलंभनहींसंभवे तहांअभावकापरोक्षज्ञानहोवेहै यहनैयायिकमत
है उक्तरीतिसेंन्यायमतमेंअभावकेप्रत्यक्षमेंइंद्रियकरणहै इंद्रियमेंविशेषणताऔइंद्रियसंबद्धमेंविशेषणताअभावमेंइंद्रियका
संबंधहै सोव्यापारहै अभावकीप्रत्यक्षप्रमाफलहै औयोग्यानुपलंभइंद्रियकासहकारीकारणहै करणनहीं जैसेंघटादिकनके
चाक्षुषप्रत्यक्षमेंआलोकसंयोगसहकारीकारणहै औनेत्रइंद्रियकरणहै तैसेंअभावकेप्रत्यक्षमेंबीयोग्यानुपलंभसहकारीहै औ
अभावकेचाक्षुषप्रत्यक्षमेंबीआलोकसंयोगसहकारीनहीं यद्यपिअंधकारमेंघटाभावकातौप्रत्यक्षहोवेहै चाक्षुषप्रत्यक्षहो
वेनहीं आलोकमेंघटाभावकाचाक्षुषप्रत्यक्षहोवेहै यातेंअभावकेचाक्षुषप्रत्यक्षमेंअन्वयव्यतिरेकतेंआलोकसंयोगबीसह
कारीकह्याचाहिये तथापिघटमेंकुलालपिताकीनांईअभावकेचाक्षुषप्रत्यक्षमेंआलोकसंयोगअन्यथासिद्धहै जैसेंघटकेकार
णकुलालकीसिद्धिकरिकेकुलालकापिताकारणसामग्रीतेंबाह्यरहेहै घटकाकारणनहींकहियेहै किंतुघटकेकारणकाकारणहै तै
सेंअभावकेप्रत्यक्षकासहकारीकारणयोग्यानुपलंभहै ताकीसिद्धिकरिकेअभावप्रत्यक्षकीकारणसामग्रीतेंआलोकसंयोगबाह्यरहैहै
काहेतेंअनुपलंभकाप्रतियोगीजोउपलंभताकाजहांआरोपसंभवेसोअनुपलंभयोग्यकहियेहै घटकेचाक्षुषउपलंभकाआरोप

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1538

आलोकमेंहोवेहै अंधकारमेंचाक्षुषउपलंभकाआरोपहोवैनहीं यातेंघटाभावकेचाक्षुषप्रत्यक्षकासहकारीकारणजोयोग्यानुपलं
भताकासाधकआलोकहै घटाभावकेचाक्षुषप्रत्यक्षकासाक्षात्कारणनहींहोनेतेंकारणसामग्रीतेंबाह्यहै यातेंकुलालपिताकीनांईअ
न्यथासिद्धहै जैसेंकुलालपिताघटकाकारणनहीं तैसेंआलोकसंयोगवीअभावकेचाक्षुषप्रत्यक्षकाकारणनहीं किंतुचाक्षुषप्रत्यक्ष-
काकारणजोयोग्यानुपलंभताकाउक्तरीतिसेंसाधकहै औप्राचीनग्रंथनमेंतो योग्यानुपलंभ इसरीतिसेंकह्याहै जहांप्रतियोगी
विनाप्रतियोगीकेउपलंभकीसकलसामग्रीहोवेऔउपलंभहोवेनहीं तहांयोग्यानुपलंभहै जैसेंआलोकमेंघटनहीं तहांयोग्या
नुपलंभहै काहेतें घटाभावकाप्रतियोगीघटनहींहै ताविनाआलोकसंयोगद्रष्टाकेनेत्ररूपघटकेचाक्षुषउपलंभकीसामग्रीहोने
तेंयोग्यानुपलंभहै औअंधकारमेंजहांघटनहीं तहांयोग्यानुपलंभनहीं काहेतें प्रतियोगीकेचाक्षुषउपलंभकीसामग्रीमेंआ
लोकसंयोगहै ताकाअभावहै तैसेंस्तंभमेंतादात्म्यसंबंधसेंजोरहै ताकेउपलंभकीसामग्रीस्तंभवृत्तिउद्भूतरूपमहत्वहै या
तेंस्तंभमेंतादात्म्यसंबंधसेंपिशाचकाअनुपलंभयोग्यहै औसंयोगसंबंधसेंजोस्तंभवृत्ति होवेताकेउपलंभकीसामग्रीस्तंभ
केउद्भूतरूपऔमहत्वनहींहै किंतुसंयोगसंबंधसेंरहनेवालेमेंउद्भूतरूपमहत्वचाहिये सोपिशाचमेंहैनहीं यातेंसंयोगसं
बंधावछिन्नपिशाचात्यंताभावकाप्रतियोगीजोपिशाच ताकेउपलंभकीसामग्रीपिशाचवृत्तिउद्भूतरूपकेअभावतेंसंयोगसं
बंधसेंपिशाचकाअनुपलंभयोग्यनहीं इसरीतिसें प्रतियोगीविनाप्रतियोगीकेउपलंभकीसकलसामग्रीहुयांउपलंभनहीं
होवे सोयोग्यानुपलंभअभावकेप्रत्यक्षकासहकारीकारणहै इसरीतिसेंजहांयोग्यानुपलंभहोवे औइंद्रियकाअभावतेंसं ३१
बंधहोवे तहांइंद्रियजन्यप्रत्यक्षप्रमाअभावकीहोवेहै जहांयोग्यानुपलंभनहींहोवे तहांअभावकाप्रत्यक्षज्ञानहोवेनहीं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

किंतु अनुमानादिकनतें परोक्षज्ञान होवेंहै नैयायिकरीतिसें अभावप्रत्यक्षमें योग्यानुपलंभसहकारीहै इंद्रियकरणहैं औ भ
ट्टमतमें तथा अद्वैतमतमें योग्यानुपलंभही करणहै अभावज्ञानमें इंद्रियकूं करणता नहीं इसीवास्तें अनुपलब्धिनामभिन्नप्र
माण भट्टनें मान्याहै तिसके अनुसारीही अद्वैतग्रंथनमें वी अभावप्रत्यक्षकाहेतु अनुपलब्धिनामभिन्नप्रमाणही लिख्याहै अनु
पलंभकूंही अनुपलब्धि कहेंहैं जैसा योग्यानुपलंभ नैयायिकनें सहकारी मान्याहै तैसाही योग्यानुपलंभ भट्टमत अद्वैतमतमें
प्रमाणहै नैयायिकमतमें अभावप्रत्यक्षके कारण इंद्रिय औ योग्यानुपलंभ दोनूं हैं तिनमें इंद्रियतो करणहैं यातें अभावप्र
मामें प्रमाणहै औ अनुपलंभकूं अभावप्रमाकी सहकारीकारणता मानें हैं करणता नहीं मानें है यातें अनुपलंभ प्रमाण नहीं
औ भट्टादिमतमें अनुपलब्धिही प्रमाणहै यद्यपि अभावप्रमाकी उत्पत्तिमें अनुपलब्धिका व्यापार कोई संभवे नहीं औ व्यापारवाला-
जो प्रमाका कारण सो प्रमाण कहियेहै यातें अनुपलब्धिकूं प्रमाणता संभवे नहीं तथापि व्यापारवाले प्रमाके कारणकूंही प्रमाणता होवे
है यह नियम वी नैयायिकमतमें है औ भट्टादिकनके मतमें तो सकल प्रमाणोंके भिन्नभिन्न लक्षण हैं किसीके लक्षणमें व्यापारका
प्रवेश है किसी प्रमाणके लक्षणमें व्यापारका प्रवेश नहीं है जैसें प्रत्यक्षप्रमाका व्यापारवाला असाधारण कारण प्रत्यक्षप्रमाण क
हियेहै अनुमितिप्रमाका व्यापारवाला असाधारण कारण अनुमान कहियेहै शाब्दीप्रमाका व्यापारवाला असाधारण कारण शब्दप्रमा
ण कहियेहै इसरीतिसें तीनि प्रमाणोंके लक्षणमें तो व्यापारका प्रवेश है औ तिन्ह प्रमाणोंके निरूपणमें तीन्योंस्थानमें व्यापारका संभव
कहि आये औ उपमान अर्थापति उपलब्धि इनके लक्षणमें व्यापारका प्रवेश नहीं उपमितिके असाधारण कारणकूं उपमान प्रमाण कहेंहैं उ
पपादककल्पनाका असाधारण हेतु उपपाद्यकी अनुपपत्तिका ज्ञान अर्थापतिप्रमाण कहियेहै अभावकी प्रमाका असाधारणकारण अ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नुपलब्धिप्रमाणकहियेहै यद्यपिअभावकापरोक्षज्ञानबीअनुमानादिकनतें होवैहै यहपूर्वकहीहै यातें अनुपलब्धिकेलक्षणकीअभा
वज्ञानकेजनकअनुमानादिकनमें अतिव्याप्तिहोवैहै तथापिअनुमानादिकप्रमाणभावकीप्रमाकेऔअभावकीप्रमाकेसाधारणकारणहैं
अभावकीप्रमाकेअसाधारणकारणनहीं औअनुपलब्धिसेंकेवलअभावकाहीज्ञानहोवैहै यातें अभावप्रमाकाअसाधारणअनुपलब्धि
प्रमाणहै अन्यनहीं इसरीतिसें तीनीप्रमाणोंकेलक्षणमेंव्यापारकाप्रवेशनहीं यातें व्यापारकीअपेक्षातीनिप्रमाणोंमेंनहीं अनुप
लब्धिप्रमाणसें अभावकाज्ञानहोवैसोतोप्रत्यक्षहोवैहै औअनुमानसें तथाशब्दसें जोअभावकाज्ञानसोपरोक्षहोवैहै जितनेस्था
नोंमें नैयायिकइंद्रियजन्यअभावकाज्ञानकहैहैं उतनेंज्ञानहीअनुपलब्धिप्रमाणजन्यहैं काहेतें नैयायिकमतमेंबीअभाव-
ज्ञानकासहकारीकारणअनुपलब्धिहै जैसीयोग्यानुपलब्धिकूं नैयायिकइंद्रियकासहकारीमानैहैं सोईयोग्यानुपलब्धिभट्टा
दिमतमें स्वतंत्रप्रमाणतें विनाहीभेदहै नैयायिकमतमें तोअभावप्रमाकाप्रमाणइंद्रियहै वेदांतमतमें प्रमाणअनुपलब्धिहै औवेदांत
मतमें अनुपलब्धीप्रमाणजन्यअभावकाज्ञानबीनैयायिकमतकीनांईप्रत्यक्षहै परोक्षनहीं इहां ऐसीशंकाहोवैहै इंद्रियजन्यज्ञानहीप्रत्यक्ष
होवैहै अभावज्ञानकूंइंद्रियजन्यताकानिषेधकरिकेप्रत्यक्षताकहनावनैनहीं ताकायहसमाधानहै इंद्रियजन्यज्ञानहीप्रत्यक्षहोवै
तोईश्वरकाज्ञानप्रत्यक्षनहींचाहिये काहेतें न्यायमतमें तोईश्वरकाज्ञाननित्यहै यातें इंद्रियजन्यनहीं औवेदांतमतमें ईश्वरकाज्ञानमा
याकीवृत्तिरूपहै इंद्रियजन्यनहीं औरग्रंथनमें इंद्रियजन्यज्ञानकूंप्रत्यक्षताकहनेमें अनेकदूषणलिखेहैं यातें इंद्रियजन्यज्ञानहीप्र
त्यक्षहोवै यहनियमनहींहै किंतुप्रमाणचेतनसें विषयचेतनकाअभेदहोवै सोज्ञानप्रत्यक्षहोवैहै जहांविषयसन्मुखहोवै तहांकहूंतो ३२
इंद्रियविषयकेसंबंधतें इंद्रियद्वाराअंतःकरणकीवृत्तिघटदेशमेंजावैहै जायकेघटकेसमानाकारहोयकेघटसेंवृत्तिमिलैहै तहांवृत्ति-

1540

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अवछिन्न चेतन प्रमाणचेतन कहियेहै विषयमें आया चेतन विषयचेतन कहियेहै प्रमाणचेतन औ विषयचेतन स्वरूपसें तो सदा एकहीहै उपाधिभेदसें चेतनका भेद होवैहै उपाधि वी भिन्नदेशमें होवै तो उपहितका भेद होवैहै एकदेशमें होवै तो उपहितका भेद होवै नहीं जैसें घटका रूप औ घट एकदेशमें होवैहै तहां घटरूपोपहित आकाश औ घटोपहित आकाश एकही है औ मठके अंतर घट होवै तहां घटोपहित आकाश मठाकाशतें भिन्न नहीं यद्यपि मठाकाश तो घटाकाशतें भिन्न वी है काहेतें घटशून्यदेशमें वी मठ है तथापि मठशून्यदेशमें घट नहीं यातें मठाकाशतें घटाकाश भिन्न नहीं इसरीतिसें वृत्ति औ विषय भिन्नदेशमें रहैं इतने तो वृत्तिउपहितचेतन औ विषयउपहितचेतन भिन्न होवैहै औ वृत्ति विषयदेशमें होवै तब विषयचेतन वी वृत्तिचेतन होवैहै यातें विषयचेतनका वृत्तिचेतनसें भेद रहै नहीं किंतु अभेद होवैहै यद्यपि विषयदेशमें वृत्ति जावै तब द्रष्टाके शरीरके अंतर अंतःकरणसें लेके विषयपर्यंत वृत्तिका आकार होवैहै यातें विषयदेशतें बाह्य वी वृत्तिका स्वरूप होनेतें विषयचेतनसें भिन्न वी वृत्तिचेतन है तथापि तिसकालमें वृत्तिसें भिन्नदेशमें विषय नहीं यातें विषयचेतनका वृत्तिचेतनसें अभेद कहै हैं औ जो दोनूंका परस्पर अभेद कहूं लिख्या होवै तो ताका अभिप्राय यह है जितना वृत्तिभाग घटदेशमें है उतना वृत्तिभागसें उपहितचेतन घटचेतनसें पृथक् नहीं इसरीतिसें जहां विषयचेतनका वृत्तिचेतनसें अभेद होवै सो ज्ञान प्रत्यक्ष कहियेहै जहां विषयचेतनका वृत्तिचेतनसें अभेद नहीं होवै सो ज्ञान परोक्ष कहियेहैं संस्कारजन्य स्मरणरूप अंतःकरणकी वृत्ति शरीरके अंतरही होवैहै ताका विषय देशांतरमें होवैहै अथवा नष्ट होय जावैहै यातें विषयचेतनका वृत्तिचेतनसें अभेद नहीं होनेतें स्मृतिज्ञान परोक्षहै औ जिसपदार्थके पूर्व अनुभवके संस्कार होवै औ इंद्रियका संयोग होवै तहां सोयं ऐसा ज्ञान होवैहै ताकूं प्रत्यभिज्ञा कहैहैं तहां वी इंद्रियजन्य वृत्ति विषयदेशमें जावैहै यातें विषयचेतनका वृत्तिचेतनसें अभेद होनेतें प्रत्यभिज्ञा

1541

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ज्ञानवी प्रत्यक्षही होवैहै केवलइंद्रियजन्यवृत्ति होवे तहां अयं ऐसा प्रत्यक्ष होवैहै ताकूं अभिज्ञाप्रत्यक्ष कहेहैं औ मुख्यसिद्धांतमें तो
पूर्वअनुभूतका सोयं यह ज्ञानवी तत्ता अंशमें स्मृतिरूप होनेतें परोक्षहै अयं अंशमें प्रत्यक्षहै यातें सोयं इस ज्ञानमें केवलप्रत्यक्ष
त्वनहीं किंतु अंसभेदसें परोक्षत्वप्रत्यक्षत्वदोधर्महैं केवलसंस्कारजन्यवृत्ति होवे ताका सः ऐसा आकार होवैहै ताकूं स्मृति कहे
हैं जा पदार्थका पूर्व इंद्रियतें अथवा अनुमानादिकनतें ज्ञान हुया होवे ताकी स्मृति होवैहै यातें स्मृतिज्ञानमें पूर्वअनुभवकारणहै
औ अनुभवजन्यसंस्कार व्यापारहै काहेतें जिस पदार्थका पूर्वज्ञान होवे ताकी वर्षके अंतरायसेंबी स्मृति होवैहै तहां स्मृतिके अव्यवहि
तपूर्वकालमें अनुभव तोहै नहीं औ अव्यवहितपूर्वकालमें होवे सोहेतु होवैहै यातें पूर्वअनुभवस्मृतिका साक्षात्कारण संभवेनहीं
किसीद्वारा कारण कह्याचाहिये यातें ऐसा माननायोग्यहै जा पदार्थका पूर्वअनुभव नहीं हुया ताकी तो स्मृति होवेनहीं जो पूर्वअनु
भवस्मृतिका कारण नहीं होवे तो जाका अनुभव नहीं हुया ताकीबी स्मृति हुईचाहिये औ होवे नहीं इसरीतिसें पूर्वअनुभवसें स्मृति-
का अन्वयव्यतिरेकहै पूर्वअनुभव हुये स्मृति होवैहै यह अन्वयहै पूर्वअनुभव नहीं होवे तो स्मृति होवे नहीं यह व्यतिरेकहै एकके
होनेसें अपरका होना अन्वय कहियेहै एकके नहीं होनेतें अपरका नहीं होना व्यतिरेक कहियेहै अन्वयव्यतिरेकसें कारणकार्यभाव
जानियेहै पूर्वअनुभवस्मृतिके अन्वयव्यतिरेक देषनेतें तिनका कारणकार्यभाव तो अवश्यहै परंतु अव्यवहितपूर्वकालमें पूर्वअनु
भव मिलेनहीं यातें स्मृतिकी उत्पत्तिमें पूर्वअनुभवका कोई व्यापार मान्याचाहिये जहां प्रमाणवलतें कारणताका निश्चय होवे औ
अव्यवहितपूर्वकालमें कारणकी सत्ता संभवे नहीं तहां व्यापारकी कल्पना होवैहै जैसें शास्त्ररूपी प्रमाणतें स्वर्गकी साधनता का याग ३३
में निश्चय होवैहै औ अंत्य आहुतिकूं याग कहेहैं तिस यागके नाश हुये बहुतकालके अंतरायतें स्वर्ग होवैहै सुखविशेषकूं स्वर्ग

1342

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कहेहैं स्वर्गकै अव्यवहितपूर्वकालमें यागके अभावतें कारणता यागकूं संभवे नहीं यातें शास्त्रसें निर्णीत कारणताके निर्वाहवास्तें यागका
व्यापार अपूर्व मानेंहै जब अपूर्व अंगीकार कियातब दोष नहीं काहेतें कार्यके अव्यवहितपूर्वकालमें कारण अथवा व्यापार एक चाहि
येकहूं दोनूं वी होवेंहैं परंतु एक अवश्य चाहिये जिसकूं धर्म कहेहैं सो यागजन्य अपूर्व है यागसें अपूर्व उत्पन्न होवेहै औ यागजन्य जो स्व
र्गताका जनक है यातें व्यापार है जैसें यागकूं स्वर्गसाधनताके निर्वाहवास्तें अपूर्व व्यापार मानियेहै सो अपूर्व सदा परोक्ष है तैसें अ
न्वयव्यतिरेक बलतें सिद्ध जो पूर्व अनुभव ताकूं स्मृतिकी कारणताके निर्वाहवास्तें संस्कार मानियेहैं सो संस्कार सदा परोक्ष है जा अंतः
करणमें पूर्व अनुभव होवेहै औ स्मृति होवेगी ता अंतःकरणका धर्म संस्कार है नैयायिकमतमें अनुभव संस्कार स्मृति आत्माके धर्म्म हैं
अनुभवजन्य संस्कारकूं नैयायिक भावना कहेहैं सो संस्कार पूर्व अनुभवजन्य है औ पूर्व अनुभवजन्य जो स्मृति ताका जनक है यातें
व्यापार कहियेहै इसरीतिसें पूर्व अनुभव स्मृतिका कारण है संस्कार व्यापार है स्मृतिकी उत्पत्तिसें अव्यवहितपूर्वकालमें पूर्व अनुभ
वका तो नाश होनेतें अभाव है तथापि ताका व्यापार संस्कार है यातें पूर्व अनुभवके नाश हुयांवी स्मृति उपजेहै सो संस्कार प्रत्यक्ष तो है न
हीं अनुमान अथवा अर्थापत्तिसें संस्कारकी सिद्धि होवेहै यातें जितने पूर्व अनुभूतकी स्मृति होवे उतने काल संस्कार रहेहै जा स्मृतिसें
उत्तर स्मृति न होवे सो चरम स्मृति कहियेहै चरम स्मृतिसें संस्कारका नाश होवेहै यातें फेरि तिस पदार्थकी स्मृति होवे नहीं इसरीतिसें
पूर्व अनुभवजन्य संस्कारसें अनेक स्मृति होवेहैं जितनें चरम स्मृति होवे इतनें एकही संस्कार रहेहै स्मृतिमें चरमता कार्यसें जानीजा
वेहै जा स्मृतिके हुयां फेरि सजातीय स्मृति न होवे ता स्मृतिमें चरमताका अनुमानसें ज्ञान होवेहै अंत्यकूं चरम कहेहैं औ कोई ऐसें क
हेहैं पूर्व अनुभवजन्य संस्कारसें प्रथम स्मृति होवेहै औ प्रथम स्मृतिकी उत्पत्तिसें पहले संस्कारका नाश होवेहै स्मृतिसें और संस्कार

1543

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1544

उपजैहै तासैंफेरि सजातीयस्मृतिउपजैहै तास्मृतिसैंस्वजनकसंस्कारकानाशहोवैहै अन्यसंस्कारउपजैहै तासैतृतीयस्मृति
होवैहै इसरीतिसैंस्मृतिसैंवीसंस्कारकीउत्पत्तिहोवैहै जास्मृतिसैंउत्तरसजातीयस्मृतिनहोवैसोस्मृतिसंस्कारकीहेतुनहीहै याम
तमैंसंस्कारद्वारास्मृतिज्ञानवीउत्तरस्मृतिकाकरणहै औप्रथमस्मृतिकाकरणअनुभवहै दोनूंस्थानमैंसंस्कारव्यापारहै औप
हलेमतमैंस्मृतिज्ञानकाकरणस्मृतिनहीं किंतुपूर्वानुभवसैंहीसंस्कारहोवैहै सोएकहीसंस्कारचरमस्मृतिपर्यंतरहैहै यातैंपूर्वानुभ
वहीस्मृतिकाकरणहै औपूर्वानुभवजन्यसंस्कारहीसकलसजातीयस्मृतिमैंव्यापारहै दोनूंपक्षनमैंस्मृतिज्ञानप्रमानहीं काहेतैंप्र
थमपक्षमैंतोस्मृतिज्ञानकाकरणपूर्वानुभवहै सोषट्प्रमाणसैंन्याराहै प्रमाणजन्यज्ञानकूंप्रमाकहैहैं पूर्वानुभवप्रमाणनहीं
द्वितीयपक्षमैंप्रथमस्मृतिकाकरणतोपूर्वानुभवहै औद्वितीयादिस्मृतिकाकरणस्मृतिहै सोस्मृतिवीषट्प्रमाणमैंनहीं यातैं-
स्मृतिकूंप्रमानहींकहैहैं तथापियथार्थअयथार्थभेदसैंस्मृतिदोप्रकारकीहै भ्रमरूपअनुभवकेसंस्कारनसैंउपजैसोअय-
थार्थहै प्रमारूपअनुभवकेसंस्कारनसैंउपजैसोयथार्थहै इसरीतिसैंदोपक्षग्रंथनमैंलिखेहैं तिनमैंदूषणभूषणअनेकहै
ग्रंथविस्तारभयतैंउपरामहोयकै प्रसंगलिखेहैं जैसैंपूर्वअनुभवजन्यस्मृतिज्ञानपरोक्षहै तैसैंअनुमानादिप्रमाणजन्यज्ञा
नवीपरोक्षहै काहेतैंजैसैंस्मृतिकाविषयवृत्तिसैंव्यवहितहोवैहै तैसैंअनुमानादिजन्यज्ञानकाविषयवीवृत्तिदेशमैंहोवैन
हीं किंतुव्यवहितपर्वतादिदेशमैंहोवैहै औअतीतअनागतपदार्थकावीअनुमानादिकनतैं अनुमितिसैंआदिलेकेवर्तमान
ज्ञानहोवैहै यातैंअनुमानादिजन्यज्ञानकेदेशमैं औकालमैंविषयहोवैनहीं किंतुअनुमितिआदिकज्ञाननकेदेशऔकाल ३४
तैंभिन्नदेशऔभिन्नकालमैंतिनकेविषयहोवैहै इंद्रियजन्यज्ञानकेविषयज्ञानकेदेशकालतैंभिन्नदेशभिन्नकालमैंहोवैनहीं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

किंतु ज्ञानके देशकालमें ही होवेहैं यातें इंद्रियजन्यज्ञान सारे प्रत्यक्षही होवेहैं अद्वैतमतमें अंतःकरणका परिणाम जो वृत्ति ताकूं ज्ञान कहैंहैं यातें ज्ञानविषय एकदेशमें होवैं अथवा वृत्तिविषय एकदेशमें होवैं याकहनेमें एकही अर्थहै इंद्रियजन्यज्ञानही प्रत्यक्षहोवै यह नियम नहीं जहां अन्यप्रमाणजन्यवृत्तिदेशमें वी विषय होवै तहां प्रत्यक्षज्ञानही होवेहै जैसें तत्त्वमसि याशब्दसें उत्पन्नहुई वृत्तिके देशमें विषयहै यातें शब्दप्रमाणजन्यज्ञान वी कहूं प्रत्यक्ष होवेहै महावाक्यजन्य ब्रह्माकारवृत्ति औ ब्रह्मात्मा दोनूं एकदेशमें होवेहैं यातें महावाक्यजन्य ब्रह्मात्मज्ञान प्रत्यक्षहै तैसें ईश्वरज्ञानका उपादानकारण मायाके देशमें सर्वपदार्थहैं यातें इंद्रियजन्य नहीं तौ वी ईश्वरका ज्ञान प्रत्यक्षहै तैसें अनुपलब्धिप्रमाणजन्य अभावका ज्ञान वी प्रत्यक्षहै काहेतें जहां भूतलमें घटाभावका ज्ञान होवै तहां भूतलसें नेत्रका संबंध होयके भूतलदेशमें अंतःकरणकी वृत्ति जावैहै भूतले घटो नास्ति ऐसा वृत्तिका आकारहै तहां भूतल अंशमें तौ वृत्ति नेत्रजन्यहै औ घटाभाव अंशमें अनुपलब्धिजन्यहै जैसें पर्वतो वन्हिमान् यह वृत्ति पर्वत अंशमें नेत्रजन्यहै वन्हि अंशमें अनुमानजन्यहै तैसें एकही वृत्ति अंशभेदसें इंद्रिय औ अनुपलब्धि दो प्रमाणसें उपजैहै तहां भूतलावच्छिन्नचेतनका वृत्तिअवच्छिन्नचेतनसें अभेद होवैहै औ भूतलावच्छिन्नचेतनही घटाभावावच्छिन्नचेतनहै यातें घटाभावावच्छिन्नचेतनका वी वृत्तिअवच्छिन्नचेतनसें अभेद होवैहै यातें अनुपलब्धिप्रमाणजन्य वी घटाभावका ज्ञान प्रत्यक्षहै परंतु जहां अभावका अधिकरण प्रत्यक्षयोग्यहै अधिकरणके प्रत्यक्षमें इंद्रियका व्यापार होवैहै तहां उक्तरीतिका संभवहै औ जहां अधिकरणके प्रत्यक्षमें इंद्रियका व्यापार नहीं होवै तहां अनुपलब्धिप्रमाणजन्य अभावका ज्ञान प्रत्यक्ष नहीं किंतु परोक्षहै जैसें वायुमें रूपाभावका योग्यानुपलब्धिसें निमीलितनयनकूं वी ज्ञान होवैहै औ परमाणुमें योग्यानुपल

1545

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1546

ब्धिसैंनेत्रकाउन्मीलनव्यापारविनाहीमहत्त्वाभावकाज्ञान होवैहै तहांविषयदेशमेंवृत्तिजावैनहीं यातैंअनुपलब्धिप्रमाणजन्य वायुमेंरूपाभावकाज्ञान तैसें परमाणुमें महत्त्वाभावकाज्ञानप्रत्यक्ष नहीं परोक्षहै इसरीतिसैं अनुपलब्धिप्रमाणजन्यअभाव काज्ञानकहूंप्रत्यक्षहै कहूंपरोक्षहै औवेदांतपरिभाषादिकग्रंथनमैंअनुपलब्धिप्रमाणजन्यअभावकाप्रत्यक्षलिख्याहै अनुपलब्धिजन्यपरोक्षज्ञानकाउदाहरणनहींलिख्या सोतिनमैंन्यूनताहै लिख्याचाहियेजोपरोक्षकाउदाहरणलिखेविनाअनुपलब्धिजन्यज्ञानपरोक्षहोवैनहीं ऐसाभ्रमहोवैहै औसूक्ष्मदृष्टिसैंविचारकरैतौअनुपलब्धिप्रमाणजन्यअभावकाज्ञानसर्वत्रपरोक्षहै कहूंवीप्रत्यक्षनहीं काहेतैंप्रमाणचेतनसैंविषयचेतनकाअभेदहुयेवीजोप्रत्यक्षयोग्यविषयनहींताकापरोक्षहीज्ञानहोवैहै जैसें शब्दादिकप्रमाणतैंधर्माधर्मकाज्ञानहोवैतवप्रमाणचेतनसैंविषयचेतनकाभेदनहीं काहेतैंअंतःकरणदेशमेंधर्माधर्मरहैहै यातैं अंतःकरणऔधर्माधर्मरूपउपाधिभिन्नदेशमेंनहींहोनेतैंधर्माधर्मावच्छिन्नचेतनप्रमाणचेतनसैंभिन्ननहीं तथापिधर्माधर्मप्रत्यक्षयोग्यनहीं यातैंशब्दादिजन्यधर्माधर्मकाज्ञानकदेवीप्रत्यक्षनहीं अनुभवकेअनुसारविषयमेंयोग्यताअयोग्यताजाणनी जैसेंधर्माधर्मप्रत्यक्षयोग्यनहीं तैसेंअभावपदार्थवीप्रत्यक्षयोग्यनहीं जोअभावपदार्थप्रत्यक्षहोवै तौवादियोंकाविवादनहींहुयाचाहिये मीमांसकअभावकूंअधिकरणरूपमानैहैं नैयायिकादिकअधिकरणसैंभिन्नमानैहैं तैसेंनास्तिकअभावकूंतुछऔअलीकमानैहैं आस्तिकअभावकूंपदार्थमानैहैं इसरीतिसैंअभावकेस्वरूपमेंविवादहै औप्रत्यक्षयोग्यजो घटादिकतिनकेस्वरूपमें अधिकरणसैंभिन्नवानहीं इत्यादिकविवादहोवैनहीं यातैंअभावपदार्थप्रत्यक्षयोग्यनहीं इसकारणतैं जहांभूतलमें घटाभावकाज्ञानहोवै तहांप्रमाणचेतनसैंघटाभावावच्छिन्नचेतनकाअभेदहै तौवीअभावांशमें वहज्ञानपरोक्षहै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1547

भूतलांशमें अपरोक्ष है जैसें पर्वतो वन्हिमान् यह ज्ञान पर्वत अंशमें अपरोक्ष है औ वन्हि अंशमें परोक्ष है इसरीतिसें अनुपलब्धि
प्रमाणजन्य अभावके ज्ञानकूं सर्वत्र परोक्ष मानें तो भट्टसें बी विरोध नहीं भट्टमतमें अनुपलब्धिजन्य अभावका ज्ञान परोक्ष ही है औ
अभावके ज्ञानकूं जो नैयायिक इंद्रियजन्य मानिकै प्रत्यक्ष कहैहैं सो सर्वथा असंगत है काहेतें वायुमें रूपाभावका चाक्षुषप्रत्य
क्ष होवैहै औ परमाणुमें महत्वाभावका चाक्षुषप्रत्यक्ष होवैहै यह नैयायिकनका सिद्धांत है सो बनै नहीं काहेतें वायुमें रूपाभावके
ज्ञानवास्ते कोई बी नेत्रका उन्मीलन व्यापार करै नहीं किंतु निमीलितनेत्रकूं बी वायुमें रूपाभावका योग्यानुपलब्धिसें ज्ञान होवैहै
तैसें परमाणुमें महत्वाभावका ज्ञान बी उन्मीलितनेत्रकी नांई निमीलितनेत्रकूं बी होवैहै औ निमीलितनेत्रकों घटादिकनका चाक्षु
षज्ञान कदी बी होवै नहीं यातें वायुमें रूपाभावका औ परमाणुमें महत्वाभावका चाक्षुषप्रत्यक्ष बनै नहीं किंतु योग्यानुपलब्धिसें ति
नका परोक्षज्ञान होवैहै औ जो नैयायिक कहैहैं अभावज्ञानमें इंद्रियके अन्वयव्यतिरेक देखनेतें अभावज्ञानमें इंद्रिय हेतु है औ
याका जो भेदधिक्कारादिक ग्रंथनमें समाधान लिख्या है इंद्रियका अन्वयव्यतिरेक अधिकरणके ज्ञानमें चरितार्थ है जैसें भूतलसें
घटाभावका ज्ञान होवै तहां नेत्रइंद्रियसें अभावके अधिकरण भूतलका ज्ञान होवैहै ता नेत्रसें ज्ञात भूतलमें घटाभावका योग्यानुपल
ब्धिसें ज्ञान होवैहै इसरीतिसें घटाभावका अधिकरण जो भूतल ताके ज्ञानमें इंद्रिय चरितार्थ कहिये सफल है सो संका औ समाधा
न दोनूं असंगत हैं काहेतें वायुमें रूपाभावका औ परमाणुमें महत्वाभावका नेत्रव्यापारसें विना बी ज्ञान होवैहै यातें किसी अभाव
ज्ञानमें इंद्रियके अन्वयव्यतिरेक हुयें इंद्रियकूं कारणता सिद्ध होवै नहीं सकल अभावके ज्ञानमें इंद्रियका अन्वयव्यतिरेक असिद्ध
हैं इसरीतिसें शिथिलमूल शंकाका समाधानकथन बी असंगत है औ जो नैयायिक इसरीतिसें संका करैं घटानुपलब्ध्या इंद्रि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

येणाभावंनिश्चिनोमिऐसीप्रतीतिहोवैहै यातेंअनुपलब्धिऔइंद्रियदोनूंघटादिकनकेअभावज्ञानकेहेतुहैं याशंकाकाउक्तसमा
धानकरेंघटाभावकेअधिकरणकाज्ञानइंद्रियतेंहोवैहै औघटाभावकाज्ञानअनुपलब्धिसेंहोवैहै सोबीसमाधानसंभवैनहीं का
हेतेंजहांइंद्रिययोग्यअधिकरणहै तहांतोउक्तसमाधानसंभवैहै औजहांअधिकरणइंद्रिययोग्यनहीं तहांउक्तसमाधानसंभवै
नहीं जैसेंवायौरूपानुपलब्ध्यानेत्रेणरूपाभावंनिश्चिनोमि इसरीतिसेंवायुमेंरूपाभावकीअनुपलब्धिजन्यऔनेत्रजन्यप्रतीति
भासैहै तहांवायुकीप्रतीतिनेत्रजन्यहै औरूपाभावकीप्रतीतिअनुपलब्धिजन्यहै यहकहनासंभवैनहीं काहेतेंवायुमेंरूपकेअ
भावतेंनेत्रकीयोग्यतानहीं यातेंअभावज्ञानकूंकेवलअनुपलब्धिजन्यमानेंउभयजन्यताकीप्रतीतिसेंविरोधकाअद्वैतवादीका
यहसमाधानहै भूतलेअनुपलब्ध्यानेत्रेणघटाभावंनिश्चिनोमियाकहनेकाअनुपलब्धिसहितनेत्रतेंभूतलमेंघटाभावकेनि
श्चयवालामेंहूं यहअभिप्रायनहींहै किंतुभूतलमेंइंद्रियजन्यघटकीउपलब्धिकेअभावतेंघटाभावकेनिश्चयवालामेंहूं यहता
त्पर्यहै अभावकेनिश्चयकाहेतुअनुपलब्धिहै औअनुपलब्धिकाप्रतियोगीजोउपलब्धितामेंइंद्रियजन्यताभासैहै यातेंनिषे
धनीयउपलब्धिमेंइंद्रियजन्यताप्रतीतहोनेतेंइंद्रियजन्यउपलब्धिकेअभावतेंघटाभावकानिश्चयउपजैहै यहसिद्धहुवातें
सेंवायौरूपानुपलब्ध्यानेत्रेणरूपाभावंनिश्चिनोमियाकहनेकाबीरूपकीअनुपलब्धिसहितनेत्रतेंरूपाभावकेनिश्चयवाला
मेंहूंयहतात्पर्यनहींहै काहेतेंनेत्रकेव्यापारविनाबीरूपाभावकानिश्चयहोवैहै किंतुनेत्रजन्यरूपकीउपलब्धिकेअभावतेंवायुमें
रूपाभावकेनिश्चयवालामेंहूं यहतात्पर्यहै यातेंजिसउपलब्धिकाअभावरूपाभावकेनिश्चयकाहेतुताउपलब्धिमेंनेत्रजन्यताप्र
तीतहोवैहै इसरीतिसेंसारेअभावनिश्चयकाहेतुजोअनुपलब्धिताकेप्रतियोगीउपलब्धिमेंइंद्रियजन्यताकहियेहै औविवेकविना

1548

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1549

तहांअभावज्ञानमैंभ्रमबुद्धिहुयेविनातिसअधिकरणमैंतापदार्थकाज्ञानहोवैनहीं जैसेंआत्मामैंकर्तृत्वादिकनकाअभाव
ज्ञानहुयांन्यायादिकशास्त्रसूनैंबी प्रथमज्ञानमैंभ्रमबुद्धिहुयांविनाकर्ताभोक्ताआत्माहै ऐसाज्ञानहोवैनहीं जाकूंवे
दांतअर्थनिश्चयकरिकैंनैयायिकादिकनकेकुसंगतेंकर्ताभोक्ताआत्माहै ऐसाज्ञानहोवैहै तहांप्रथमज्ञानमैंभ्रमबुद्धिहो
यकैहोवैहै प्रथमज्ञानमैंभ्रमबुद्धिहुयेविनाविरोधीज्ञानहोवैनहीं सोभ्रमबुद्धिभ्रमरूपहोवैअथवायथार्थहोवैइसमैंआग्रह
नहीं परंतुभ्रमबुद्धिमैंभ्रमत्वनिश्चयनहींचाहियेयहआग्रहहै इसरीतिसैंजिसकालमैंगुरुवाक्यनतैंजिज्ञासूकूंऐसादृढनिश्च
यहुयाहै आकाशादिकसकलप्रपंचगंधर्वनगरकीनांईदृष्टनष्टस्वभावहै तातैंविलक्षणस्वभावआत्माहै आकाशादिकनमैं
आत्माकाकिंचित्बीसादृश्यनहीं तिसकालमैंआकाशऔआत्माकासादृश्यज्ञानसंभवैनहीं यातैंउत्तमजिज्ञासूकैअनुकूल
सिद्धांतकीउपमितिकाउदाहरणमिलैनहीं औसर्वथानैयायकरीतिकीउपमितिमैंविद्वेषहोवैतोउपमितिकायहलक्षणकर
णाचाहियेसादृश्यज्ञानजन्यज्ञानअथवावैधर्म्यज्ञानजन्यज्ञान इनदोनूंमैंकोईएकहोवैसोउपमितिकहियेहै खड्गमृगमैंउष्ट्र
कैवैधर्म्यज्ञानतैंउष्ट्रमैंखड्गमृगकावैधर्म्यज्ञानहोवैहै पृथिवीमैंजलकैवैधर्म्यज्ञानतैंजलमैंपृथिवीकावैधर्म्यज्ञानहोवैहै
यातैंउष्ट्रमैंखड्गमृगकावैधर्म्यज्ञानऔजलमैंपृथिवीकावैधर्म्यज्ञानउपमितिहै ताकाकरणउपमानकहियेहै इहांखड्गमृग
मैंउष्ट्रकावैधर्म्यज्ञानऔपृथिवीमैंजलकावैधर्म्यज्ञानकरणहोनेतैंउपमानहै औरविपरीतबीउपमानउपमितिभावसंभवैहै
इंद्रियसंबद्धमैंसादृश्यज्ञानउपमानहै औइंद्रियसैंव्यवहितमैंसादृश्यज्ञानउपमितिहै तैसैंप्रपंचमैंआत्माकेवैधर्म्यज्ञा
नतैंआत्मामैंप्रपंचकावैधर्म्यज्ञानउपमितिहोवैहै इसरीतिसैंसादृश्यज्ञानजन्यज्ञानऔवैधर्म्यज्ञानजन्यज्ञानदोनूंकूंउ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वृत्ति
३

प्र.
५

पमितिकहैं तौजिज्ञासुके अनुकूलउदाहरणसंभवैहै औवेदांतपरिभाषामें एकसादृश्यज्ञानजनज्ञानहीउपमितिकालक्ष
णकह्याहै औताकेव्याख्यानमैंताकेपुत्रनैंदूसरीउपमितिकेखंडनवास्तेयहकह्याहै जहांकमलेमलोचनसुपमिनोमि इस
रीतिसैंउपमानउपमेयभावहोवैतिसीस्थानमैंउपमानप्रमाणहोवैहै वैधर्म्यज्ञान होवैतहांउपमानउपमेयभावहोवैनहीं
यातैंउपमानप्रमाणसंभवैनहींताकूंयहपूछ्याचाहियेवैधर्म्यज्ञानजन्यउपमितिकेजोउदाहरणकहेतिनमैंउपमितिकेवि
षयकाज्ञानउपमानप्रमाणसैंहोवैनहींतौकिसप्रमाणतैंतिनकाज्ञानहोवैहै जाप्रमाणतैंतिनकाज्ञानकहैतिसीप्रमाणतैंसा
दृश्यज्ञानजन्यउपमितिकेविषयकाबीज्ञानहोयजावैगाउपमानप्रमाणकाप्रयोजनकेअभावतैंअनंगीकारचाहियेजो ऐसैं
कहैगवयकेप्रत्यक्षसमैंगोकासादृश्यतौप्रत्यक्षहै परंतुगौमैंगवयकासादृश्यप्रत्यक्षनहीं काहेतैंधर्मीकेसाथिइंद्रियका
संयोगहोवैतौइंद्रियसंयुक्ततादात्म्यसंबंधसैंसादृश्यधर्मकाप्रत्यक्षहोवैगोरूपधर्मीकेसाथिइंद्रियसंयोगकेअभावतैं
गौमैंगवयकासादृश्यप्रत्यक्षकाविषयनहीं यातैंगौमैंगवयकेसादृश्यज्ञानकाहेतुगवयमैंगोकासादृश्यज्ञानरूपउपमान
प्रमाणचाहियेतौतैसैंहीखड्गमृगमैंउष्ट्रके वैधर्म्यकातौप्रत्यक्षज्ञानहै उष्ट्रकेसाथिइंद्रियसंयोगकेअभावतैंउष्ट्रमैंखड्गमृ
गकेवैधर्म्यकाज्ञानप्रत्यक्षरूपसंभवैनहींताकाहेतुखड्गमृगमैंउष्ट्रकावैधर्म्यज्ञानरूपउपमानहीप्रमाणमाननायोग्यहै और
जोवेदांतपरिभाषाकीटीकामैंलिख्याहै जाज्ञानतैंउत्तरउपमिनोमिऐसीप्रतीतिज्ञाताकूंहोवैसोज्ञानउपमितिहै औवैधर्म्यज्ञा
नजन्यवैधर्म्यज्ञानसैंउत्तरउपमिनोमिऐसीप्रतीतिहोवैनहीं यातैंउपमितिनहीं सोबीअशुद्धहै काहेतैंमुखमैंचंद्रकेसादृ ३
श्यप्रत्यक्षसैंउत्तरमुखंचंद्रेणउपमिनोमिऐसीप्रतीतिहोवैहै औमुखमैंचंद्रकेसादृश्यकाप्रत्यक्षज्ञानहैउपमितिनहीं यातैं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उपजैहैं क्रमतैंउपजतेवर्णनकानिमित्तविनानाशमानेंतौसकलवर्णनकोप्रथमक्षणमेंउत्पत्ति औद्वितीयक्षणमेंनाशहोवै
गा यातैंउत्पत्तिनाशविनाशब्दमें औरकोईप्रत्यक्षतादिकव्यापारसिद्धनहींहोवेगा यातैंशब्दकेनाशकाकोईनिमित्तमान्या
चाहिये जानिमितविनाद्वितीयक्षणमेंशब्दकानाशहोवैनहीं सोऔरतौकोईशब्दकेनाशकानिमित्तसंभवैनहीं पूर्वशब्दके
नाशकाहेतुस्वोत्तरवर्तिशब्दहै गो:यावाक्यमेंपुरुषकीकृतिसैंनाभिदेशतैंवायुमेंक्रियाहोयकेगकारकाजनकजिव्हामूलमें
वायुकासंयोगहोयकेऔकारकाजनककंठऔष्ठसैंवायुकासंयोगहोवैहै तिसतैंअनंतरविसर्गकाजनककंठसैंवायुकासं
योगहोवैहै जिसक्रमतैंतीनिसंयोगहोवैहैं उसीक्रमतैंगकारऔकारविसर्गरूपतीनिवर्णहोवैहैं यद्यपिकौमुदीआदि
कग्रंथनमेंकवर्गकाकंठस्थानलिख्याहै तथापिपाणिनिकृतशिक्षामेंकवर्गकाजिव्हामूलस्थानलिख्याहै ताशिक्षावचनके
अनुसारतैंजिव्हामूलमेंवायुके संयोगतैंगकारकीउत्पत्तिकहीहै व्याकरणमतमें यद्यपिगौ:इतनेंवर्णवाक्यरूपनहींहैं त
थापिन्यायमततैंवाक्यकह्याहै प्रथमक्षणमेंगकारकोद्वितीयक्षणमेंऔकारकोतृतीयक्षणमेंविसर्गकीउत्पत्तिहोवैहै तहां
गकारनाशमें औकारहेतुहै औकारकेनाशमेंविसर्गहेतुहै तृतीयक्षणमेंशब्दकानाशहोवैहै द्वितीयमेंनहीं काहेतैंनाशका
हेतुस्वोत्तरशब्दहै सोद्वितीयक्षणमेंउपजैहै कारणकीसिद्धिविनाकार्यहोवैनहीं प्रथमक्षणमेंद्वितीयशब्दअसिद्धहै यातैं
द्वितीयक्षणमेंसिद्धद्वितीयशब्दसैंतृतीयक्षणमेंप्रथमशब्दकानाशहोवैहै ऐसैं तृतीयशब्दसैंद्वितीयकानाशहोवैहै
इसरीतिसैंउपांत्यशब्दपर्यंतस्वोत्तरवर्तिशब्दसैंशब्दकानाशहोवैहै औअंत्यशब्दकाउपांत्यशब्दसैंसंदोपसंदन्यायतैं
नाशहोवैहै संदऔउपसंददोभ्राताहुयेहैं तिनकापरस्परनाशभारतमेंप्रसिद्धहै परंतुयामेंयहदोषहै जोउपांत्यशब्दसैं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1552

अंत्यशब्दकानाशमानैंतौद्वितीयक्षणमैंहीअंत्यशब्दकानाशहोवैगा यातैंउत्पत्तिनाशतैंअन्यव्यापाररहितअंत्यशब्दअप्रत्यक्ष
हुयाचाहिये जोंऐसेंकहै जगदीशभट्टाचार्यनैंअंत्यशब्दअप्रत्यक्षकह्याहै यातैंअप्रत्यक्षकाआपादनइष्टहैदोषनहीं तौद्विती
यक्षणमैंशब्दकानाशहोवैहै यानियमकाभंगहोवैगा यातैंअंत्यशब्दकेनाशमैंउपांत्यशब्दकानाशहेतुहै उपांत्यशब्दहेतुन
हीं यापक्षमैंअंत्यशब्दकेनाशमैंद्वितीयक्षणमैंनाशकीआपत्तिनहीं काहेतैंउपांत्यशब्दकानाशअंत्यशब्दसेंहोवैहै या
तैंअंत्यशब्दकोद्वितीयक्षणमैंउपांत्यकानाशतासेंउत्तरक्षणमैंअंत्यकानासहोवैहै इसरीतिसैंसकलशब्दकानाशतृतीय
क्षणमैंहोवैहै यामैंयहशंकाहोवैहै जहांएकहीवर्णरूपशब्दहोवै तहांशब्दकेनाशकाहेतुकोईशब्दनहीं ताकायहसमा
धानहै जैसैंकंठादिकनतैंवायुकासंयोगवर्णरूपशब्दकाहेतुहै औभेरीआदिकनतैंदंडादिकनकासंयोगध्वनिरूपशब्दका
हेतुहै औवंशकेदलद्वयकाविभागध्वनिरूपशब्दकाहेतुहै तैसैंशब्दबीशब्दकाहेतुहै भेरीदंडकेसंयोगतैंजोभेरीदेशमैंश
ब्दहोवैहै तासैंउत्पन्नहुवाजोशब्दताकाश्रवणसैंसाक्षात्कारहोवैहै तैसैंकंठादिकदेशमैंवायुकेसंयोगतैं जोवर्णरूपशब्द
उपजैहै ताकाश्रोत्रसैंसाक्षात्कारहोवैनहीं किंतुवर्णरूपशब्दसैंअन्यशब्दउपजैहै ताकासाक्षात्कारहोवैहै इसरीतिसैंअन्यशब्दर २
हितएकशब्दअलीकहै परंतुयामतमैंवर्णकासमुदायरूपपदकाएककालमैंसंभवनहीं यातैंपदकासाक्षात्कारतौसंभवैनहीं तथापिप्र
त्येकवर्णकेसाक्षात्कारनतैंसकलवर्णकूंविषयकरनेंवालीएकस्मृतिहोवैहै स्मृतपदसैंपदार्थकीस्मृतिहोवैहै तासैंशाब्दबोधहो
वैहै अथवापूर्वपूर्ववर्णकेअनुभवतैंसंस्कारहोवैहै संस्कारसहितअंत्यवर्णकाअनुभवहीपदकाअनुभवकहियेहै तासैंप
दार्थकीस्मृतिहोवैहै तासैंशाब्दबोधहोवैहै यहन्यायकामतहै औमीमांसाकेमतमैंवर्णनित्यहैं यातैंवर्णकासमुदायरूपवेद

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वीनित्यहैं औरसारे वर्णविभुहैं जहांकंठादिदेशमें अध्यात्मवायुकासंयोगहोवेतहां वर्णकीअभिव्यक्तिहोवेहै नैयायिकमतमेंजो
वर्णकीउत्पत्तिकेहेतुहैं सोईमीमांसकमतमें वर्णकीअभिव्यक्तिकेहेतुहै इसरीतिसें वर्णसमुदायरूपवेदनित्यहै यातें अपौरुषेयहै
औवेदांतमतमें वर्णऔतिनकासमुदायरूपवेदनित्यनहीं काहेतें वेदकीउत्पत्तिश्रुतिनेंकहीहै औचेतनसें भिन्नसकलअनित्यहै
यातेंवेदनित्यनहीं औक्षणिकनहीं किंतुसृष्टिकेआदिकालमेंसर्वज्ञईश्वरकेसंकल्पमात्रतें वेदकीउत्पत्तिहोवेहै यातेंश्वासकीनांईअना
यासतेंईश्वरवेदकूंरचेहै नैयायिकमतमेंभारतादिकनकीनांईवेदपौरुषेयहै वेदांतमतमेंभारतादिकनकीनांईईश्वररूपपुरुषतेंरचित-
होनेतेंपौरुषेयतोहै परंतुसर्वज्ञव्यासादिकसकलसर्गनमेंभारतादिकनकूंरचेहैं तहांयहनियमनहीं जैसीपूर्वसर्गमें आनुपूर्वीहो
वैतैसेहीभारतादिकउत्तरसर्गमेंहोवेहै किंतुअपनीइच्छाके अनुसारभारतादिकनकीआनुपूर्वीरचेहैं औवेदकी आनुपूर्वीविलक्षण
नहींहोवेहै किंतुपूर्वसर्गकीआनुपूर्वीकूंयादिकरिकेउत्तरसर्गमें पूर्वकल्पकेसमानआनुपूर्वीवालेवेदकूंईश्वररचेहै पुरुषरचितता
रूपपौरुषेयतावेदमेंभारतादिकनकेसमाननहै अन्यसर्गकीआनुपूर्वीकेस्मरणबिनापुरुषरचितत्वरूपपौरुषेयत्वभारतादिकनमें
है वेदमेंनहीं वेदमें पूर्वसर्गकीआनुपूर्वीकूंस्मरणकरिकेपुरुषरचितत्वहै यातेंवेदकी आनुपूर्वीअनादिहै औईश्वररूपपुरुषकरिके
रचितहैविरोधनहीं ॥ इतिश्रीमन्निश्चलदासाख्यसाधुविरचितेवृत्तिप्रभाकरेशब्दप्रमाणनिरूपणंनाम तृतीयः प्रकाशः ॥३॥

1553

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1554

श्रीगणेशायनमः॥ श्रीरामोजयति॥ अथचतुर्थप्रकाशप्रारंभः॥ यद्यपिन्यायवेदांतकेसकलग्रंथनमेंउपमाननिरूपणतेंउत्त
रशब्दनिरूपणकियाहै तथापितीनिप्रमाणवादीसांख्यादिकउपमानकूंनहींमानेंहैं प्रत्यक्षअनुमानशब्दयेतीनिमानेंहैं तिनके
उपयोगीप्रमाणपहलीकहेचाहिये यातेंशब्दप्रमाणतेंउत्तरउपमाननिरूपणकरियेहै जिसक्रमतेंशास्त्रोंमेंअधिकप्रमाणका अंगी
कारहैतिसक्रमतेंयाग्रंथमेंप्रमाणनिरूपणहै यातेंअन्यसंगतिकीइहांअपेक्षानहीं उपमितिप्रमाकाकरणउपमानप्रमाणकहियेहै
न्यायरीतिसेंउपमितिउपमानकायहस्वरूपहैं संज्ञीमेंसंज्ञाकीवाच्यताकाज्ञानउपमितिकहियेहै ताकाकरणकहियेव्यापारवालाअ
साधारणकारणजोहोवेसोउपमानकहियेहै कोईनगरवासीपुरुषगवयशब्दकेवाच्यकूंनहींजानिकेआरण्यकपुरुषतेंकीदृशगव
यहोवेहै ऐसाप्रश्नकरैतबगोकेसदृशगवयहोवेहै ऐसाआरन्यकपुरुषकावचनसुनिकेवाक्यार्थअनुभवकरिकेबनमेंगोसदृ
शगवयकूंदेषिकेगोकेसदृशगवयहोवेहै इसरीतिसेंवाक्यार्थकास्मरणकरैहै तिसतेंअनंतरदृष्टपशुमेंगवयपदवाच्यताजानेंहै त
हांपशुविशेषमेंगवयपदवाच्यताज्ञानउपमितिहै आरण्यकपुरुषबोधितवाक्यकेअर्थकाशाब्दानुभवकरणहै गोसदृशपिंडकूं
देषिकेवाक्यार्थकीस्मृतिव्यापारहै औगोसदृशपिंडकाप्रत्यक्षसंस्कारकाउद्बोधकहोनेंतेंसहकारीहै यातेंवाक्यार्थानुभवउपमा
नहै वाक्यार्थस्मृतिव्यापारहै जैसें आकांक्षादिकशब्दकेसहकारीहैं तैसेंगोसदृशपिंडकाप्रत्यक्षसहकारीहै उपमितिफलहै य
हसांप्रदायिकनैयायिकनकामतहै औनवीननैयायिकयहकहैंहैं गोसदृशपिंडकाप्रत्यक्षसहकारीमान्याहै सोउपमानहै औ
वाक्यार्थस्मृतिव्यापारहै गवयपदकीवाच्यताकाज्ञानउपमितिरूपफलहै यामतमेंवाक्यार्थकाअनुभवकारणकाकारणहोनेंतें १
कुलालपिताकीनांईअन्यथासिद्धहै अर्थयहहै जैसेंकुलालपिताघटकीसामग्रीतेंबाह्यहै तैसेंउपमितिसामग्रीतेंवाक्या

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

र्थानुभववाच्यहै यहदोमतनैयायिकनकेहैं इनमेंअनेकसंकासमाधानरूपविचारन्यायकौस्तुभादिकोंमेंलिख्याहै सिद्धां
तमेंउपयोगीनहीं यातेंहमनेंलिख्यानहीं जैसेंसादृशज्ञानतेंउपमितिहोवैहै तैसैंविधर्मज्ञानसेंबीहोवैहै जहांखड्गमृगपद
केवाच्यकूंनहींजानताआरण्यकपुरुषतेंउष्ट्रविधर्माशृंगसहितनासिकावालाखड्गमृगपदकावाच्यहै इसवाक्यकूंसुनिके
वाक्यार्थानुभववसेंउतरवनमेंजायकै उष्ट्रविधर्मखड्गमृगकेप्रत्यक्षसेंउतरगैंडेमेंखड्गमृगपदकीवाच्यताजानेहै औपृथिवी
पदकेवाच्यकूंनहींजानताजलादिवैधर्म्यवतीपृथिवीऐसागुरुवाक्यसुनिकेताकेअर्थकूंअनुभवकरिकेजलादिवैधर्म्यवानप
दार्थकूंदेषिकेवाक्यार्थकूंस्मरणकरिकेतापदार्थमेंपृथिवीपदकीवाच्यतानिश्चयकरैहै विरुद्धधर्मवालेकूंविधर्मकहैहैं विरुद्ध
धर्मकूंवैधर्म्यकहैहैं खड्गमृगमेंउष्ट्रतेंविरुद्धधर्मह्रस्वग्रीवादिकहैं पृथिवीमेंजलादिकनतेंविरुद्धधर्मगंधहै दोनूंउदाहरण
नमेंसांप्रदायिकरीतिसेंवाक्यार्थानुभवकरणहैवाक्यार्थस्मृतिव्यापारहैविरुद्धधर्मवत्पदार्थदर्शनसहकारीहै नवीनरीतिसें
विरुद्धधर्मविशिष्टपदार्थकाप्रत्यक्षकरणहै वाक्यार्थस्मृतिव्यापारवाक्यार्थानुभवसामग्रीवाच्यहै खड्गमृगपदकीवाच्यताज्ञा
नऔपृथिवीपदकीवाच्यताज्ञानउपमितिरूपफलहै इसरीतिसेंन्यायमतमेंसंज्ञाकावाच्यताज्ञानउपमानप्रमाणकाफलहै औ
प्राचीनमतमेंवाक्यार्थानुभवकूंउपमानप्रमाणकहैहैं नवीनमतमेंसादृश्यविशिष्टपिंडदर्शनवावैधर्म्यविशिष्टपिंडदर्शन
कूंउपमानप्रमाणकहैहैं वेदांतमतमेंउपमितिउपमानकाअन्यस्वरूपहै ग्रामविषैगोव्यक्तिकूंदेषनेवालावनमेंजायकैगव
यकूंदेषैतबयहपशुगौकेसदृशहै ऐसाप्रत्यक्षहोवैहै तिसतेंअनंतरमेरीगौइसपशुकेसदृशहै ऐसाज्ञानहोवैहै तहांग
वयमेंगोसादृशकाज्ञानउपमानप्रमाणकहियेहै औगौमेंगवयकासादृश्यज्ञानउपमितिकहियेहै यामतमेंबीउपमितिकाक

1555

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वृ.वि. २

रणहीउपमानकहियेहै परंतुउपमितिकास्वरूपऔलक्षणभिन्नहै यातैं उपमानकैं लक्षणभेदविनास्वरूपकाभेदासिद्धहोवै प्र. ४
है न्यायमतमैंतो संज्ञाकासंज्ञीमैं वाच्यताज्ञानउपमितिकहियेहै औवेदांतमतमैंसादृश्यज्ञानतैंजन्यज्ञानकूंउपमितिकहेहै
हैं गवयमैंगोकैसादृश्यज्ञानतैं गोमैंगवयकासादृश्यज्ञानजन्यहै इसरीतिसैं उपमितिकालक्षणन्यायमतसैंभिन्नहै ताका
ज्ञाकरणहोवैसोउपमानकहियेहै सादृश्यज्ञानजन्यज्ञानरूपउपमितिगोमैंगवयकासादृश्यज्ञानहै ताकाकरणगवयमैंगोका
सादृश्यज्ञानहै सोईउपमानहै यामतमैंउपमानप्रमाणव्यापारहीनहै उपमानतैंअनंतरउपमितिकीउत्पत्तिमैंकोईव्यापारमि
लैनहीं यामतमैंवैधर्म्यविशिष्टज्ञानतैंउपमितिकाअंगीकारनहीं काहेतैंसादृश्यज्ञानजन्यज्ञानकूंहीउपमितिकहेहैं अन्यकूं
नहीं औविचारसागरमैंन्यायकीरीतितैंउपमितिकास्वरूपकह्याहै ताकायहअभिप्रायहै न्यायकीरीतिसैंउपमितिउपमानका
स्वरूपमानैंतौबीअद्वैतसिद्धांतमैंहानिनहीं उलटान्यायकीरीतिसैं सिद्धांतकेअनुकूलउदाहरणमिलैहै काहेतैंवैधर्म्यज्ञानतैं
उपमितिन्यायमतमैंमानीहै ताकासिद्धांतकेअनुकूलयहउदाहरणहै आत्मपदकाअर्थकैसाहै याप्रश्नकादेहादिवैध-
र्म्यवान् आत्मा ऐसागुरुकेउत्तरसैं अनित्यअशुचिदुःखस्वरूपदेहादिकनसैं विधर्मानित्यशुद्धआनंदरूपआत्मपदकावाच्यहै
ऐसाएकांतदेशमैंविवेचनकालमैंमनकाआत्मासैंसंयोगहोयकै उपमितिज्ञानहोवैहै औसादृश्यज्ञानजन्यज्ञानकूंहीउपमि
तिमानैंसोआत्मामैंकिसीकासादृश्यनहीं यातैंजिज्ञासूकेअनुकूलउदाहरणमिलैनहीं यद्यपिअसंगतादिकधर्मनतैंआका २
शकैसदृशआत्माहै यातैंआकाशमैंआत्माकासादृश्यज्ञानउपमानहै आत्मामैंआकाशकासादृश्यज्ञानउपमितिहै यहजि
ज्ञासूकेअनुकूलउदाहरणसिद्धांतकीउपमितिकासंभवैहै तथापिजिसअधिकरणमैंजिसपदार्थके अभावकाज्ञानहोवै

1556

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विहितांजलिनाविपश्चिताविदुषाश्रीशंकरेणभगवंतएतान्यासनानिपरिगृह्यता।मितिविनयपूर्वकयोक्त्याऽर्पिताविष्टराआसना।नियेभ्यस्तेपरमार्थस्य
संश्रयोयेषांतेमोक्षनिष्ठाअमीऋषयोऽमुनाश्रीशंकरेणसहकथाःकृतवंतः मोक्षसंश्रयाथाइतिकथानांवाविशेषणं ॥ ३८ ॥ कथानामंतरेंतरालेत
स्यसर्वज्ञस्यजननीमुनीनुवाच ॥ यदुवाचतदाह ॥ वयमद्यकृतार्थतांप्राप्तायद्यस्माद्भगवंतोगृहानुपागताः ॥ ३९ ॥ भवदागमनंनकेवलंकृतार्थ
तायाएवसंपादकमपितुजन्मांतरीयानंतसुकृतसूचकमपीत्याशयेनाह ॥ क्वेति ॥ बहुदोषभाजनंकलिःक्व ॥ क्वचयुष्मच्चरणावलोकनं ॥ तथा

विहितांजलिनाविपश्चिताविनयोक्त्यार्पितविष्टराअमी ॥ ऋषयःपरमार्थसंश्रयाअमुनासाकमचीकरन्क
थाः ॥ ३८ ॥ निजगादकथांतरेमुनीन्जननीतस्यसमस्तदर्शिनः ॥ वयमद्यकृतार्थतांगताभगवंतोयदुपाग
तागृहान् ॥ ३९ ॥ क्वकलिर्बहुदोषभाजनंक्वचयुष्मच्चरणावलोकनं ॥ तदलभ्यतचेत्पुराकृतंसुकृतंनःकिमिति
प्रपंचये ॥ ४० ॥ शिशुरेषकिलातिशैशवेयदशेषागमपारगोभवत् ॥ महिमापियदद्भुतोस्यतद्द्वयमेतत्कुरुते
कुतूहलं ॥ ४१ ॥ करुणार्द्रदृशानुगृह्यतेस्वयमागत्यभवद्भिरप्ययं ॥ वदतास्यपुराकृतंतपःक्षममाकर्णयि
तुमयायदि ॥ ४२ ॥

चसमस्तदोषाश्रयेकलियुगेऽत्यंतालभ्यंतत्युष्मच्चरणावलोकनमलभ्यतचेत्तर्हिनोऽस्माकंपुराकृतंपुण्यंकिमितिप्रपंचयेतद्वर्णनमशक्यमित्यर्थः ॥
॥ ४० ॥ एवंस्तुत्याऽभिमुखीकृतान्मुनीन्किंचित्प्रष्टुमारभते शिशुरिति ॥ एषभवदग्रेस्थितःशिशुरतिबाल्येसर्वागमपारगोयदभवत्महिमाप्यस्य
यदद्भुतोभवदेतद्द्वयंकुतूहलंकुरुते ॥ ४१ ॥ भवदागमनमप्येतदद्भुतमाहात्म्यसूचकमित्याशयेनाह भवद्भिरप्यत्यंतालभ्यदर्शनैरपि ॥ तत्रापि
स्वयमागत्य ॥ तत्रापिकरुणार्द्रदृशाऽयमनुगृह्यते ॥ तस्मादस्यपुराकृतंतपोवदत मयाआकर्णयितुंयदिक्षमंयोग्यंतर्हिब्रूतेत्यर्थः ॥ ४२ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इत्येवंप्रकारेणसादरंयथास्यात्तथासत्योच्चारितांवाचमाकर्ण्य ॥ सादरमाकर्ण्यैतिवा ॥ महर्षीणांसंसदिसभायांतैरेवप्रेरितोऽतिवृद्धोऽगस्त्यःप्रतिव
क्तुंप्रचक्रमे ॥ ४३ ॥ साक्षाच्छिवएवतवपत्याऽतितपसासमाराध्यलब्धोनत्वयंकश्चित्तपस्वीत्याशयेनाह ॥ तनयायेतित्रिभिः ॥ हेपतिव्रतेपूर्वं
तवपत्यापुत्रार्थंतपसाप्रसादितोरजनीवल्लभस्यचंद्रस्यखंडोमंडनमलंकारोयस्यसनिशाकरकलाशेखरोभगवान्शंकरोवचनमुपाददेप्रोक्तवान् ॥
त्वयासहैवतवपत्यातपस्तप्तमितिद्योतनायसंबोधनं ॥ ४४ ॥ शैवंवचनमुदाहरति ॥ वरयस्वेति असर्वविदःशतायुषःसुतान्वरयस्वापिवासर्व

इतिसादरमीरितांतयागिरमाकर्ण्यमहर्षिसंसदि ॥ प्रतिवक्तुमभिप्रचोदितोघटजन्माप्रवयाःप्रचक्रमे
॥ ४३ ॥ तनयायपुरापतिव्रतेतवपत्यातपसाप्रसादितः ॥ स्मितपूर्वमुपाददेवचोरजनीवल्लभखंडमंडनः
॥ ४४ ॥ वरयस्वशतायुषःसुतानपिवासर्वविदंमितायुषं ॥ सुतमेकमितीरितःशिवंसतिसर्वज्ञमयाचता
त्मजं ॥ ४५ ॥ तदभीप्सितसिद्धयेशिवस्तवभाग्यात्तनयोयशस्विनि ॥ स्वयमेवबभूवसर्वविन्नततोऽन्योऽ
स्तियतःसुरेष्वपि ॥ ४६ ॥ इतितद्वचनंनिशम्यसामुनिवर्यंपुनरप्यवोचत ॥ कियदायुरमुष्यभोमुनेसकल
ज्ञोस्यनुकंपयावद ॥ ४७ ॥

ज्ञमल्पायुषमेकंसुतंवरयस्वेतिईरितस्तवपतिर्हेसतिसर्वज्ञमात्मजमयाचत ॥ ४५ ॥ तस्यतवपत्युरभिलषितस्यासिद्धयेस्वयमेवशिवोभाग्यात्तव
तनयोबभूव ॥ हेयशस्विनीतिसंबोधयन्तवयशःख्यापनार्थंबभूवेतिसूचयति ॥ ननुसर्वज्ञमन्यमेवपुत्रंकुतोनदत्तवानितिचेत्तत्राह ॥ यतःकारणा
द्देवेष्वपितस्माच्छिवादन्यःसर्वज्ञोनास्तिततइत्यर्थः ॥ ४६ ॥ इत्येवंप्रकारेणतस्यागस्त्यस्यवचनंमितायुषमित्यादिरूपंश्रुत्वा ॥ सासतीमुनिश्रेष्ठं
पुनरप्युवाच॥भोमुनेयतःसकलज्ञोऽस्यतोमुष्यायुःकियत्परिमितमस्तितत्करुणयावद ॥ यते।मितायुषमितिश्रुत्वामममत्रासोजातइतिभावः ॥४७॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

एवंपृष्टोमुनिरुवाच ॥ शरदःसंवत्सराःअष्टतथापुनरष्टमिलित्वाषोडशेतियावत्‌अस्यतवपुत्रस्यायुर्यद्यपितथाप्यसौतेतनयःकारणांतरादस्मिन्भुवनेषोडशसंवत्सरान्पुनर्निवसिष्यतिवासंकरिष्यति॥४८॥इत्येवंप्रकारेणभाविनींभविष्यांकथांकुंभजेऽगस्त्येवादिनिसतिमुनयस्तंनिवार्यश्रीशंकरंसमुपामंत्र्यतेनघटजेनसहयथागतंजग्मुः ॥४९॥ अतिकष्टदांमुनिवाचंश्रुतवतींसतींवर्णयती ॥ सृणिनाअंकुशेनहस्तिनीवसामुनिवाचाऽर्दितापीडिताऽभवत्‌ ॥ शुचिनाआषाढेनशैवलिनीशेवलंपद्मकाष्ठंतत्संबंधिनीपुष्करिणीवसाशोषिताऽभवत्‌ ॥ वायुनाकदलीवकंपिताभवत्‌ ॥ यतःपुत्रवत्सला ॥ ५० ॥ एवमतिकष्टवर्तींमातरंश्रीशंकरोयदुक्तवान्तद्वक्तुमुपक्रमते ॥ अथमातुर्मुनिवाचाऽतिदुःखप्राप्त्यनंतरंशोकेनपरीताव्याप्ताचेतनाबुद्धिर्यस्याः

शरदोष्टपुनस्तथाष्टतेतनयस्यास्यतथाप्यसौपुनः ॥ निवसिष्यतिकारणांतराद्भुवनेस्मिन्दशषट्चवत्सरान् ॥ ४८ ॥ इतिवादिनिभाविनींकथामृषिमुख्येघटजेनिवार्यतं ॥ ऋषयःसहतेनशंकरंसमुपामंत्र्ययपुर्यथागतं ॥ ४९ ॥ सृणिनाकरिणीवसार्दिताशुचिनाशैवलिनीवशोषिता ॥ मरुताकदलीवकंपितामुनिवाचासुतवत्सलाभवत्‌ ॥५०॥ अथशोकपरीतचेतनांद्विजराडित्थमुवाचमातरं ॥ अवगम्यचसंसृतिस्थितिंकिमकांडेपरिदेवनातव ॥ ५१ ॥ प्रबलानिलवेगवेल्लितध्वजचीनांशुककोटिचंचले ॥ अपिमूढमतिःकलेवरेकुरुतेकःस्थिरबुद्धिमंबिके ॥ ५२ ॥

तांसंसारस्यस्थितिंक्षणभंगुररूपामवगम्याकांडेऽसमयेपरिदेवनाशोकःतवकिमर्थमपार्थैत्यर्थः ॥ ५१ ॥ अतिचंचलेशरीरेमूढमतिरपिस्थिरबुद्धिंनकुरुते ॥ त्वंत्वतिसुज्ञातत्रतांकर्तुमित्ययोग्येतिबोधयन्नाह ॥ प्रबलोयोऽनिलोवायुस्तस्यवेगेनवेल्लितोतिकंपितोयोध्वजस्तस्ययच्चीनदेशीयमतिसूक्ष्मंवस्त्रंतस्यकोटिरग्रभागस्तद्वच्चंचलेकलेवरेशरीरेस्थिरबुद्धिंमूढमतिरपिकःकुरुतेनकोपीत्यर्थः॥उक्ताशयसूचकंसंबोधनमांबिकेति ॥ तथाचास्मदंबिकाऽतिसुज्ञाऽतिचंचलेकलेवरेस्थिरबुद्धिस्त्वेनैवंशोचितुमनर्हासीत्यर्थः ॥ ५२ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

किंचतत्तज्जन्मन्यनुभूतानांपुत्रादीनामानंत्यात्सर्वेषांशोकासंभवादेतेशोच्याएतेनेत्यस्मिन्नविनिगमकाभावान्नकेपिशोच्याइत्याशयेनाह ॥ कतीति
॥ इहास्मिन्संसारेकतिवधूर्ललनानाभुंजिहिनभुक्तातेसुताःक्व ॥ तावधूश्चक्व ॥ वयंचक्व ॥ तथाचभवसंगःपांथानांतत्तद्दिग्भ्यआगतानांपथिकाना
मेकस्मिन्प्रपादौयथासंगमस्तद्वद्भवसंगोप्यनियतःक्षणभंगुरश्चेत्यर्थः ॥ प्रसिद्धंचेदमित्याह ॥ खल्विति ॥ तस्मात्केपिशोच्यानभवंतीत्याशयः
॥ ५३ ॥ एवंशोकापहारकैर्वाक्यैर्मातरंप्रबोध्यस्वेनयदवश्यंकर्तव्यंतदाह ॥ भ्रमतामिति संसारमार्गेभ्रमादज्ञानाद्भ्रमतांकिंचिदपिसुखंनलक्ष

कतिनामसुतानलालिताः कतिवानेहवधूरभुंजिहि ॥ क्वनुतेक्वचताःक्ववावयंभवसंगःखलुपांथसंगमः ॥
॥ ५३ ॥ भ्रमतांभववर्त्मनिभ्रमान्नहिकिंचित्सुखमंबलक्षये ॥ तदवाप्यचतुर्थमाश्रमंप्रयतिष्येभववंध
मुक्तये ॥ ५४ ॥ इतिकर्णकठोरभाषणश्रवणाद्बाष्पपिनद्धकंठया ॥ द्विगुणीकृतशोकयातयाजगदेगद्गद
वाक्ययामुनिः ॥ ५५ ॥

येऽपितुजननीजठरवासादिरूपंदुःखमेवेतिसूचयन्संबोधयति हेंऽबेति हियस्मादेवंतत्तस्माच्चतुर्थंसंन्यासाश्रममवाप्यसंसारलक्षणाद्बंधाद्विमुक्त्यर्थं
प्रकर्षेणयत्नंकरिष्यामि ॥ ५४ ॥ एवंश्रीशंकरवाक्यमुदाहृत्यतद्वचनेनद्विगुणीकृतशोकायाःसत्यावचनमुदाहर्तुमाह ॥ इत्येवंप्रकारेणयत्कर्णयो
:कठोरंदुःस्पर्शंभाषणंचतुर्थमाश्रममित्यादिरूपंतस्यश्रवणात्तबाष्पैरश्रुभिःपिनद्धोपिहितःकंठोयस्याद्विगुणीकृतःशोकोयस्या अतएवगद्गदंवाक्यंय
स्यास्तयामुनिःश्रीशंकरोजगदे कर्मणिप्रत्ययःएवंभूतासामुनिंजगादेत्यर्थः ॥ ५५ ॥ ॥६॥

1580

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यदुवाचतदाह ॥त्यजेति॥ इदानीमेवचतुर्थाश्रमंप्राप्यप्रयातिष्यइतीमांबुद्धिंत्यज ॥ तर्हिकिंकर्तव्यमितिचेत्तत्राह ॥ मेममवचनंशृणु ॥किंतदितित
त्राह ॥ गृहमेधीगृहस्थोभव किंततइत्यतआह ॥पुत्रंप्राप्नुहि ॥क्रतुभिर्यजनंचकुरु ॥ ततस्तदनंतरंयतिर्भवितासिभविष्यसि ॥ अंगहेपुत्रसतांशास्त्रो
क्तोऽयमेवक्रमइत्यर्थः॥ तथाचस्मृतिः॥ ऋणानित्रीण्यपाकृत्यमनोमोक्षेनिवेशयेदिति ॥५६॥ किंचएकस्तनुभवःपुत्रोयस्यास्तथाविधाऽबलाऽहंत्वया
विरहिताशुचाशोकेनैवजीवितुंकथमुत्सहे॥पुत्रस्यतवैवंविधदुःखदातृत्वमनुचितमितिसूचयन्संबोधयति॥तनयेति ॥ पाठांतरेत्वयेत्यनेनसंबंधनीयं
किंचयदर्थंत्वमुत्पादितस्तदौर्ध्वदैहिकमपिप्रमृतायांकःकरिष्यतीत्यर्थः ॥ ५७ ॥ किंचाल्पविदापिवृद्धाजननीनपरित्यज्यतेयदिकेनचिदतिमूढेनत्य

त्यजबुद्धिमिमांशृणुष्वमेगृहमेधीभवपुत्रमाप्नुहि ॥ यजचक्रतुभिस्ततोयतिर्भवितास्यंगसतामयंक्रमः ॥ ५६ ॥
कथमेकतनूभवात्वयारहिताजीवितुमुत्सहेऽबला ॥ तनयैवशुचौर्ध्वदैहिकंप्रमृतायांमयिकःकरिष्यति ॥ ५७ ॥ त्व
मशेषविदप्यपास्यमांजरठांवत्सकथंगमिष्यसि ॥ द्रवतेत्वहृदयंकथंनतेनकथंकारमुपैतिवादयां ॥ ५८ ॥ एवंव्यथां
तांबहुधाश्रयंतीमपास्तमोहैर्बहुभिर्वचोभिः ॥ अंबामशोकांविदधाद्विधिज्ञःशुद्धाष्टमेचिंतयदेतदंतः ॥ ५९ ॥

ज्यतेतर्हित्यज्यतां त्वंत्वशेषज्ञोपिमांस्वमातरंतत्रापिवृद्धांत्यक्तुमत्यन्तयोग्यांपरित्यज्यकथंगमिष्यसि मामपास्यगंतुमत्यंतायोग्योसीत्यर्थः वत्स
गमनंयथागोःपीडाकरंतथातवगमनंममेतिद्योतयन्संबोधयति ॥ वत्सेति ॥ एवमुक्तमप्यद्रवीभूतांतःकरणंपुत्रमालक्ष्याह ॥ द्रवतइतिननुवा
स्तवसंबंधाभावविदोममक्वापिममत्वाभावात्स्नेहवशात्कथंमेहृदयंद्रवीभूतंभवेदित्याशंक्यतत्त्वविदामतिदयालुत्वश्रवणात्तेहृदयंदयांकथंनप्राप्नोती
त्याह नकथमितिवा ॥ ५८ ॥ एवंप्रकारेणबहुधाव्यथांपीडामाश्रयंतींतांमातरमपास्तास्तिरस्कृतामोहाऽविवेकोयैस्तैर्बहुभिर्वचोभिर्विधिशोकनिवृ
त्तिप्रकारंजानातीतिविधिज्ञःश्रीशंकरःशोकरहितांविदधादकृत ॥ ततश्चशुद्धेऽष्टमवर्षेऽतर्मनसिएतद्वक्ष्यमाणमचिंतयत ॥ अष्टमवर्षात्मकस्य
कालस्यशुद्धत्वंकलिमलशून्यत्वं ज० ॥ ५९ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यदाचिंतयत्तद्दर्शयति ॥ ममेति ॥ ममंमनःसंसृतिसाधनंप्रवृत्तिमार्गंनेच्छति ॥ जननीपुनर्नचजिहासतिहातुंत्यक्तुंनैवेच्छति मामितिविपरिणामेन संसृतिपदंवाऽनुषंजनीयं ननुजननीसंसृत्यनभिवांछिनंत्वांतवमनसाऽनिष्ठितांसंसृतिवाकुतोनजिहासतीत्याशंक्यतस्यास्तदीक्षणाभावादित्याह नचेति तत्तांसंसृतितन्मानसमितिवा ॥ ननुत्वयाप्रसह्यप्रबोधनीयेतिचेत्तत्राह ॥ गुरुरिति ॥ अतएवसंन्यासाश्रयणेतस्याईषदनुशासनमाज्ञाऽपेक्षितं द्रुत० ॥ ६० ॥ एवंमनसिश्रीशंकरकृतांचिंतामुपवर्ण्यईषदनुशासनंग्रहीतुंतत्कृतंचरित्रंवर्णयति इत्येवंप्रकारेणविचिंत्यसकदाचिन्मज्ज

ममनमानसमिच्छतिसंसृतिंनचपुनर्जननीविजिहासति ॥ नचगुरुर्जननीतदुदीक्षतेतदनुशासनमीषदपेक्षितं ॥ ६० ॥ इतिविचिंत्यसजातुमिमंक्षयाबहुजलांसरितंसमुपाययौ ॥ जलमगाहततत्रसमग्रहीज्जलचरश्चरणेजलमीयुषः ॥ ६१ ॥ सचरुरोदजलेजलचारिणाधृतपदोह्रियतेंऽबकरोमिकिं ॥ चलितुमेकपदंनचपारयेबलवताविवृतोरुमुखेनह ॥ ६२ ॥

नेच्छयाबहुजलांनदींसमुपाययौ गत्वाजलमगाहत तत्रनद्यांजलंप्राप्तवतश्चरणेजलचरःसम्यग्अग्रहीत् ॥ ६१ ॥ सचरुरोदरोदनंकृतवान्बलवताविवृतमुरुबृहन्मुखंयस्यतेनजलचारिणाग्राहेणधृतोगृहीतःपादोयस्यसहेंऽबजलेह्रियतेऽतःकिंकरोमि ॥ ननुजलद्बहिःकुतोनायासीत्याशंक्याह एकंपदंचलितुंनचपारये समर्थोनभवामि हेतिखेदे ॥ ६२ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तत्स्वसुतरोदनंगृहस्थाजननी उपाशृणोत्श्रुत्वाचपरवशाऽतिविकलाद्द्रुतमाशुसरित्तटमवाप तीरंगतासाजनन्यपिजलगतस्यपुत्रस्यमुखंगतेप्राप्तेई
क्षणेनेत्रेयस्याःसाइतिशुशोच कथमित्यतआह ममभृतेरिति मरणात्प्रथमंममशरणंपतिस्ततःपतिमृत्यनंतरंपुत्रोमेशरणमभवत्॥सचतनयोमरिष्य
तियतोनक्रस्यजलजंतोर्वशंगतोहंतातिकष्टं हेशिवपुरापूर्वमुचितामममृतिर्मरणंनाजनिनाभूत् शिवोपासकायाममाशिवप्राप्तिरत्यंतानुचितेतिसंबोध
नाशयः इत्येवंशुशोचेत्यर्थः॥६३॥६४॥एवमतिशोकपरितांमातरमालक्ष्याह त्यजतीति हेंऽबमेचरणमयंचंचलोजलचरस्तेऽनुमतेनसकलेसंन्यसने
परिकल्पितेसतित्यजति तथाचयदितवानुमतिस्तर्ह्यहंपरिकल्पयेसकलसंन्यासनमितिविपरिणामेनसंबंधनीयं ॥६५॥ इत्येवंप्रकारेणस्फुटंयथा

गृहगताजननीतदुपाशृणोत्परवशाद्द्रुतमापसरित्तटं ॥ ममभृतेःप्रथमंशरणंधवस्तदनुमेशरणंतनयोभव
त् ॥ ६३ ॥ सचमरिष्यतिनक्रवशंगतःशिवनमेऽजनिहंतपुरामृतिः ॥ इतिशुशोचजनन्यपितीरगाजलग
तात्मजवक्त्रगतेक्षणा ॥ ६४ ॥ त्यजतिनूनमयंचरणंचलोजलचरोंऽबतवानुमतेनमे ॥ सकलसंन्यसनेप
रिकल्पितेयदितवानुमतिःपरिकल्पये ॥ ६५ ॥ इतिशिशौचकितावदतिस्फुटंव्यधितसानुमतिंद्रुतमंबि
का॥सतिसुतेभवितामदर्शनंमृतवतस्तदुनेतिविनिश्चयः ॥ ६६॥तदनुसंन्यसनंमनसाव्यधादथमुमोच
शिशुंखलनक्रकः ॥ शिशुरुपेत्यसरित्तटमत्रसन्प्रसुवमेतदुवाचशुचावृतां ॥ ६७ ॥

स्यात्तथाशिशौवदतिसतिचकितासांऽबिकाद्रुतंशीघ्रमनुमतिमनुमोदनंव्याधिताकृत स्फुटमितिमध्यमणिन्यायेनात्रापिसंबंधनीयं शीघ्रानुमतिकर
णेहेतुंतत्कृतंनिश्चयंदर्शयति सतिसुतेसुतस्यदर्शनंममभविष्यति मृतवतस्तुतद्दर्शनंनभविष्यतीतिविशेषेणनिश्चयोस्तीत्यर्थः ॥६६॥ तस्यामातुरनु
मतेःपश्चाच्छ्रीशंकरःमनसासंन्यसनंव्यधादथसंन्यसनानंतरंदुष्टजलचरःशिशुंमुमोच संसाराख्येनाज्ञानजलचरेणदुष्टनक्रेणगृहीतस्यसंन्यासंवि
नानमोक्षइत्याशयः ततःकिंवृत्तमित्यपेक्षायामाह शिशुरत्रसन्नदीतटमुपेत्यशोकेनव्याप्तांजननीमेतद्वक्ष्यमाणमुवाच ॥६७॥

1563

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यदुवाचतदाह हेमातर्विधेयमाज्ञापयात्रास्मिन्लोकेयत्संन्यासिनाकर्तुंयोग्यंतन्निश्चयेनकरोमि नाहंसंदिहेसंशययुक्तोनभवामि ननुसंन्यासिनासं
ग्रहशून्येनत्वयाकर्तव्यंभोजनाच्छादनप्रदानंकःकरिष्यतीतिचेत्तत्राह वस्त्रेति ॥ येधनमिदंगृह्णंतिअमीवस्त्राशनेतवयथेष्टंप्रदेयुःयत्यस्मात्धनंमम
पितृसंबंधितस्मादित्यर्थः यन्ममपैतृकंतदिदमितिवा व० ॥६८॥ननुसंन्यस्यत्वयिगतेरोगाधीनेमद्देहेसतिमरणप्राप्तौचकेद्रक्ष्यंतीतिचेत्तत्राह देहइति
हेमातस्तवदेहेरोगवशगेचपुनर्मरणप्रसक्तौअमीसनाभयःसपिंडाःशक्तिमनुसृत्यदर्शनंकरिष्यंति मरणानंतरंदाहादिसंस्कारंयथाविधानंकुर्युस्तत्रहे
तुद्वयमाहार्थस्यममपैतृकधनस्यग्रहणाज्जनानांभयाच्च तस्मादल्पमपिभयंत्वयानकर्तव्यमित्यर्थः ॥६९॥ संस्कृतिंचामीकुर्युरितिसुतोक्तमसहमाना

मातर्विधेयमनुशाधियदत्रकार्यंसंन्यासिनातदुकरोमिनसंदिहेऽहं ॥ वस्त्राशनेतवयथेष्टममीप्रदेयुर्गृह्णंतियेधन
मिदंममपैतृकंयत् ॥ ६८ ॥ देहेंबरोगवशगेचसनाभयोऽमीद्रक्ष्यंतिशक्तिमनुसृत्यमृतिप्रसंगे ॥ अर्थग्रहाज्ज
नभयाच्चयथाविधानंकुर्युश्चसंस्कृतिममीनबिभेयमीषत् ॥ ६९ ॥ यज्जीवितंजलचरस्यमुखात्तदिष्टंसंन्यास
संगरवशान्ममदेहपाते ॥ संस्कारमेत्यविधिवत्कुरुशंकरत्वंनोचेत्प्रसूयममकिंफलमीरयत्वं ॥ ७० ॥

सत्युवाचयदिति संन्यासस्यसंगरोंऽगीकृतिस्तद्वशाज्जलचरस्यमुखाद्यज्जीवितंतवयज्जीवनंतदिष्टं संगरोंऽगीकृतौयुधीतिविश्वप्रकाशः तथापिममदे
हस्यपातेसतियत्रक्वापिस्थितस्त्वमागत्यविधिवन्ममदाहादिसंस्कारंकुरु ननुसंन्यासिनोममदाहादिकर्मण्यधिकाराभावात्कथमेवंवदसीतिचेत्तत्रा
ह हेशंकर परमेश्वरस्यतवनकिंचिदपिदोषावहमितिभावः ॥ ननुतथापिलोकविरुद्धत्वात्किमर्थमेवंविधेयमितितत्राह नोचेदिति मरणानंतरंदाहसं
स्कारस्याप्यलाभेसतित्वामुत्पाद्यमयाकिंफलंलब्धमितित्वमेवकथय ॥ ७० ॥

1564

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

एवंस्वदाहसंस्कारेऽतिनिर्बंधवतीमतिदुःखितांमातरमालक्ष्यश्रीशंकरउवाच हेंऽबान्हिदिवसेस्ववशगास्वाधीनारोगादिनापराधीनावशगावामांचित
य तत्रतवचिंतनसमयेसर्वंसमयमाचारंविहायागमिष्यामि समयःशपथाचारसिद्धांतेष्विति मेदिनी मदुक्तेविश्वासंप्राप्नुहि मृतावपिसंस्कारंकरिष्ये
॥ ७१ ॥ संन्यासिनाकर्तुमयोग्यमप्यंगीकुर्वतोममैकाप्रार्थनात्वयाप्यवश्यंस्वीकर्तव्येत्याशयवानाहायंशिशुर्विधवामनाथांमांत्यक्त्वासंन्यासंकृ
तवानितिमांप्रतिकस्यांचिदप्यवस्थायांत्वयानचिंतनीयं ननुत्वयापरित्यक्तत्वादतिकष्टवत्यामयकथंनाचिंतनीयमितितत्राह स्थितवतामयाय
त्परिमितंफलंत्वयाप्राप्तव्यंहेमातस्तस्माच्छतगुणंफलमहंप्रापयिष्ये ॥ ७२ ॥ अनेनप्रकारेणमातरमुक्त्वासगोत्रजनमुवाचेत्याहेत्थमिति यदुवा

अह्व्यंवरात्रिसमयेसमयांतरेवासंचितयस्ववशगावशगाथवामां ॥ एष्यामितत्रसमयंसकलंविहायविश्वास
माप्नुहिमृतावपिसंस्करिष्ये ॥ ७१ ॥ संन्यस्तवान्शिशुरयंविधवामनाथांक्षिप्त्वेतिमांप्रतिकदापिनचिंतनी
यं ॥ यावन्मयास्थितवताफलमापनीयंमातस्ततःशतगुणंफलमापयिष्ये ॥७२॥इत्थंसमातरमनुग्रहणेच्छुरु
क्त्वाप्रोचेसनाभिजनमेषविचक्षणाग्र्यः ॥ संन्यासकल्पितमनाव्रजितोस्मिदूरंतांनिक्षिपामिजननीमधवांभ
वत्सु ॥ ७३ ॥ एवंसनाभिजनमुत्तममुत्तमाग्र्यःश्रीमातृकार्यमभिभाष्यकरद्वयेन॥संप्रार्थयत्स्वजननींविनयेन
तेषुनिक्षेपयन्नयनजांबुनिषिंचमानां ॥ ७४ ॥ आत्मीयमंदिरसमीपगतांयथासौचक्रेविदूरगनदींजननीहिता
य ॥ तत्तीरसंश्रितयदूद्वहधामकिंचित्सानिम्नगारभतताडयितुंतरंगैः ॥ ७५ ॥

चतदाह संन्यासेति संन्यासायकल्पितंमनोयेनसोहंदूरंगंतुमुद्यतोस्मि तस्मात्पतिरहितांतांजननींभवत्सुरक्षार्थंस्थापयामि ॥७३॥एवंप्रकारेणोत्तमं
सनाभिजनमुत्तमाग्र्यःश्रीशंकरःश्रीमातृकार्यंसम्यगुक्त्वा मुकुलितेनहस्तद्वयेनसम्यक्प्रार्थयन्सन्नेत्रजांबुभिर्निषिंचमानांमातरंसःविनयेनतेषुसना
भिजनेषुनिक्षेपयत।७४।संन्यासग्रहणायश्रीशंकरस्यगमनंवर्णयिष्यन्गमनसमयेसयत्कृतवान्तद्वर्णयितुमारभते आत्मीयेति अथानंतरमसौयां
विदूरगांनदींमातुर्हितायस्वीयमंदिरसमीपगतांचक्रेतस्यास्तीरंसंश्रितस्ययदुश्रेष्ठस्यश्रीकृष्णस्यधामस्थानंकिंचित्सानदीतरंगैस्ताडयितुमारभत ७५

1565

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

किंचवर्षासुहरौदेवेंद्रेवर्षतिसति इंद्रोदुश्च्यवनोहरिरितिहलायुधः किंचिज्जलंभगवतोविष्णोरंतःपुरमागत्यमृत्सांप्रशस्तांमृत्तिकामथनुनोद ततश्चान
वद्याकृष्णमूर्तिःक्रमेणचलितुमारब्धप्रवृत्ता ननुतज्जलंतद्धिंसांकुतोनमुक्तवदितितत्राह देवोऽबिभेदिवभयंप्राप्तइवाभवत् भीरुर्हिंसांचकोपिनत्यज
तीत्यतइत्यर्थः ॥ ७६ ॥ एवंनद्याक्लेशितोभगवान्श्रीकृष्णोऽनंगयाऽशरीरयावाचाश्रीशंकरमवदत् उक्तवान्तांविशिनष्टिमातुश्चरणकमलद्वंद्वंप्रणिप
त्यकेनापिप्रकारेणमातुराज्ञांचपरिगृह्यगंतुकामंसकलदोषविनिर्मुक्तं एतेनस्वस्याज्ञानादिदोषनिवृत्त्यर्थंतस्यगमनेच्छावारिता तर्हिकिमर्थंतस्यग
मनेच्छेत्यतआह जनानांहितंएकोमुख्योरसोयस्यतंतथाचलोकोपकारायतस्यगमनसंन्यासग्रहणादिकमितिभावः ॥ ७७ ॥ यदुवाचतदाह

वर्षासुवर्षतिहरौजलमेत्यकिंचिदंतःपुरंभगवतोपनुनोदमृत्सां ॥ आरब्धमूर्तिरनघाचलितुंक्रमेणदेवोबि
भेदिवनमुंचतिभीरुहिंसां ॥ ७६ ॥ प्रस्थातुकाममनघंभगवाननंगवाचावदत्कथमपिप्रणिपत्यमातुः ॥
पादारविंदयुगलंपरिगृह्यचाज्ञांश्रीशंकरंजनहितैकरसंसकृष्णः ॥ ७७ ॥ आनेष्टदूरगनदींकृपयाभवान्यां
सामातिमात्रमनिशंबहुऊर्मिहस्तैः ॥ क्लिश्नातिताडनपरावदकोभ्युपायोवस्तुंक्षमेननितरांद्विजपुत्रया
सि ॥ ७८ ॥ आकर्ण्यवाचमितितामतनुंगुरुर्नःप्रोद्धृत्यकृष्णमचलंशनकैर्भुजाभ्यां ॥ प्रातिष्ठपन्निकटएवन
यत्रबाधानघेत्युदीर्यसुखमास्वचिरायचेति ॥ ७९ ॥

यांदूरगनदींभवान्कृपयाआनीतवान्साऽत्यंतंनिरंतरमनंतोर्मिरूपैर्हस्तैस्ताडनपरामांक्लिश्नाति क्लेशनिवृत्तौवदकोभ्युपायोयतोवस्तुंनसमर्थोभवामि
हेद्विजपुत्र त्वंयास्यतःसुतरांवस्तुंनक्षमेइत्यर्थः ॥ ७८ ॥ श्रीकृष्णोक्तंश्रुत्वाकिंकृतवानित्यपेक्षायामाहाकर्ण्येति इत्येवंतामतनुमशरीरांवाचंश्रुत्वा
नोऽस्माकंगुरुरितिग्रंथकारोक्तिः अचलमपिकृष्णंशनकैर्भुजाभ्यांप्रकर्षेणांगभंगादिकंविनैवोद्धृत्यसमीपएवप्रकर्षेणपुनश्चलनंयथानस्यात्तथास्था
पितवान् ननुनिकटस्थापनेनपुनरपिनदीबाधाभविष्यतीतिचेतत्राह यस्मिन्स्थानेनद्याबाधानास्तितत्रेत्यर्थः चिरकालंसुखमुपविशेत्युक्त्वाच
त्रातिष्ठपदित्यन्वयः ॥ ७९ ॥

1566

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तस्माच्छ्रीकृष्णात् भक्तिवशात्स्वमातुरप्यनुज्ञांगृहीत्वासंसारमहासमुद्राद्विरक्तिमान्संन्यसनायदूरंगंतुंमनोऽकृत किमर्थमित्यतआह किमिति नौकायांस्थितः समुद्रेकिंपतितुमिच्छति नैवेच्छतितद्वद्वैराग्यादिलक्षणनौस्थितःसंसारसमुद्रेपतितुंनैवेच्छतीत्यर्थः॥८०॥इत्थमनेनप्रकारेणससुधीःनिशांतात्सदनान्निरगात्निर्गतवानितियोजना निशांतपस्त्यसदनंभवनागारमंदिरमित्यमरः॥ तंविशिनष्टि माताचलक्ष्मीश्चमातृलक्ष्मीशौनिरवग्रहोनिरवधिर्मातृविष्णोरनुग्रहोयस्मिन् एतेनमातृश्रीकृष्णाभ्यांप्रसन्नतापूर्वकंप्रेषितइतिबोधितंनन्वतिशीघ्रंकिमर्थंगतवानित्यतआह घटजेनागस्त्येनबोधि

तस्मात्समातुरपिभक्तिवशादनुज्ञामादायसंसृतिमहाब्धिविरक्तिमान्सः ॥ गंतुंमनोव्यधितसंन्यसनायदूरंकिन्नौ
स्थितःपतितुमिच्छतिवारिराशौ ॥ ८० ॥ इत्थंसुधीःसनिरवग्रहमातृलक्ष्मीशानुग्रहोघटजबोधितभाविवेदी ॥
एकांततोविगतभोग्यपदार्थतृष्णःकृष्णेप्रतीचिनिरतोनिरगान्निशांतात् ॥ ८१ ॥ यस्यात्रिनेत्रापरविग्रहस्यकामे
ननास्थीयतदृक्पथेपि ॥ तन्मूलकःसंसृतिपाशबंधःकथंप्रसज्येतमहानुभावे ॥ ८२ ॥

तंभविष्यंजानातीतितथा ननुजीवनोपायमेवकुतोनकृतवानित्यतआहात्यंतंविगतानिवृत्ताभोग्यपदार्थेभ्योदेहादिभ्यस्तृष्णायस्यसयतःकृषिर्भूवाचकःशब्दोणश्चनिर्वृतिवाचकःतयोरैक्यंपरंब्रह्मकृष्णइत्यभिधीयतइत्युक्तत्वात्कृष्णेप्रतीचिप्रत्यगभिन्नेब्रह्मणिनितरांरतइत्यर्थः ॥८१॥ तस्मिन्नैतच्चित्रमित्याह यस्यत्रीणिनेत्राणिकामदाहकाग्निसोमसूर्यात्मकानियस्यसअपरोविग्रहोयस्यतस्यापरविग्रहस्योतिवा दृष्टिपथेपिकामेननास्थीयतकामःस्थातुंनशक्तस्तस्मिन्महानुभावेकाममूलकःसंसृतिपाशबंधःकथंप्रसज्येत ॥ ८२ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नसुनित्यमुक्तस्यशिवस्यसंन्यासेनकिमाधिक्यमितिचेत्तत्राह॥ स्मरेणेति ॥ विधिर्ब्रह्मा [illegible] द्रस्तौकामेनमोहितौजातुकदाचिदुत्पथौचसुतानुधा
वनेनताराग्रहेणचोन्मार्गौचतथाऽहंशिवोपिकामेनमोहितोमोहिन्याःकेशस्तनादिनिरीक्षणपरोऽहहेत्यत्यंताश्चर्यै मोहिनीमगामनुगतवानितिविचा
र्यसःशिवोयतीशस्यवपुषाकामेनकृतायाःपीडायाःवार्त्तयाप्युज्झितोऽजागरीदतिशयेनजागर्तिस्मेत्यर्थःपृथ्वी ॥८३॥किंचयोधानुष्कवरोधनुष्मच्छ्रे
ष्ठोमारःकामोऽसुरान्निष्पत्राकुरुत सपुंखानांशराणामपरपार्श्वेषुनिर्गमनान्निष्पत्रान्कृतवान् तथासुरानपिसपत्राकरोत्सपुंखशरप्रवेशनेनसपत्रा

स्मरेणकिलमोहितौविधिविधूचजातूत्पथौतथाहमपिमोहिनीकचकुचादिवीक्षापरः ॥ अगामहहमो
हिनीमितिविमृश्यसोऽजागरीद्यतीशवपुषाशिवःस्मरकृतार्तिवार्तोज्झितः ॥८३॥ निष्पत्राकुरुतासुरा
नपिसुरान्मारःसपत्राकरोदप्यन्यानिहनिष्कुलाकृततरांगंधर्वविद्याधरान् ॥ योधानुष्कवरोनराननल
सात्कृत्योदलासीदलंयस्तस्मिन्नशुशूरतैषमुनिभिर्वर्ण्यःकथंशंकरः ॥ ८४ ॥

न्कृतवान् सपत्रनिष्पात्रदतिव्यथनइतिडाच् तथाऽन्यानपिगंधर्वविद्याधरानिहजगतिनिष्कुलाकृततरांनिर्गतंकुलमंतरवयवानांसमुहोयेभ्यस्त
थाभूतानत्यंतंकृतवान्निष्कुलान्निष्कोषणेइतिडाच् तथानराननलसात्साकल्येनाग्निरूपान्कृत्वाभृशंदग्ध्वालमुदलासीत्सम्यग्दीप्तिमानभूत्तस्मिन्का
मेयःअशुशूरतशूरतांकृतवान्सैषःश्रीशंकरोमुनिभिःकथंवर्ण्योनकथमपीत्यर्थः शार्दू॰ ॥ ८४ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पठितंश्रुतमनूनकमखंडमादराद्रहस्येकांतआलोक्यप्रविभज्यचसारासारविभागंविधार्यनिजसुखेनिमज्जतःविधेयान्शिष्यान्ससुधीःश्रीशंकरोवि
दधेतमांसम्यक्कृतवान् ॥ ३२ ॥ विनीतशालीविनयवान् वसं॰ ॥ ३३ ॥ अन्योन्ययोगस्यसंयोगस्यविरहस्त्वनयोःशंकरतज्जनन्योरसह्यो
यद्यपितथापिवोढुंपरिणयंकर्तुंनोइच्छतिस्म ॥ तत्रहेतुमाह ॥ मनुष्यभावाद्देवाधिदेवत्वात् मेरुंप्राप्तःकिंदुष्प्रदेशंदुष्टस्थानमभिवांछतिनैववांछती
त्यर्थः ॥ ३४ ॥ आप्ताश्चबंधवश्चतेआप्ताश्चतेबंधवश्चेतिवा ॥ कृतासंपादिताविद्यायेनतममुंश्रितंगार्हस्थ्यंयेनएवंविधंचिकीर्षवःकर्तुमिच्छ

पठितंश्रुतमादरात्पुनःपुनरालोक्यरहस्यनूनकं॥प्रविभज्यनिमज्जतःसुखेसविधेयान्विदधेतमांसुधीः ॥ ३२ ॥ स
र्वार्थतत्त्वविदपिप्रकृतोपचारैःशास्त्रोक्तभक्त्यतिशयेनविनीतशाली ॥ संतोषयन्सजननीमनयत्क्रियंतिसमानि
तोद्विजवरैर्दिवसानिधन्यः ॥ ३३ ॥ साशंकरस्यशरणंसचतज्जनन्यात्यन्योन्ययोगविरहस्त्वनयोरसह्यः ॥ नो
वोढुमिच्छतितथाप्यमनुष्यभावान्मेरुंगतःकिमभिवांछतिदुष्प्रदेशं ॥ ३४ ॥ कृतविद्यममुंचिकीर्षवःश्रितगार्ह
स्थ्यमथाप्तबंधवः ॥ अनुरूपगुणामचिंतयन्ननवद्येषुकुलेषुकन्यकां ॥३५॥ अथजातुदिदृक्षवःकलाववतीर्णमु
नयःपुरद्विषं ॥ उपमन्युदधीचिगौतमत्रितलागस्त्यमुखाःसमाययुः ॥३६॥ प्रणिपत्यसभक्तिसन्नतःप्रसवित्र्या
सहतान्विधानवित् ॥ विधिवन्मधुपर्कपूर्वयाप्रतिजग्राहसपर्ययामुनीन् ॥ ३७ ॥

वोऽनुरूपागुणायस्यास्तथाभूतांकन्यकांदोषवर्जितेषुकुलेष्वचिंतयन् वि॰ ॥ ३५ ॥ अथानंतरंजातुकदाचित्त्रिपुरघ्नंमहादेवंकलियुगेश्रीशंकरा
त्मनाऽवतीर्णंद्रष्टुमिच्छवउपमन्युप्रमुखामुनयःसमाययुः ॥ ३६ ॥ भक्त्यासम्यक्नतोनम्रःप्रसवित्र्याजनन्यासहप्रणामपूजादिविधानवित्सश्रीशं
करस्तान्मुनीन्प्रणिपत्यप्रकर्षेणनत्वा मधुपर्कःपूर्वमादौयस्यास्तयासपर्ययापूजयाप्रतिजग्राह स्वागतंकृतवानित्यर्थः ॥ ३७ ॥

1569

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नितांतमत्यंतंहृदयंगमोमनोहरःसारोयस्यांतुलिताऽमृतधाराययातांगांवरंगृहाणेतिवाचंनिशम्यरचितोऽजलिबंधोयेनसबद्धांजलिः सुष्ठुसंधाप्रति
ज्ञायस्यसभूपतिःस्वोपमंस्वसदृशंपुत्रमियेषइच्छतिस्म ॥ २७ ॥ एवंप्रार्थितःश्रीशंकरस्तंराजानमुवाच एतत्सहस्रसंख्याकंहाटकंममहितायना
स्तितर्हिकथंविधेयमितितत्राह नोऽस्माकंगृहवासिजनायतुदेहि तवेहितंमनसाऽभिलषितंशीघ्रंभविष्यतितस्मात्पूर्णमनसाशीघ्रंयाहिगच्छेतिमध्य
मणिन्यायेनशीघ्रपदमुभयत्रसंबंधनीयं ॥ २८ ॥ एवंजनसमाजउक्त्वापुनारहसिएकांतेराजवर्यकुलस्यवृद्धेर्निमित्तभूतांश्रुतिप्रसिद्धां वित्तंकी

तांनितांतहृदयंगमसारांगांनिशम्यतुलितामृतधारां ॥ भूपतिःसरचितांजलिबंधःस्वोपमंसुतमियेषसुसंधः ॥
॥ २७ ॥ नोहितायममहाटकमेतद्देहिनस्तुगृहवासिजनाय ॥ ईहितंतवभविष्यतिशीघ्रंयाहिपूर्णमनसेत्यवद
त्तं ॥ २८ ॥ राजवर्यकुलवृद्धिनिमित्तांव्याजहाररहसिश्रुतिवित्तां ॥ इष्टिमस्यसकलेष्टविधातुस्तुष्टिमापहित
याक्षितिनेता ॥ २९ ॥ सविशेषविदासभाजितःकविमुख्येनकलाभृतांवरः ॥ अगमत्कृतकृत्यधीर्निजां
नगरीमस्यगुणानुदीरयन् ॥ ३० ॥ बहवःश्रुतिपारदृश्वनःकवयोध्यैषतशंकराद्गुरोः ॥ महतःसुमहांतिदर्श
नान्यधिगंतुंफणिराजकौशलीं ॥ ३१ ॥

बेधलेवाच्यलिंगंख्यातेविचारितइतिमेदिनी ॥ अस्यराज्ञःसकलेष्टानांविधातापरमात्मातस्यइष्टिंपूजांव्याजहारतत्प्रकारमुक्तवान् तयाइष्ट्याभू
मिनेताराजातुष्टिमापेत्यर्थः ॥ २९ ॥ विशेषज्ञेनकविमुख्येनश्रीशंकरेणसभाजितःपूजितःकलाभृतांमध्येश्रेष्ठः कृतंकृत्यंययासाबुद्धिर्यस्यसराजा
ऽस्यगुणान्वर्णयन्स्वीयांनगरीमगमत्गतवान् वि० ॥ ३० ॥ एवंकेरलभूमिपतेर्वरप्रदानादिकमुपवर्ण्यवृत्तांतांतरंवर्णयितुमुपक्रमते ॥
बहवःश्रुतिपारदृश्वनोवेदपारंदृष्टवंतःकवयःश्रीशंकरान्महतःगुरोर्महांतिदर्शनानिशास्त्राणिफणिराजस्यशेषस्यकुशलतामधिगंतुमध्यैषताध्ययनंकृत
वंतइत्यर्थः ॥ ३१ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1571

अनुभवसैंबाधितहै नेत्रसंयोगसैंअव्यवहितउत्तरक्षणमैंचाक्षुषज्ञानहोवैहै तैसाही अनुभवहोवैहै यातैंउक्तरीतिअसंगतहै औउक्तरीति
सैंशक्तिकेदोज्ञानसिद्धहोवैहै एकतोसंस्कारकाउद्बोधकसामान्यज्ञान औदूसरासंस्कारजन्यभ्रमज्ञान इसरीतिसैंशक्तिकेदोज्ञानवी अनु
भवविरुद्धहै नेत्रसंयोगहोतैंहीइदंरजतंयह एकहीज्ञान अनुभवसिद्धहै यातैंरजतानुभवजन्यसंस्कारसहित नेत्रसंयोगतैंइदंरजतं
यहभ्रमहोवैहै यह कहनावीसंभवैनहीं औस्रगंधिचंदनंयाज्ञानकूंअलौकिकप्रत्यक्षमानैंतौवीइदंरजतंयहज्ञानतोज्ञानलक्षणअ
लौकिकसंबंधजन्यसंभवैनहीं काहेतैंस्रगंधिचंदनंयहज्ञानहुयेंस्रगंधकेउत्कर्षअपकर्षकासंदेहहोवैहै यातैंस्रगंधकेउत्कर्षअप
कर्षकानिश्चयरूपप्राकट्यअलौकिकज्ञानतैंहोवैनहीं यहमान्याचाहिये जोअलौकिकज्ञानतैंवीविषयकाप्राकट्यहोवैतौस्रगंधकेअ
पकर्षादिकनकासंदेहसंभवैनहीं औइदंरजतंयाभ्रमतैंऔसत्यरजतमैंइदंरजतंयाप्रमातैंरजतकीप्रकटतासमहोवैहै जोभ्रमस्थ
लमैंरजतकीप्रकटतान होवैं तौरजतकेपरिमाणादिकनकासंदेहहुयाचाहिये औपरिमाणादिकनकासंदेहहोवैनहीं यातैंभ्रमज्ञा
नतैंरजतकीप्रकटताहोवैहै औज्ञानलक्षणसंबंधजन्यज्ञानतैंविषयकीप्रकटताहोवैनहीं यातैंइदंरजतंयाभ्रमज्ञानकाहेतुज्ञानलक्ष
णसंबंधनहीं औविचारकरैंतौज्ञानरूपसंबंधकहूंवीसंभवैनहीं काहेतैंज्ञानलक्षणसंबंधसैंअलौकिकप्रत्यक्षहोवैहै यापक्षकायहनि
ष्कर्षहै जहांएकपदार्थकीअनुभवजन्यस्मृतिहोवै अथवाअनुभवजन्यसंस्कारहोवै औअपरपदार्थसैंइंद्रियकासंबंधहोवै तहांइंद्रि
यसंबंधीमैंस्मृतिगोचरपदार्थकीअथवासंस्कारगोचरपदार्थकीप्रतीतिहोवैहै इंद्रियसंबंधीपदार्थतौविशेष्यरूपतैंप्रतीतहोवैहै
औस्मृतिगोचरपदार्थविशेषणरूपतैंप्रतीतहोवैहै जैसैंस्रगंधिचंदनंयाज्ञानमैंनेत्ररूपइंद्रियसंबंधीचंदनविशेष्यहै औस्मृति
गोचरस्रगंधविशेषणहै तैसैंइदंरजतंयाभ्रमज्ञानमैंवीइंद्रियसंबंधीशक्तिविशेष्यहै औस्मृतिकागोचरअथवासंस्कारकागो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1572

चरजतत्वविशेषणहै विशेषणविशेष्यदोनूंकाज्ञानप्रत्यक्षहै यापक्षकाअंगीकारहोवैतोअनुमानप्रमाणकाउच्छेदहोवैगा काहेतें
पर्वतोवन्हिमान ऐसाअनुमितिज्ञान अनुमानप्रमाणतेंहोवैहै हेतुमेंसाध्यकीव्याप्तिकेस्मरणतें अथवासाध्यकीव्याप्तिकेउद्बुद्ध सं
स्कारनतेंअनुमितिज्ञानहोवैहै यह अर्थअनुमाननिरूपणमेंनिर्णीतहै साध्यकीव्याप्तिकीस्मृतिहोवैं नव्याप्तिनिरूपकसाध्यकी
वीस्मृतिहोवैहै यातेंपर्वतसेंनेत्रकासंयोग औवन्हिकीस्मृतिसें पर्वतोवन्हिमान् ऐसेंप्रत्यक्षज्ञानकासंभवहोतेंपक्षमेंसाध्यनिश्चय
रूपअनुमितिज्ञानकाजनक अनुमानप्रमाणकाअंगीकारनिष्फलहै औगोतमकणादकपिलादिकसर्वज्ञकृतसूत्रनमेंअनुमानप्रमा
णप्रत्यक्षसेंभिन्नकह्याहै जोअनुमानप्रमाणनिष्प्रयोजनहोतातौंसूत्रनमेंनहींकहते यातेंअनुमानकाप्रयोजनसाधकज्ञानरूप
संबंधजन्यअलौकिकप्रत्यक्षअलीकहै औजोअन्यथाख्यातिवादी ऐसेंकहै प्रत्यक्षज्ञानकीविषयतासेंअनुमितिज्ञानकीविषय
ताविलक्षणहै इसीवास्तेप्रत्यक्षकेविषयमेंपरिमाणादिकनंका संदेह नहींहोवैहै औअनुमितिकेविषयमें परिमाणादिकनकासं
देहहोवैहै इसरीतिसेंपरोक्षताअपरोक्षतारूपविषयताकाभेदअनुमितिज्ञान औप्रत्यक्षज्ञानकेभेदसेंहोवैहै यातेंपरोक्षतारूपवि
षयताकासंपादकप्रत्यक्षज्ञाननहीं किंतुअनुमितिज्ञानहै ताकाहेतुअनुमानप्रमाणहै यह कथनवीसंभवैनहीं काहेतेंलौकिकप्रत्य
क्षकीविषयतातोअनुमितिसेंविलक्षणहै परंतुस्रगंधिचंदन इत्यादिकज्ञानस्रगंधादिकअंशमेंअलौकिकहै तहांस्रगंधकाज्ञानअनु
मितिकेसमानहै जैसेंअनुमितिज्ञानकेविषयमेंउत्कर्षादिक अनिर्णीतहोवैहै तैसेंस्रगंधकेउत्कर्षादिकवीअनिर्णीतहै यातेंअलौकिक
प्रत्यक्षकीविषयताकाअनुमितिकीविषयतासेंभेदनहीं औभ्रमरूपअलौकिकप्रत्यक्षकीविषयतारजतत्वादिकनमेंहै ताकातो यद्यपिअनुमि ५
तिकीविषयतासेंभेदअनुभवसिद्धहै इसीवास्तेरजतकीअल्पतादिकनकासंदेहहोवैनहीं तथापिज्ञानलक्षणसंबंधजन्यअलौकिकप्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1573

त्यक्षप्रमाकीविषयतासेंभेदनहीं जैसेंअनुमितिकेविषयमेंअप्रमाकत्वहै तैसेंअलौकिकप्रत्यक्षप्रमाकेविषयगंधमेंअप्रमाकत्वहै
यातेंज्ञानलक्षणसंबंधसेंपर्वतमेंवन्हिकाअलौकिकप्रत्यक्षसेंप्रकाससंभवैहै अनुमितिज्ञानवास्तेअनुमानप्रमाणव्यर्थहोवेगा औ
अनुमानप्रमाणसर्वज्ञवचनसिद्धहै यातेंअनुमानकीव्यर्थतासंपादकअलौकिकप्रत्यक्षअसिद्धहै औजोयहकह्याविलक्षणविषयता
कासंपादकअनुमितिज्ञानहै ताकाहेतुअनुमानप्रमाणव्यर्थनहीं यहकथनहीअसंगतहै काहेतेंजहांअनुमानप्रमाणतेंअनुमिति
होवैतहांसारेअलौकिकप्रत्यक्षकीसामग्रीहै जैसेंपर्वतमेंवन्हिकीअनुमितिसेंपूर्वधूमदर्शनव्याप्तिज्ञानतोअनुमितिकीसामग्रीहै
औपर्वतसेंनेत्रकासंबंधऔवन्हिकीस्मृतियहअलौकिकप्रत्यक्षकीसामग्रीहै दोनूंज्ञानोकीदोसामग्रीहोतेंपर्वतमेंवन्हिकाप्रत्य
क्षरूपहीज्ञानहोवैगाअनुमितिज्ञानहोवैनहीं यातेंअनुमानप्रमाणव्यर्थहीहोवैहै काहेतेंयहन्यायशास्त्रकानिर्णीतअर्थहै जहांए
कगोचरअनुमितिसामग्रीकाऔअपरगोचरप्रत्यक्षसामग्रीकासमावेशहोवैतहांअनुमितिसामग्रीप्रबलाहै जैसेंपर्वतसेंनेत्रसंयो
गतोपर्वतकेप्रत्यक्षकीसामग्रीकाऔवन्हिकीअनुमितिकीसामग्रीकासमावेशहुयां वन्हिकीअनुमितिहोवैहै पर्वतकाप्रत्यक्षज्ञानहो
वैनहीं जहांधूमसेंऔवन्हिसेंनेत्रकासंयोगहोवै औधूममेंवन्हिकीव्याप्तिकाज्ञानहोवैतहांवन्हिकीअनुमितिकीसामग्रीहै औवन्हिकेप्र
त्यक्षकीसामग्रीहै यातेंसमानगोचरउभयज्ञानकीसामग्रीहै तहांप्रत्यक्षसामग्रीप्रबलहै यातेंवन्हिकाप्रत्यक्षहीज्ञानहोवैहै व-
न्हिकीअनुमितिहोवैनहीं औपुरुषमेंपुरुषोनवाऐसासंदेहहोयकेपुरुषत्वव्याप्यकरादिमानयंऐसाप्रत्यक्षरूपपरामर्शज्ञान
औपुरुषतेंनेत्रकासंयोगहोवै तहांपरामर्शतोपुरुषकीअनुमितिकीसामग्रीहै औपुरुषकेनेत्रसंयोगपुरुषकेप्रत्यक्षकीसामग्रीहै त
हांपुरुषकाप्रत्यक्षज्ञानहीहोवैहै पुरुषकीअनुमितिहोवैनहीं यातेंएकविषयकेदोनूंज्ञानोंकीसामग्रीहोवै तिनमेंप्रत्यक्षसामग्रीप्रबलहै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वृति· यातें वन्हिकी अनुमितिसामग्री होतेंवी अलौकिकसंबंधरूपसामग्रीतें वन्हिका प्रत्यक्षज्ञान ही होवेगा इसरीतिसें ज्ञानलक्षणअ-
५१ लौकिकसंबंधतें प्रत्यक्षज्ञानकी उत्पत्ति मानें अनुमानप्रमाण व्यर्थ है जो नैयायिक ऐसें कहै यद्यपि भिन्नविषय होवें तहां प्रत्यक्षसाम- प्र· ७
ग्रीसें अनुमितिसामग्री प्रबल है औ समानविषय होवै तहां अनुमितिसामग्रीसें प्रत्यक्षसामग्री प्रबल है तथापि समानविषय होतेंवी-
लौकिकप्रत्यक्षकी सामग्री अनुमितिसामग्रीसें प्रबल है औ अलौकिकप्रत्यक्षकी सामग्री तो अनुमितिकी सामग्रीसारें दुर्बल है. या-
तें पर्वतमें वन्हिकी अनुमितिसामग्रीसें अलौकिकप्रत्यक्षसामग्रीका बाध होनेतें अनुमानप्रमाण निष्फल नहीं यह कहनावी समी-
चीन नहीं काहेतें जहां स्थाणुमें स्थाणुर्न वा ऐसा संदेह होयकै पुरुषत्वव्याप्यकरादिमानयं ऐसा भ्रम होयकै पुरुष एवायं ऐसा भ्रम-
रूप प्रत्यक्ष होवै है तहां नैयायिकवचनकी रीतिसें अनुमिति हुई चाहिये प्रत्यक्ष नहीं हुया चाहिये काहेतें उक्तस्थलमें स्थाणुमें पुरुषत्व-
का प्रत्यक्ष होनेतें भ्रमप्रत्यक्ष है औ भ्रमप्रत्यक्षकी तेरे मतमें अलौकिकसामग्री है यातें अनुमितिसामग्रीसें अलौकिकप्रत्यक्षकी सामग्री-
कूं दुर्बल मानें उक्तस्थलमें अनुमिति हुई चाहिये औ जो उक्तस्थलमें पुरुषका भ्रम अनुमितिरूप मानें तो उत्तरकालमें पुरुषं साक्षात्करोमि ऐ-
सा अनुव्यवसाय होवै है सो नहीं होवैगा पुरुषमनुमिनोमि ऐसा अनुव्यवसाय हुया चाहिये यातें दोनूं समानविषय होवै तहां लौकिकप्र-
त्यक्षसामग्रीकी नाईं अलौकिकप्रत्यक्षसामग्रीवी प्रबल है अनुमितिसामग्री दुर्बल है यातें ज्ञानलक्षणासंबंधसें प्रत्यक्षकी उत्पत्ति मा-
नें तौ अनुमितिज्ञानकूं बाधिके पर्वतादिकनमें वन्हिआदिकनका प्रत्यक्षज्ञान ही होवेगा यातें अनुमानप्रमाण निष्फल होवेगा इसका-
रणतें जो अनुमानप्रमाण मानें ताके मतमें स्मृतिज्ञानसहित इंद्रियसंयोगतैं वा संस्कारसहित इंद्रियसंयोगतें व्यवहितवस्तुका प्रत्यक्षज्ञान होवै ५
नहीं यातें शुक्तिकारजतत्वरूपतें प्रतीतिरूप अन्यथाख्याति संभवै नहीं औ अनिर्वचनीयख्यातिवादमें जो दोष कह्या है अनिर्वचनीय आ-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1575

तिकेमतमैंविषयकी ओज्ञानकीकारणतादोषमैं मानैंहैं अन्यथाख्यातिवादमैं ज्ञानकीकारणतामानैंहैं विषयकी नहीं यातैं अन्यथाख्याति
वादमैंलाघवहै ओअनिर्वचनीयख्यातिवादीकूं अन्यथाख्यातिवीमाननीहोवैहै अन्यथाख्यातिवादीकूं अनिर्वचनीयख्यातिमाननी
होवैनहीं यातैंबीलाघवहै यहकथनबीअविवेकमूलकहै काहेतैं अन्यथाख्यातिवादीकूं श्रुतिस्मृतिकी आज्ञातैंस्वप्नमैंतौ अनिर्वच
नीयख्यातिअवश्यमानीचाहिये वेदउक्तअर्थका पुरुषमतिकल्पितयुक्तिसमुदायसैं अन्यथाभावकल्पनआस्तिककूं योग्यनहीं ओशु
क्तिरजतका तादात्म्यप्रतीतहोवैहै तैसैंइदंपदार्थमैंरजतत्वकासमवायप्रतीतहोवैहै तैसैंइदंपदार्थका औ रजतका तादात्म्यप्रतीतहोवैहै
इदंपदार्थशक्तिहै शक्तिरजतका तादात्म्य अन्यस्थानमैं प्रसिद्धनहीं यातैं पुरोवर्त्तिदेशमैं शक्तिरजतकातादात्म्यअनिर्वचनीयउपजै
है जोअनिर्वचनीयतादात्म्यकीउत्पत्तिनहींमानैंतौअप्रसिद्धकी अपरोक्षप्रतीतिनहीं होवैगी औतादात्म्यकी अपरोक्षप्रतीतिहोवैहै
औजोनैयायिकआग्रहतैं यहकहै शक्तिमैं रजतत्वका समवायही भासैहै याकाबी यहअर्थहै समवायसंबंधतैंरजतत्वभासैहै औशु
क्तिरजतकातादात्म्यभासैनहीं ऐसाकहै तौ शक्तिज्ञानतैं उत्तरकालमैंनेदंरजतं ऐसा बाधहोवैहै ताकाबाध्यइदंपदार्थमैंरजतकाता
दात्म्यहै जोभ्रमकालमैं इदंपदार्थमैंरजतकातादात्म्यनहींभासै तौबाधनिर्विषयहोवैगा जोकेवलरजतत्वकासमवायही शक्तिमैंभासै
तौनायंरजतत्वं ऐसाबाधहुयाचाहिये यातैं शक्तिमैं रजतकातादात्म्यभासैहै सो शक्तिरजतकातादात्म्यउभयसापेक्षहै कहूं प्रसिद्ध
नहीं यातैं अनिर्वचनीयतादात्म्यकीउत्पत्तिअन्यथाख्यातिवादमैं आवश्यकहै केवलअन्यथाख्यातिसैंनिर्वाहहोवैनहीं औअनि
र्वचनीयख्यातिवादीकूं अन्यथाख्यातिमाननीहोवैहै औअद्वैतग्रंथकारोंनेमानीहै यहकथनबी अद्वैतग्रंथनकेअभिप्रायकेअज्ञा
नतैंहै काहेतैं अद्वैतवादमैं कहूंबी अन्यथाख्यातिनहीं सारे अनिर्वचनीयख्यातिहै बहुतक्याकहैं जहांप्रमाज्ञानकहैहैं तहांबीअ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

द्वैतसिद्धांतसैं विषय औ ज्ञान अनिर्वचनीय है औ कितनेंस्थानोंमें अन्यथाख्याति लिखी है ताका यह तात्पर्य है जहां अधिष्ठान आरोप्य
कासंबंध होवै औ परोक्षभ्रम होवै तहां अन्यथाख्यातिबी संभवै है परंतु सारे अन्यथाख्याति संभवै नहीं जहां आरोप्य व्यवहित हुयां
अपरोक्षभ्रम होवै तहां अनिर्वचनीयख्याति आवश्यक है यातें आवश्यक अनिर्वचनीयख्याति ही सारे मानी चाहिये इस रीतिसें अ
न्यथाख्यातिका कथन संभवाभिप्रायतें है अंगीकरणीयत्वाभिप्रायतें नहीं जहां आत्मसत्ताकी अनात्ममें अन्यथाख्याति कही तहां
बी आत्मसत्ताका अनिर्वचनीयसंबंध उपजै है इस रीतिसें जहां अनिर्वचनीयसंबंधीकी उत्पत्ति नहीं संभवै तहां अनिर्वचनीयसं
बंधका अंगीकार है तैसें परोक्षभ्रम होवै तहां बी अनिर्वचनीय विषयकी उत्पत्ति ब्रह्मविद्याभरणमें लिखी है परंतु परोक्षभ्रम होवै
तहां अन्यथाख्याति मानैं तौ बी दोष नहीं है इस वास्तै सरलबुद्धितें परोक्षभ्रम अन्यथाख्यातिरूप कह्या है औ जो ऐसें कहै तदेवेदं रज
तं इस रीतिसें शुक्तिमें रजतका प्रत्यभिज्ञाभ्रम होवै तहां अनिर्वचनीय रजतकी पुरोवर्ति देशमें उत्पत्ति मानैं तौ सन्निहित रजतमें तौ तत्ता
संभवै नहीं यातें देशांतरस्थ रजतवृत्ति रजतत्वकी औ तत्ताकी शुक्ति पदार्थमें प्रतीति होवै है अथवा तादात्म्यसंबंधसें देशांतरस्थ रजतकी
प्रतीति होवै है यातें उक्तस्थलमें अन्यथाख्याति आवश्यक है यह कथन बी असंगत है काहेतें उक्त प्रत्यभिज्ञामें बी अनिर्वचनीय रजत ही
विषय है देशांतरस्थ नहीं काहेतें प्रमातासैं संबंध विना अपरोक्ष अवभास संभवै नहीं औ देशांतरस्थ रजतका प्रमातासें संबंध बाधित
है यातें देशांतरस्थ रजतकी प्रतीति नहीं औ जहां यथार्थ प्रत्यभिज्ञा होवै तहां बी तत्ता अंशमें स्मृति है यह सिद्धांत है यातें तदेवेदं रजतं
यह भ्रमरूप प्रत्यभिज्ञा बी तत्ता अंशमें स्मृति है औ इदं रजतं इतने अंशमें अनिर्वचनीय प्रत्यक्ष है यातें कहूं बी अन्यथाख्याति आव- ५२
श्यक नहीं जहां अनिर्वचनीय विषयकी उत्पत्ति नहीं संभवै तहां अनिर्वचनीय संबंधकी उत्पत्ति होवै है जैसें आत्म अनात्मका अन्योन्या

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1577

वछेदकसो होवैहै शाब्दबोधकीजनकतासकलसक्तपदमैंरहैहै नाकेसमानदेशमैंशक्तिरहैहै यातैंशाब्दबोधकीजनकताकाअ
वछेदकशक्तिसंभवैहै लक्षणिकपदमैंवीशाब्दबोधकीजनकतामानेतौलाक्षणिकपदमैंशक्तिहैनहीं साब्दबोधकीजनकता
है यातैंन्यूनदेसवृत्तिहोनेसैंशाब्दबोधकीजनकताकाअवछेदकशक्तिसोसंभवैनहीं औशक्तलाक्षणिकसारेपदनमैंरहनेवा-
ला एकधर्महैनहीं यातैंशाब्दबोधकीजनकतानिरवछेदकहोवैगी सोनिरवछेदकजनकताअलीकहै दंडकुलालादिकनमैंघटादि
कनकीजनकताकेअवछेदकदंडत्वकुलालत्वादिकहै यातैंनिरवछेदकजनकताअप्रसिद्धहै इसरीतिसैं लाक्षणिकपदकूं शाब्दबो
धकीजनकतानहीं यहमीमांसाकामतहै औअद्वैतवादकाअतिविरोधीहै काहेतैं महावाक्यनमैंसकलपदलाक्षणिकहैं तिननैशा
ब्दबोधकीअनुपपत्तिहोवैगी यातैंइसमतकाखंडनअवश्यकर्तव्यहै तामैंयहदोषहै गंगायांग्रामः यावाक्यमैंग्रामपदसैंतीरवि
षैशाब्दबोधमानैंतोग्रामपदकीतीरमैंवीशक्तिहुईचाहिये काहेतें जोपदलक्षणाविनाजिसअर्थविषैशाब्दबोधकाजनकहोवैतिस
पदकीताअर्थविषैशक्तिहै यहनियमहै मीमांसकमतमैंग्रामपदलक्षणाविनातीरविषैशाब्दबोधकाजनकहोनेतैंतीरमैंश क्तिहुया
चाहिये औयहनियमहै जापदमैंजिसअर्थकीवृत्तिहोवै तापदसैंतिसअर्थविषैस्मृतिहोवैहै औतिसअर्थविषैहीतापदसैंशाब्दबो
धहोवैहै मीमांसकमतमैंयानियमकाभंगहोवैगा काहेतैं मीमांसकमतमैं लक्षणावृत्तितोतीरमैंगंगापदकी औतीरकीस्मृतिवीगंगापदसैंऔ
रतीरविषैशाब्दबोधगंगापदसैंनहीं किंतुशाब्दबोधतीरकाग्रामपदसैंहोवैहै ताग्रामपदकीतीरमैंशक्तिवालक्षणावृत्तिनहीं औग्रामपद
सैंतीरकीस्मृतिवीनहीं यातैंयहमतबुद्धिमानोकूंहसनेयोग्यहै औग्रामपदतैंतीरकाशाब्दबोधमानेग्रामविषैशाब्दबोधनहीं होवैगा-
काहेतैंजहांहरिआदिकएकपदकीअनेकअर्थनमैंशक्तिहै तहांवीएककालमैंएकपुरुषकूंहरिपदसैंएकहीअर्थकाबोधहोवैहै जोअ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नेकपदार्थनका एकपदसैं बोध होवैतौ हरियाकहनेतैं वानरकेऊपरिसूर्यहै इसरीतिसैं शाब्दबोधहुवाचाहिये जैसैं एकग्रामपदतैं
परस्परसंबंधीग्राम तीरकाशाब्द बोध होवैहै तैसैं एकहरिपदतैं परस्परसंबंधीवानरसूर्यकाशाब्दबोधहुवाचाहिये जोऐसैंकहै
एकपदतैं दोशक्यकाशाब्दबोधहोवैनहीं तौ एकपदतैं अपनेशक्यकेसाथिअपनैं अशक्यअलक्ष्यकेसंबंधकातौशाब्दबोध अ
त्यंतदूरहै यातैं लाक्षणिकंनानुभावककेयहमीमांसाकावचनअसंगतहै औजोलाक्षणिकशब्दकूं शाब्दानुभवकीजनकतामैंदो
षकह्याशाब्दबोधकीजनकताकाअवछेदकनहींमिलेगा ताकायहसमाधानहै शब्दमैं शक्तिऔलक्षणाकेभेदतैं दोप्रकारकीवृ
त्तिहै कहूंअर्थकीशक्तिवृत्तिहै कहूंअर्थकीलक्षणावृत्तिहै शाब्दबोधकीजनकताशब्दमात्रमैंहै औवृत्तिबीशब्दमात्रमैंहै यातैं
तिसजनकताकेसमानदेशमैंरहनेतैं ताकाअवछेदकवृत्तिहै अथवाशाब्दबोधकीजनकताकाअवछेदकयोग्यशब्दत्वहै इस
रीतिसैं लाक्षणिकपदसैंबीशाब्दबोधहोवैहै महावाक्यनमैंजहत्लक्षणाऔअजहत्लक्षणानहीं किंतुभागत्यागलक्षणा
है ताकीरीतिविचारसागरमैंलिखीहै सोभागत्यागलक्षणामहावाक्यनमैंलक्षितलक्षणानहीं किंतुकेवललक्षणाहै काहेतैं ल-
क्ष्यचेतनतैं वाच्यकासाक्षात्संबंधहै परंपरानहीं जहांभागत्यागलक्षणाहोवै तहांवाच्यकाएकदेसलक्ष्यहोवैहै तावाच्य
केएकदेसतैं वाच्यकासाक्षात्संबंधहोवैहै यातैं केवललक्षणाहोवैहै औमहावाक्यतैंजिज्ञासुकूंअखंडब्रह्मकाबोधहोवै
ऐसाईश्वरकाअनादितात्पर्यहै यातैं निरूढलक्षणाहै प्रयोजनवतीनहीं इहांऐसीसंकाहोवैहै वाच्यअर्थकालक्ष्यचेतनसैं संबं
धमानैं तौ लक्ष्यअर्थमैं असंगताकीहानिहोवैगी संबंधनहीं मानैं तौ लक्षणाबनैनहीं काहेतैं शक्यसंबंध अथवाबोध्यसं १२
बंधकूं लक्षणाकहैहैं सोअसंगमैं संभवैनहीं ताकायहसमाधानहै वाच्यअर्थमैं चेतनऔजडदोभागहैं ताअचेतनभाग

1578

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कालक्ष्यअर्थमैं तादात्म्यसंबंधहै सकलपदार्थनकास्वरूपमैं तादात्म्यसंबंधहोवैहै वाच्यभागचेतनकास्वरूपहीलक्ष्यचेतनहै यातैं वाच्यमैं चेतनभागकालक्ष्यचेतनमैं तादात्म्यसंबंधहै औ वाच्यमैं जडभागकालक्ष्यचेतनसैं अधिष्ठानतासंबंधहै कल्पितकेसंबंधतैं अधिष्ठानकास्वभावविगरैनहीं औअपनैं तादात्म्यसंबंधसैं वीस्वभावकीहानिहोवैनहीं यातैं लक्ष्यअर्थकीअसंगताबिगरैनहीं अन्यसंकातत्पदकीअखंडचेतनमैं लक्षणामानैं औत्वंपदकीवीअखंडचेतनमैं लक्षणामानैं तौपुनरुक्तिदोषहोनैतैं घटोघटः इसवाक्यकीनांई अप्रमाणवाक्यहोवैगा दोनूंपदनकालक्ष्यअर्थजुदामानैं तौं अभेदबोधकतानहींहोवैगी ताकायहसमाधानहै मायाविशिष्टऔअंतःकरणविशिष्टतौतत्पदऔत्वंपदकाशक्यहै उपहितलक्ष्यहै जोब्रह्मचेतनदोनूंपदनकालक्ष्यहोवैतौपुनरुक्तिदोषहोवैसोब्रह्मचेतनलक्ष्यनहीं किंतुमायाउपहितऔअंतःकरणउपहितलक्ष्यहै सोउपाधिकेभेदतैंभिन्नहैं पुनरुक्तिनहीं औउपहितदोनूंपरमार्थसैं अभिन्नहैं यातैं अभेदबोधकतावाक्यकूंसंभवैहै इसरीतिसैं तत्पदार्थऔत्वंपदार्थकाउद्देशविधेयभावमानिकैअभेदबोधकतानिर्दोषहै तत्पदार्थमैं परोक्षताभ्रमनिवृत्तिकेअर्थतत्पदार्थकूंउद्देशकरिकैत्वंपदार्थताविधेयहै त्वंपदार्थमैं परिछिन्नताभ्रमनिवृत्तिकेअर्थत्वंपदार्थकूंउद्देशकरिकेतत्पदार्थताविधेयहै औपुनरुक्तिकेपरिहारवास्तेकोईग्रंथकारकायहतात्पर्यहै जोदोपदनकूंभिन्नभिन्नलक्षकतामानैंतौपुनरुक्तिकीशंकाहोवैसोभिन्नभिन्नलक्षकतानहीं किंतुमीमांसकरीतिसैं दोनूंपदमिलिकैं अखंडब्रह्मकेलक्षकहैं इसीवास्तेप्राचीनआचार्योंनैं महावाक्यनकूंप्रातिपादकार्थमात्रकीबोधकताकहीहै यद्यपिउद्देशविधेयभावशून्यअर्थकाबोधकवाक्यलोकमैं अप्रसिद्धहै तथापिअलौकिकअर्थमहावाक्यनकाहै यातैं अप्रसिद्धिदोषनहीं किंतुभूषणहै जोअप्रसिद्धदोषहोवैतौअसंगिअर्थकीबोधकतावीवाक्यकूंलो

1579

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कमैं अप्रसिद्ध है याते असंगिब्रह्मकी बोधकतावी महावाक्यनकूं नहीं होवेगी जैसें लोकमें अप्रसिद्ध असंगिब्रह्मकी बोधकता मानिये है तैसें उद्देशविधेयभावशून्य अखंड अर्थकी बोधकता संभवे है इसरीतिसें लक्षणाके प्रसंगमें बहुत विचार प्राचीन आचार्योंनें लिख्या है कोई आधुनिक ग्रंथकार लक्षणाविना शक्तिवृत्तिसें ही महावाक्यनकूं अद्वितीयब्रह्मकी बोधकता मानें हैं तिनोंनें यह प्रकार लिख्या है विशिष्टवाचक पदके अर्थका अन्यपदके विशिष्ट अर्थसें जहां संबंध नहीं संभवे तहां पदकी शक्तिसें ही विशेषणकूं त्यागिकें विशेष्यकी प्रतीति होवे है जैसें अनित्यो घटः यावाक्यमें घटत्वविशिष्ट व्यक्तिका वाचक घटपद है ताका अनित्यत्वविशिष्ट अनित्यपदार्थसें अभेदसंबंध बोधन करिये है औ घटत्वजाति नित्य है यातें घटत्वविशिष्टका अनित्यपदार्थसें अभेद बाधित होनेतें ताका अनित्यपदार्थसें अभेदसंबंध संभवे नहीं तहां घटत्वरूप विशेषणकूं त्यागिकें व्यक्तिमात्रकी घटपदसें स्मृति औ अनित्यपदार्थसें संबंधबोधरूप शाब्दबोध होवे है तैसें गेहे घटः यावाक्यमें घटत्वरूप विशेषणकूं त्यागिकें विशेष्यव्यक्तिमात्रकी घटपदसें स्मृति औ शाब्दबोध होवे है तैसें घटे रूपं यावाक्यमें बी घटत्वकूं त्यागिकें व्यक्तिमात्रकी प्रतीति होवे है काहेतें गेहे घटः यावाक्यतें गेहकी आधेयता घटपदार्थमें प्रतीत होवे है औ घटत्वजातिमें अपना आश्रय व्यक्तिकी आधेयता होवे है गेहकी आधेयता बाधित है यातें घटत्वकूं त्यागिकें व्यक्तिमात्रमें गेहकी आधेयताका संबंधबोधन करिये है तैसें गेहपदार्थमें गेहत्वका त्याग होवे है घटे रूपं यावाक्यमें बी घटत्वकूं त्यागिकें द्रव्यस्वरूप व्यक्तिमात्रमें अधिकरणता औ रूपत्वकूं त्यागिकें गुणमात्रमें आधेयता प्रतीत होवे है काहेतें घटपदार्थकी आधेयतावाला रूपपदार्थ है यह वाक्यका अर्थ है तहां घटत्वकी आधेयता किसीमें है नहीं यातें घटत्वकूं त्यागिकें व्यक्तिमात्र घटपदका अर्थ है ताकी आधेयता रूपत्वजातिमें नहीं किंतु रूपव्यक्तिकी आधेयता रूपत्वमें है

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1581

वृत्ति कारणतें काव्यप्रकाशादिकसाहित्यग्रंथनमैंनिरूढलक्षणाऔप्रयोजनवतीलक्षणाकेभेदउदाहरणसहितलिषेहैं ऐ प्र.
११ छिकलक्षणालिषीनहीं गदाधरभट्टाचार्यादिकोंनें ऐछिकलक्षणालिषीहै तिनकातात्पर्यऐछिकलक्षणाकीसंभावना २
मैंहै औ। ऐछिकलक्षणावालेपदकाप्रयोगसाधूहै इसअर्थमैंतात्पर्यनहीं लक्षणाकेअवांतरभेदमम्मटआदिकोंनें-
औरबहुतलिषेहै तथापिवेदांतग्रंथनमेंकहूंलिषेनहीं यातेंजिज्ञासूकूंतिनकेलिषणेंकाउपयोगनहीं जैसेंशक्यताव
छेदकमैंशक्तिहै तैसेंलक्ष्यतावछेदकतीरत्वादिकनमैं गंगादिकपदनकीलक्षणानहीं किंतुव्यक्तिमात्रमैंलक्षणावृत्ति
होवैहै औपदकीवृत्तिविनालक्ष्यतावछेदककीस्मृतिऔशाब्दबोधहोवैहै यहवार्तीशब्दार्थनिर्णयकेग्रंथनमैंप्रतिपा
दनकरीहै औमीमांसाकेमतमैंलाक्षणिकशब्दसैंलक्ष्यअर्थकीस्मृतितोहोवैहै औलक्ष्यअर्थकेशाब्दबोधकाहेतुला
क्षणिकपदनहीं किंतुलाक्षणिकपदकेसमीपजोपदांतरसोअपनेंशक्यअर्थकेशाब्दबोधकाऔलक्ष्यअर्थकेशाब्दबोध
काहेतुहोवैहै जैसेंगंगायांग्रामः यावाक्यमेंगंगापदतीरमैंलाक्षणिकहै सोतीरकीस्मृतिकाहेतुहै औतीरविषेशाब्दबोध
काहेतुनहीं किंतुतीरविषेशाब्दबोधकाहेतुऔअपनेंशक्यविषेंशाब्दबोधकाहेतुग्रामपदहै यामतकीसाधकयहयु
क्तिहै लाक्षणिकशब्दकूंशाब्दबोधकीजनकतामानेंतोसकलशाब्दबोधकीजनकताकाअवछेदक धर्मकालाभनहीं
होवैगा काहेतें मीमांसाकेमतमैंतोशाब्दबोधकीजनकतालाक्षणिकपदमैंहैनहीं किंतुशक्तपदमैंहै यातेंशाब्दबोध
कीजनकताकाअवछेदकशक्तिहै औलाक्षणिकपदकूंबीशाब्दबोधकीजनकतामानेंतोताजनकतासेंशक्तिन्यूनवृत्ति ११
होनेतें ताकाअवछेदकनहींहोवैगा जोन्यूनदेशवृत्तिऔअधिकदेशवृत्तिनहोवै किंतुजाकेसमानदेशवृत्तिजोहोवैताकाअ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तात्पर्यसंभवैनहीं यातैं तत्पदइदंपदकैशक्यमें परोक्षताअपरोक्षताभागकूंत्यागिकैवस्तुभागमैं लक्षणाहोनेतैं भागल
क्षणाहै इसरीतिसैं तीनिभांतिकीलक्षणा प्रयोजनवतीलक्षणा औनिरूढलक्षणाभेदतैं दोप्रकारकीहै जहांशक्तिवाले
पदकूंत्यागिकैलाक्षणिकशब्दप्रयोगमैं प्रयोजन कहिये फलहोवै सोप्रयोजनवतीलक्षणाकहियेहै जैसैं गंगापदकी
तीरमैं प्रयोजनवतीलक्षणाहै तीरेग्रामः ऐसाकहै तौतीरमैंशीतपावनतादिकनकीप्रतीतिहोवैनहीं गंगापदसैं तीर
काबोधनकरैं गंगाकेधर्मशीतपावनतादिकतीरमैं प्रतीतहोवैहै इसीवास्ते व्यंजनावृत्तिकूं आलंकारिकमानैंहैं न्याय
मतमैं शीतपावनतादिकशाब्दबोधकेविषयनहीं किंतु अनुमितिकेविषयहैं तथाहि गंगातीरंशीतपावनत्वादिमत्
गंगापदबोध्यत्वात् गंगावत् यह अनुमानहै सर्वथा प्रयोजनवतीलक्षणाहै औपदकीजिसअर्थमैं शक्तिवृत्तिहोवै
नहीं औशक्यकीनांईजिसअर्थकीप्रतीतिजिसपदसैं सर्वकूंप्रसिद्धहोवै तिसअर्थमैंतापदकीप्रयोजनशून्यलक्ष-
णानिरूढलक्षणाकहियेहै जैसैं नीलादिकपदनकीकोशरीतिसैं गुणगुणीमैंशक्तिमानैं तौ गौरवदोषहै औशक्यताव
च्छेदकएकएकधर्मकालाभहोवैनहीं यातैं गुणमात्रमैंशक्तिहै औनीलोघटइत्यादिकवाक्यनकूंसुएनेहो सर्वपुरुषनकूं
गुणीकीप्रतीतिअतिप्रसिद्धहै यातैं नीलादिकपदनकीगुणीमैं प्रयोजनशून्यलक्षणाहोनेतैं निरूढलक्षणाहै निरूढल
क्षणाशक्तिकैसदृशहोवैहै कोईकि लक्षणाअनादितात्पर्यहोवै तहांनिरूढलक्षणाहोवैहै औजहांप्रयोजनऔअनादि
तात्पर्यदोनूंहोवैनहीं किंतुग्रंथकारअपनेंइछातैं लाक्षणिकशब्दकाप्रयोगविनाप्रयोजनकरैंहैं तहांतीसरीऐछिक
लक्षणाहोवैहै परंतु अनादितात्पर्यऔप्रयोजनविनालाक्षणिकशब्दकेप्रयोगकूं विद्वान्समीचीननहींकहैहै इसी

1582

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1583

धोलक्षणाऐसाकहेहैं शक्यसाक्षात्संबंधोलक्षणाऐसानहींकहेहैं इसरीतिसें लक्षिताकहियेशक्यसंबंधत्वरूपस्व
लक्षणवालीलक्षणालक्षितलक्षणाशब्दकाअर्थहै सोपरंपरासंबंधस्थलमेंसंभवैहै यद्यपिलक्षितलक्षणाशब्दका
उक्तअर्थसाक्षात्संबंधस्थलमेंबीसंभवैहै तहांबीलक्षितलक्षणाकहीचाहिये तथापि लक्षितालक्षणालक्षितलक्ष
णायाकहनेंकायहअभिप्रायहै शक्यसाक्षात्त्वविशिष्टसंबंधत्वरहिताकेवलशक्यसंबंधत्वरूपलक्षणवतीलक्ष
णालक्षितलक्षणा यातेंकेवललक्षणाकासंग्रहहोवैनहीं इसरीतिसें कर्मधारयसमासहै औरकितनेंग्रंथनमेंय
हलिष्याहै सिंहोदेवदत्तइत्यादिवाक्यनमेंसिंहादिशब्दगौणीवृत्तिसें पुरुषादिकनकेबोधकहैं जैसेंशक्तिऔलक्ष
णापदकीवृत्तिहै तैसेंतीसरीगौणीवृत्तिहै पदकेशक्यअर्थमेंजोगुणहोवैंतिसवालेअशक्यअर्थमेंपदकीगौणी
वृत्तिकहियेहै जैसेंसिंहपदकेशक्यमेंशूरतादिकगुणहैं तिनवालाजोसिंहशब्दकाअशक्यपुरुषतामेंसिंहशब्दकी
गौणीवृत्तिहै सोपूर्वप्रकारसेंलक्षणाकेअंतर्भूतहै औचौथीव्यंजनावृत्तिअलंकारग्रंथनमेंलिषीहै ताकायहउदाहर
णहै शत्रुग्रहमेंभोजननिमित्तप्रवृत्तपुरुषकूंदूसराप्रियपुरुषकहेहैविषंभुंक्ष्वतहांविषकाभोजनकरयहशक्तिवृत्तिसें
वाक्यकाअर्थहै औभोजनकेअभावमेंवक्ताकातात्पर्यहै सोभोजनमेंशक्तिवालेपदकीअभावमेंसंबंधकेअभावतेंल
क्षणाबीबनेनहीं यातेंशत्रुगृहतेंभोजननिवृत्तिवाक्यकाव्यंग्यअर्थहै व्यंजनावृत्तिसेंजोअर्थप्रतीतहोवैसोव्यंग्यअ
र्थकहियेहै अन्यउदाहरणसंध्याकालमेंअनेकपुरुषनकूंनानाकार्यमेंप्रवृत्तिनिमित्तकिसीनेंसूर्योस्तंगतः यहवाक्य
उच्चारणकिया ताकूंसुनिकेनानापुरुषतिसकालमेंअपनेंअपनेंकर्तव्यकूंजानिकेप्रवृत्तहोवैहै तहांअनेकपुरुषन-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कूंनानाकर्त्तव्यकाबोधव्यंजनावृत्तिसेंहोवेहे इसरीतिसें व्यंजनावृत्तिके अनेक उदाहरणकाव्यप्रकाशकाव्यप्रदीप
आदिकग्रंथनमेंमम्मटगोविंदभट्टआदिकोंनेंलिखेहें सोबहुतउदाहरणशृंगाररसकेहें यातेंनहींलिखे न्यायग्रंथनमें-
व्यंजनावृत्तिकावीलक्षणावृत्तिमें अंतर्भावकह्याहे औरजोआलंकारिककहेंहें शक्यसंबंधीअर्थकातोलक्षणावृत्तिसें-
बोधसंभवेहे औशक्यअर्थके असंबंधीअर्थमेंलक्षणासंभवेनहीं ताकीशब्दसेंप्रतीतिके अर्थव्यंजनावृत्तिमानीचा
हिये ताकायहसमाधानहे साक्षात्औपरंपराभेदतेंसंबंधदोप्रकारकाहोवेहे तिनमेंसाक्षात्संबंधतोपरस्परकिनोंका
हीहोवेहे सर्वकाहोवेनहीं औपरंपरासंबंधतोसर्वपदार्थनकापरस्परसंभवेहे बहुतक्याकहें गोत्वअश्वत्वकावीप
रस्परव्यधिकरणतासंबंधहे घटाभावऔघटपरस्परविरोधीहें तोवीघटाभावकाघटमेंप्रतियोगितासंबंधहे औघट
काअपनेंअभावमेंस्ववृत्तिप्रतियोगितानिरूपकतासंबंधहे इसरीतिसें सर्वपदार्थनकाआपसमेंपरंपरासंबंधसंभ
वेहे यातेंव्यंग्यअर्थवीशक्यसंबंधीहोनेंतेंलक्ष्यकेअंतर्भूतहे औव्यंजनावृत्तिकाप्रतिपादनकाव्यप्रकाशमें औरता
कीटीकामेंजयरामभट्टाचार्यादिकोंनेंलिख्याहे तेसेंकाव्यप्रदीपमें औताकीटीकाउद्योतनमेंनागोजीभट्टनेंलिख्या
हे ताकाखंडनवीन्यायग्रंथनमेंलिख्याहे औव्याकरणग्रंथनमेंकहूंखंडनलिख्याहे कहूंप्रतिपादनलिख्याहे अद्वै
तसिद्धांतमेंखंडनकावाप्रतिपादनकाआग्रहनहीं यातेंप्रतिपादनकीरीतिमात्रजनाईहे शक्तिऔलक्षणादोवृत्ति
सर्वकेमतमेंहे औमहावाक्यकेअर्थनिरूपणमेंवीदोकाहीउपयोगहे तिनमेंशक्तिकानिरूपणकिया औशक्यकेसा
क्षात्संबंधऔपरंपरासंबंधकेभेदतेंकेवललक्षणाऔलक्षितलक्षणारूपदोभेदलक्षणाकेकहेजलत्लक्षणाअजह ९

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त्लक्षणाभागत्यागलक्षणा इनभेदनतें फेरि तीनि प्रकारकी लक्षणा हैं जहांशक्यकी प्रतीतिनहीं होवै केवलशक्यसंबं
धीकीप्रतीति होवै तहांजहत्लक्षणाहोवेहै जैसें विषंभुंक्ष्व यास्थानमेंशक्यजोविषभोजनताकूंत्यागिकेशक्य
संबंधीभोजननिवृत्तिकीप्रतीति होनेतेंजहत्लक्षणाहै यद्यपि जहां शक्यअर्थकासंबंधनहींसंभवेतहांजहल्लक्षणाका
अंगीकारहोवेहै जैसेंगंगायांग्रामः यास्थानमेंपदनकेशक्यअर्थनकापरस्परसंबंधसंभवेनहीं औविषंभुंक्ष्व यास्थान
मेंशक्यअर्थकाअन्वयसंभवेहै मरणकाहेतुवीविषहै तोवीभोजनमेंविषकाअन्वयसंभवेहै तथापिअन्वयानुपपत्ति
लक्षणामेंवीजनहीं किंतुतात्पर्यानुपपत्तिलक्षणामेंवीजहै यहग्रंथनमेंलिख्याहै ताकायहभावहैअन्वयकहियेशक्य
अर्थकासंबंधताकीअनुपपत्तिकहिये असंभवजहांहोवैतहांलक्षणाहोवेहै यहनियमनहींजोयहीनियमहोवेतोय-
ष्टीःप्रवेशययावाक्यमेंयष्टिपदकीयष्टिधरमेंलक्षणानहींहोवेगी काहेतें यष्टिपदकेशक्यकाप्रवेशमेंअन्वयसंभवेहै
यातेंतात्पर्यानुपपत्तिलक्षणामेंवीजहै अन्वयानुपपत्तिनहीं तात्पर्यकहियेवाक्यकर्ताकीइच्छाताकीअनुपपत्तिकहि
येशक्यअर्थमेंअसंभवलक्षणामाननेंकावीजकहीयेहेतुहै यष्टीःप्रवेशययावाक्यमेंतात्पर्यानुपपत्तिहै काहेतें यष्टि-
काप्रवेशजोशक्यअर्थतामेंवक्ताकातात्पर्यभोजनकेसमेंसंभवेनहीं यातेंयष्टिपदकीयष्टिधरपुरुषनमेंलक्षणाहै तैसें
मरणहेतुविषभोजनमेंपिताकातात्पर्यसंभवेनहीं यातेंभोजननिवृत्तिमेंजहत्लक्षणाहै गंगायांग्रामः यास्थानमेंतात्प
र्यानुपपत्तिवीसंभवेहै यातेंजहांतात्पर्यानुपपत्तिहोवेतहांलक्षणामानियेहै यहनियमहै गंगायांग्रामः यास्थानमेंवी
गंगापदकाशक्यजोदेवनदीकाप्रवाहताकूंत्यागिकेंशक्यसंबंधीतीरकीप्रतीतिहोवेहै यातेंजहत्लक्षणाहैजहांसाभा-

1585

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

न्यतीरबोधमेंवक्ताकातात्पर्यनहींहै किंतुगंगातीरकेबोधमेंवक्ताकातात्पर्यहै तहांगंगापदकीगंगातीरमेंअजहत्लक्ष
णाहै औअजहत्लक्षणाकेअसाधारणउदाहरणतोकाकेभ्योदधिरक्ष्यतांइत्यादिकहैंसहितशक्यसंबंधीकीजहांप्रती
तिहोवेतहांअजहत्लक्षणाहोवेहै भोजनवास्तेदधिरक्षामेंवक्ताकातात्पर्यहैसोबिडालादिकनसेंदधिरक्षणविनासंभ
वेनहीं यातेंकाकपदकीदधिउपघातकमेंअजहत्लक्षणाहै इसरीतिसेंछत्रिणोयांतियास्थानमेंछत्रिपदकीछत्रिसंयु
क्तएकसार्थमेंअजहत्लक्षणाहै न्यायमतमेंनीलादिकपदनकीगुणमात्रमेंशक्तिहै नीलोघटइत्यादिकवाक्यनमें नी
लरूपवालेकेबोधकनीलादिकपदलक्षणातेंहैं तहांशक्यसहितसंबंधीकीप्रतीतहोवेहै यातेंअजहत्लक्षणाहै औकौ
शकारकेमतमेंनीलादिकपदलक्षणातेंहैं तहांशक्यसहितसंबंधीकीप्रतीतिहोवेहै यातेंअजहत्लक्षणाहै औकौशका
रकेमतमेंनीलादिकपदनकीगुणऔगुणीमेंशक्तिहै लक्षणानहीं वेदांतपरिभाषाग्रंथमेंनीलादिकपदनकीगुणीमेंअजह
ल्लक्षणाकहीसोन्यायकामतहै औशक्यअर्थके एकदेसकूंत्यागिकेएकदेसकेबोधमेंवक्ताकातात्पर्यहोवेतहांभागत्यागलक्षणाहोवेहै जैसें
सोयंदेवदत्तः यास्थानमेंभागत्यागलक्षणाहै इहांपरोक्षवस्तुतत्सदकाअर्थहै औअपरोक्षवस्तुइदंपदकाअर्थहै दकारादिवर्णविशि
ष्टनामवालापुरुषशरीरदेवदत्तपदकाअर्थहै तत्पदार्थकाइदंपदार्थसेंअभेदतत्पदोत्तरविभक्तिकाअर्थहै इदंपदार्थ
कादेवदत्तपदार्थसेंअभेदइदंपदोत्तरविभक्तिकाअर्थहै अथवा तत्पद औइदंपदसेंउत्तरविभक्तिनिरर्थकहै समानवि
भक्तिवालेपदनकेसन्निधानतेंपदार्थनकाअभेदप्रतीतहोवेहै यातेंपरोक्षवस्तुसेंअभिन्नअपरोक्षवस्तुस्वरूपदेव १०
दत्तनामवालाशरीरहै यहवाक्यकेपदनकाशक्यअर्थहै सोउभ्याशीतलहै याकीनांईबाधितहै बाधितअर्थमेंवक्ताका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नीहोवेनहीं अवयवकीशक्तिसेंजोशब्दअपनें अर्थकूंजनावेताकूंयौगिकशब्दकहेहैं जैसेंपाचकशब्दहै तहांपा-
चकअवयवकापाकअर्थहै अकअवयवकाकर्ताअर्थहै इसरीतिसें अवयवशक्तिसें पाककर्तापाचकशब्दकाअर्थहो
नेतेंपाचकशब्दयौगिकहै अवयवशक्तिकूंयोगकहेहैं शास्त्रकाअसाधारणसंकेतपरिभाषाकहियेहै परिभाषातें
अर्थकाबोधकशब्दपरिभाषिकशब्दकहियेहै लक्षितशब्दकेलक्षआइतदोअवयवहैं तिनमैंलक्षशब्दकाअर्थल
क्षणहै इतशब्दकाअर्थसंबंधीहै यातेंलक्षणसंबंधीअर्थकाबोधकलक्षितशब्दयौगिकहै यातेंलक्षणवालालक्षि
तशब्दकाअर्थहै तैसेंशक्यसंबंधकानामलक्षणाहै यहशास्त्रकासंकेतहै यातेंलक्षणाशब्दपरिभाषातेंशक्यसं
बंधरूपअर्थबोधकहोनेतें पारिभाषिकहै लक्षितावासौलक्षणालक्षितलक्षणा यहकर्मधारयसमासहै लक्षणा
वालीलक्षणायह अर्थकर्मधारयसमासतेंसिद्धहोवेहै असाधारणधर्मकूंलक्षणाकहेहैं शक्यसंबंधकूंलक्षणाकहे
हैं यातेंलक्षणाकाअसाधारणधर्मशक्यसंबंधत्वहैसोईताकालक्षणहै यद्यपिशक्यकासंबंधसाक्षात्परंपराभे
दतेंदोप्रकारकाहै औरबहुतस्थानमैंशक्यकासाक्षात्संबंधरूपलक्षणाहै द्विरेफोरौति सिंहोदेवदत्तइत्यादिकनमें
शक्यकासाक्षात्संबंधहैनहीं तथापिलक्षणाकाअसाधारणधर्मशक्यसंबंधत्वहै संबंधमैंसाक्षात्पनालक्षणा
केलक्षणमैंप्रविष्टनहीं जहांशक्यकापरंपरासंबंधहै तहांभीशक्यसंबंधत्वरूपस्वलक्षणवालीलक्षणाहै गंगा
यांग्रामः इत्यादिकउदाहरणमें यद्यपिशक्यकासाक्षात्संबंधरूपलक्षणाहै तथापिसंबंधकासाक्षात्पनालक्षणाकेलक्षणमें १
प्रविष्टनहीं किंतुसाक्षात्परंपरासाधारणसंबंधत्वरूपतेंलक्षणाकेलक्षणमैंसंबंधमात्रप्रविष्टहै इसीवास्तेशक्यसंबं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1588

यशक्यसंबंधीलक्षितशब्दकाअर्थहै तथापिभागत्यागलक्षणासैंवक्तृतात्पर्यविषयइतनाभागत्यागिकेइहांशक्यसंबंधी
लक्षितशब्दकाअर्थहै तैसेंलक्षणाशब्दकाअर्थवीशक्यसंबंधहै तामेंशक्यभागत्यागिकेभागत्यागलक्षणासेंसंबंधमा
त्रलक्षणाशब्दकाअर्थहै यातैंलक्षितकहियेशक्यसंबंधीकीलक्षणाकहियेसंबंध लक्षितलक्षणाशब्दकाअर्थहोवैहै इस
रीतिसैंशक्यसंबंधीकासंबंधलक्षितलक्षणाशब्दसैंयोगवृत्तिसैंहीसिद्धहोवैहै अथवालक्षितशब्दकीतोशक्यसंबंधीमें
भागत्यागलक्षणाहै औलक्षणाशब्दकाशक्यसंबंधही अर्थहैताकीसंबंधमात्रमेंलक्षणानहीं औलक्षितेनलक्षणा
लक्षितलक्षणा इसरीतिसैं तृतीयासमासमानेइष्टअर्थकीसिद्धिहोवैहै लक्षितेनकहियेशक्यसंबंधीद्वारालक्षणाक
हिये शक्यकासंबंध यहलक्षितलक्षणाशब्दकाअर्थहै शक्यकासंबंधकहूंसाक्षात्होवैहै कहूंशक्यसंबंधीद्वाराश
क्यकासंबंधहोवैहै द्विरेफोरौति इत्यादिस्थानमेंद्विरेफपदकाशक्यजोदोरेफतिनकामधुपसैंसाक्षात्संबंधनहीं किंतुश
क्यसंबंधीभ्रमरपदहैतिसकासंबंधीमधुपहै यातैंद्विरेफपदकाशक्यजोदोरेफतिनकाभ्रमरपदद्वारामधुपसैंसंबंध
है तैसेंसिंहशब्दकेशक्यकेसंबंधीजेशूरतादिकगुणतिनोंद्वारासिंहशब्दकेशक्यकासंबंधिशूरतादिगुणविशिष्टमें है
यातैंसिंहशब्दकालक्षितकहियेशक्यसंबंधीजेशूरतादिगुणतिनद्वारालक्षणाकहियेसिंहशब्दकेशक्यकासंबंध
पुरुषमेंहै षष्ठीसमासमानैंतौलक्षितशब्दऔलक्षणाशब्दमें भागत्यागलक्षणामाननीहोवैहै औतृतीयासमासमा
नैंतौलक्षणाशब्दकामुख्यअर्थरहैहै एकलक्षितशब्दमेंभागत्यागलक्षणामाननीहोवैहै औलक्षितलक्षणाशब्दमें
कर्मधारयसमासमानैंतौलक्षितशब्दऔलक्षणाशब्दइनदोनूंकामुख्ययौगिकअर्थरहैहै भागत्यागलक्षणामान

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

होवैताकूं केवललक्षणाकहैहैं जैसें गंगापदकी तीरमें लक्षणा होवैहै तहां गंगापदका शक्य जो प्रवाह ताका तीरसें साक्षात्सं
बंधसंयोग है यातें गंगापदकी तीरमें केवललक्षणा है लक्षितलक्षणाका उदाहरण यह है द्विरेफो रौति या वाक्यका दोरेफध्व
निकरै है यह अर्थ पदनकी शक्तिसें प्रतीत होवैहै सो वर्णरूप रेफमें ध्वनिकरना संभवै नहीं यातें शक्य अर्थमें वक्ताका ता
त्पर्य नहीं किंतु दोरेफवाला जो भ्रमरपद तिसके शक्यमें द्विरेफपदकी लक्षणा है सो केवललक्षणा तो है नहीं काहेतें जा
अर्थमें पदके शक्यका साक्षात्संबंध होवै तामें केवललक्षणा होवैहै द्विरेफपदका शक्य दोरेफ हैं तिनका अन्वय विना संबं
ध भ्रमरपदमें है तापदका शक्तिरूप संबंध अपने वाच्य मधुपमें है यातें शक्यसंबंधी जो भ्रमरपद ताका संबंध होनेतें श
क्यका परंपरा संबंध है यातें लक्षितलक्षणा है यद्यपि दोरेफनकूं द्विरेफ नहीं कहैहैं किंतु दोरेफवालेकूं द्विरेफ कहैहैं दोरे
फवाला भ्रमरपद है यातें द्विरेफपदका शक्य जो भ्रमरपद ताका मधुपसें साक्षात्संबंध होनेतें केवललक्षणा संभवैहै तथा
पि व्याकरणके मतमें तो समासकी शक्ति है यातें द्विरेफपदका शक्य दोरेफवाला भ्रमरपद है न्यायवैशेषिकादिकनके मतमें
समाससमुदायकी शक्ति नहीं मानैं हैं किंतु समाससमुदायके जो अवयव हैं तिनकी लक्षणावृत्तिसें अधिक अर्थ समा
समें प्रतीत होवैहै जैसें द्विरेफ इतना समाससमुदाय है ताकी किसी अर्थमें शक्ति नहीं तहां द्वित्वसंख्याविशिष्ट द्विपदका
अर्थ है रेफत्वजातिविशिष्ट अक्षर रेफपदका अर्थ है द्विपदके शक्यका और रेफपदके शक्यका अभेदसंबंध वाक्यार्थ होवै तो
द्वित्वसंख्यावाले रेफ हैं यही अर्थ शक्य है औ दोरेफवाले पदकूं द्विरेफ कहैहैं सो लक्षणावृत्ति मानिके कहैहैं परंतु इतना भे
द है न्यायवैशेषिक मतमें वाक्यकी लक्षणा नहीं मानैं हैं काहेतें शक्यसंबंधकूं लक्षणा कहैहैं पदसमुदायरूप वाक्यकी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

किसीअर्थमेंशक्तिनहीं यातेंवाक्यके शक्यकाअभावहोनेतेंशक्यसंबंधरूपलक्षणावाक्यकीवनेंनहीं किंतु पदकी
लक्षणाहोवेहे यामतमेंरेफपदकीरेफवालेमेंलक्षणाऔमीमांसामतमेंतथावेदांतम तमेंवाक्यकीवीलक्षणामानेहें औ
वाक्यकीलक्षणामेंजोदोषकह्याहे ताकायहसमाधानहे पदसमुदायकूंवाक्यकहेहें सोसमुदायप्रत्येकपदसेंभिन्न
नहीं यातेंपदनकाशक्यहीवाक्यकाशक्यहे अथवा शक्यसंबंधरूपलक्षणानहीं किंतुबोध्यसंबंधकूंलक्षणाकहेहें जेसेंप
दकाशक्यशक्तिवृत्तिसेंबोध्यहे तेसेंपरस्परसंबंधसहितपदार्थरूपवापदार्थनकासंबंधरूपवाक्यार्थवीवाक्यबोध्यहे यातें
पदबोध्यसंबंधरूपलक्षणाजेसेंपदकीहोवेहे तेसेंवाक्यबोध्यसंबंधरूपलक्षणावाक्यकीवीहोवेहे यामतमेंद्विरेफसमु
दायकीदोरेफवाले पदमेंलक्षणा इसरीतिसेंद्विरेफपदसेंलक्षितभ्रमरपदकीमधुपमेंलक्षणाहोनेतेंलक्षितलक्षणाकहावे
हे सोबीलक्षणाके अंतर्भूतहीहे काहेतें द्विरेफपदकाशक्यजोदोरेफताकाभ्रमरपदसेंसाक्षात्संबंधहे औभ्रमरतेंभ्रमरपद
द्वारापरंपरासंबंधहे यातेंशक्यसंबंधरूपलक्षणातेंलक्षितलक्षणापृथक्नहीं व्याकरणमतमेंद्विरेफपदकाशक्यदोरेफवाला
भ्रमरपदहे ताकाभ्रमरसेंसाक्षात्संबंधहे यातें यहउदाहरण लक्षितलक्षणाकानहीं केवललक्षणाकाहे तामतमेंलक्षितलक्ष
णाकेउदाहरणसिंहोदेवदत्तःइत्यादिकहें यास्थानमेंसिंहसेंअभिन्नदेवदत्तहे यह वाक्यकाअर्थपदनकीशक्तिवृत्तिसेंप्रती
तहोवेहे सोसंभवेनहीं काहेतें पशुत्वजातिऔमनुष्यत्वजातिपरस्परविरुद्धहें एकमेंसंभवेनहीं यातेंसिंहशब्दकीशूरताक्रूर
ताधर्मवालेपुरुषमेंलक्षणाहे तापुरुषतेंसिंहशक्यकासाक्षात्संबंधनहीं होनेतेंकेवललक्षणातोहेनहीं किंतुशूरतादिकनतें
सिंहशब्दकेशक्यकाआधेयतासंबंधहे औवाक्यसंबंधीशूरतादिकनकापुरुषमेंआश्रयतासंबंधहे परंतुसिंहकीशूरता-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

औ पुरुषकी शूरताका अभेद मानैं तब तौ सिंहकी शूरताका देवदत्तमैं अधिकरणता संबंध है औ दोनूं शूरताका परस्पर भेद मा
नैं तौ सिंहकी शूरताका पुरुषमैं स्वसजातीयशूरताधिकरणता संबंध है सिंहकी शूरता स्वशब्दका अर्थ है इसरीतिसैं शक्यका 1591
परंपरासंबंध होनेतैं सिंहशब्दकी शूरतादिगुणविशिष्टमैं लक्षितलक्षणा है शक्यके परंपरासंबंधकूं लक्षितलक्षणा कहै हैं य
द्यपि लक्षितलक्षणाशब्दसैं उक्तअर्थकी सिद्धि क्लिष्ट है काहेतें लक्षितलक्षणाशब्दकी रूढि तौ शक्यके परंपरासंबंधमैं कोशा
दिकनमैं कहींनहीं औ योगवृत्तिसैं लक्षणाशब्दका उक्तअर्थ प्रतीत होवै नहीं काहेतें लक्षितस्य लक्षणा लक्षितलक्षणा इस
रीतिसैं षष्ठीसमास करैं तौ लक्षित कहिये लक्षणावृत्तिसैं जो प्रतीत हुया है ताकी लक्षणा यह लक्षितलक्षणाशब्दका अर्थ सि
द्ध होवै है द्विरेफो रौति सिंहो देवदत्तः इत्यादिकजो लक्षितलक्षणाके उदाहरण कहे तहां उक्तस्वरूप लक्षितलक्षणा संभवै न
हीं काहेतें द्विरेफो रौति या वाक्यमैं द्विरेफपदसैं भ्रमरपद लक्षित होवै औ ताकी मधुपमैं लक्षणा होवै तौ उक्तअर्थका संभव
होवै सो दोनूं वार्ता है नहीं काहेतें यद्यपि द्विरेफपदके शक्यका संबंध भ्रमरपदतें है तथापि द्विरेफपदसैं लक्षित भ्रमरपद नहीं
काहेतें वक्ताके तात्पर्यका विषय शक्यसंबंधी लक्षित होवै है केवल शक्यसंबंधी लक्षित नहीं होवै है जो केवल शक्यसंबंधी
लक्षित होवै तौ गंगापदके शक्यके संबंधी मीनादिक अनेक हैं ते सारे ही गंगापदसैं लक्षित हुये चाहियें यातें वक्ताके तात्पर्य
का विषय शक्यसंबंधी लक्षित होवै है गंगापदशक्यसंबंधी तौ अनेक हैं तथापि गंगायां ग्रामः या वाक्यमैं श्रोताकूं गंगापद
सैं तीरका बोध होवै ऐसे तात्पर्यविषय शक्यसंबंधी केवल तीर है यातें गंगापदसैं तीर ही लक्षित है मीनादिक वी शक्यसंबं
धी तौ हैं उक्ततात्पर्यके विषय नहीं यातें गंगापदसैं लक्षित नहीं इसरीतिसैं द्विरेफपदके शक्यका संबंधी तौ भ्रमरपद है परं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तुद्विरेफपदसैं भ्रमरपदकाबोधश्रोताकूं होवे ऐसावक्ताकातात्पर्यनहीं किंतुद्विरेफपदसैं भ्रमरपदकेशक्यमधुपकाबोधश्रो
ताकूंहोवे ऐसावक्ताकातात्पर्यहोवेहै यातैंद्विरेफपदकेशक्यकासंबंधीवीभ्रमरपदहै वक्ताकेउक्ततात्पर्यकाविषयनहींहो
नेतैंद्विरेफपदसैंलक्षितभ्रमरपदनहीं औरकिसीरीतिसैंद्विरेफपदसैंलक्षितभ्रमरपदहै इसवार्ताकूंमानिलेवेतौवीभ्रम
रपदकीमधुपमैंशक्तिहै यातैंताकीलक्षणाकथनअसंगतहै इसरीतिसैं लक्षितस्यभ्रमरपदस्यलक्षणालक्षितलक्षणा
इसरीतिसैं षष्ठीसमासकाअर्थउक्तउदाहरणमैंसंभवेनहीं तैसैंसिंहोदेवदत्तः याउदाहरणमैंवीउक्तअर्थसंभवेनहीं सिं
हवृत्तिशूरतादिकसिंहशब्दकेशक्यकेसंबंधीतौहैं परंतुसिंहशब्दसैंशूरतादिकनकाबोधश्रोताकूंहोवे ऐसावक्ताकाता
त्पर्यनहीं किंतुसिंहशब्दसैंसिंहसदृशपुरुषकाबोधश्रोताकूंहोवे ऐसावक्ताकातात्पर्यहोवेहै यातैंशक्यसंबंधीवीशूर
तादिकगुणउक्ततात्पर्यकेविषयनहींहोनेतैंसिंहशब्दसैंलक्षितनहीं औरकिसीरीतिसैंसिंहशब्दसैंलक्षितशूरतादिकहैं
याकूंमानिलेवेतौवीतिनकीलक्षणाकहनाविरुद्धहै काहेतैं शक्तिऔलक्षणावर्णात्मकशब्दकीहोवेहै शूरतादिकगुणश
ब्दरूपनहीं यातैंतिनकीशक्तिवालक्षणासंभवेनहीं इसरीतिसैं लक्षितस्यभ्रमरपदस्यलक्षणालक्षितलक्षणाऔर
लक्षितस्यशूरतादिगुणसमुदायस्यलक्षणालक्षितलक्षणाइसप्रकारकाअर्थषष्ठीसमासमानिकैहोवेहै याअर्थमें
शक्यकैपरंपरासबंधकालक्षितलक्षणाशब्दसैंबोधहोवेनहीं पूर्वउक्तदोनूंउदाहरणोंमैंशक्यकापरंपरासंबंधतोम
धुपऔपुरुषमैंहै औपूर्वोक्तरीतिसैंलक्षितलक्षणाशब्दकायोगअर्थसंभवेनहीं तथापि यावक्ष्यमाणरीतिसैंलक्षि ७
तलक्षणाशब्दकायोगअर्थषष्ठीसमासमानिकैशक्यकापरंपरासंबंधहीसंभवेहै यद्यपिवक्ताकेतात्पर्यकाविष

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

र्थ आनयनमैं कर्मताका निरूपकतासंबंधहै यकारोत्तरअकारकेकृति औ प्रेरणादोअर्थहैं तहांकृतिमैं आनयनका अनुकू-
लतासंबंधहै कृतिकात्वंपदार्थमैं आश्रयतासंबंधहै प्रेरणाकात्वंपदार्थमैं विषयतासंबंधहै यातें गोवृत्तिकर्मतानिरूपक
आनयनानुकूलकृत्याश्रयः प्रेरणाविषयः त्वंपदार्थः यहज्ञान वाक्यश्रोताकूं होवैहै तहांवृत्तिविशिष्टसकलपदनकाज्ञान
शब्दप्रमाणहै पदनकेज्ञानतैं तिनकेअर्थकी स्मृतिव्यापारहै वाक्यार्थज्ञान फलहै इसरीतिसें लौकिकवैदिकवाक्यनतें ब
हुतस्थानमें पदार्थनकेसंबंधकावासंबंधसहितपदार्थनकाबोधहीफलहोवैहै तथापित्वंपदार्थकासंबंधीतत्पदार्थका वी
तत्पदार्थकेसंबंधीत्वंपदार्थकामहावाक्यनतें बोधमानैतो असंगोह्ययंपुरुषः इत्यादिकश्रुतिवचनोंनें वेदांतप्रतिपाद्यब्र
ह्मकूं असंगताकहीहै ताकाबाधहोवैगा यातैं महावाक्यनका प्रतिपाद्यअखंडब्रह्महै वाक्यनकूं अखंडअर्थकी बोधक
तामैं दृष्टांतसंक्षेपशारीरकमैं स्पष्टहै विस्तारभयतें लिष्यानहीं महावाक्यनमैं लक्षणाकाप्रकारविचारसागरमैं लिष्याहै
सोजानिलेना पदकेशक्यसें संबंधकूं लक्षणाकहेहैं यातें पदकापरंपरासंबंधरूपलक्षणाहै काहेतें पदकासाक्षात्संबंध
शक्यतें होवैहै ताशक्यकासंबंधलक्ष्यतें होवैहै यातें शक्यद्वारापदकासंबंधहोनेतें परंपरासंबंधरूपलक्षणावृत्तिहै
इसीकारणतें ग्रंथकारोंनें लक्षणावृत्तिजघन्यकहीहै जहांपदकासाक्षात्संबंधरूपशक्तिवृत्तिनहींसंभवै तहांपरंप
रासंबंधरूपलक्षणावृत्तिका अंगीकारहै इसीकारणतें ग्रंथकारोंनेलिष्याहै जहांशक्यअर्थमैं वक्ताकातात्पर्यनहींसं
भवै तहांलक्षणावृत्तिमानिकेपदकालक्ष्यअर्थमाननायोग्यहै जहांशक्यअर्थमैं वक्ताकातात्पर्यसंभवै तहांलक्ष्यअर्थ ५
माननायोग्यनहीं केवललक्षणा औरलक्षितलक्षणाकेभेदतें सोलक्षणादोप्रकारकीहै पदकेशक्यकासाक्षात्संबंध

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नकासाक्षात्कारहोवै जिसपदकीजिसअर्थमैंवृत्तिपूर्वजानीहोवैतिसपदसैंतिसअर्थकीस्मृतिहोवैहै तिसतैंअनंतरप
रस्परसंबंधवालेसकलपदार्थनकाज्ञानअथवासकलपदार्थनकापरस्परसंबंधज्ञानवाक्यार्थज्ञानहोवैहै जैसैंगामान
यत्वंयावाक्यमैंगोआदिकपदहैं तिनकीअपनेअर्थमैंवृत्तिकाप्रथमऐसाज्ञानपुरुषकूंचाहियेगोपदकीगोत्वविशिष्टप
शुविशेषमैंशक्तिहैद्वितीयाविभक्तिकीकर्मतामैंशक्तिहै आनयनमैंआपूर्वनीपदकीशक्तिहै यकारोत्तरअकारकीकृति औरपर
णामैंशक्तिहै संबोधनयोग्यचेतनमैंत्वंपदकीशक्तिहै इसरीतिसैंशक्तिज्ञानवालेकूंगामानयत्वंयावाक्यकाश्रोत्रसैंसं
बंधहोतैंहीगोआदिकसकलपदनकासाक्षात्कारहोयकैतिनपदनकेशक्यअर्थकीस्मृतिहोवैहै जैसैंहस्तिपालककेज्ञानतैंता
केसंबंधीहस्तीकीस्मृतिहोवैहै तैसैंपदनकेज्ञानतैंतिनकेसंबंधीशक्यअर्थनकीस्मृतिहोवैहै यहहस्तिपालकहै ऐसाह
स्ति औमहावतकेसंबंधकाजाकूंज्ञानहोवैनहीं किंतुमनुष्यहै ऐसाज्ञानहोवैताकूंहस्तिपालकदेषैवीहस्तीकीस्मृतिहोवै
नहीं तैसैंइसपदकायहशक्यहै अथवा लक्ष्यहै ऐसाशक्तिवालक्षणारूपसंबंधकाजाकूंपूर्वज्ञानहोवैनहीं किंतुअज्ञातार्थ
पदकाश्रावणसाक्षात्कारहोवैताकूंपदनकेश्रवणतैंवी अर्थनकीस्मृतिहोवैनहीं यातैंवृत्तिसहितपदकाज्ञानपदार्थस्मृतिका
हेतुहै केवलपदकाज्ञानहेतुनहीं पदनकेज्ञानतैंसकलपदार्थनकीस्मृतिहोयकैसकलपदार्थनकेपरस्परसंबंधकाज्ञान
होवैहै अथवापदनकेज्ञानतैंपरस्परसंबंधरहितजिनपदार्थनकास्मरणहुवाहै परस्परसंबंधसहिततिनपदार्थनकाज्ञा
नहोवैहै सोपदार्थनकेसंबंधकाज्ञान अथवा संबंधसहितपदार्थनकाज्ञानवाक्यार्थज्ञानकहियेहै औशाब्दीप्रमाकहि
येहै गामानयत्वंयावाक्यमैंगोपदार्थकाद्वितीयार्थकर्मतामैंआधेयतासंबंधहै आधेयताकूंवृत्तित्वकहैहैं आपूर्वनीकेअ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नकीवीघटपदसैंप्रतीतिहुईचाहिये समाधानवाच्यकीप्रतीतिपदसैंहोवैहै औरवाच्यवृत्तिजोजातिताकीप्रतीति होवैहै या
तैंयहनियमहैजातिभिन्नअवाच्यकीप्रतीतिहोवैनहीं औवाच्यवृत्तिजोजातिसोअवाच्यकीप्रतीतहोवैहै यातैंघटत्वादि
कतोअवाच्यवीघटादिकपदनतैंप्रतीतहोवैहै पटादिकअवाच्यप्रतीतहोवैनहीं पुनःशंका वाच्यवृत्तिअवाच्यजातिकीप
दनसैंप्रतीतमानैंतोघटपदसैंपृथिवीत्वजातिकीप्रतीतिहुईचाहिये काहेतैं घटपदकेवाच्यमैंजैसैंघटत्वजातिरहैहै तैसैं
पृथिवीत्ववीरहैहै यातैंदोनूंवाच्यवृत्तिहैं औअवाच्यहैं घटत्वकीनांई पृथिवीत्वकीवीप्रतीतिहुईचाहिये गोपदकावाच्य
जोगोताकेविषैगोत्वकीनांईपशुत्वरहैहै औदोनूंअवाच्यहैं तैसैंब्राह्मणपदसैंब्राह्मणत्वकीनांईमनुष्यत्वकीप्रतीतिहुईचा
हिये समाधानवाच्यतावछेदकजोअवाच्यताकी औवाच्यकीपदसैंप्रतीतिहोवैहै अन्यकीप्रतीतिहोवैनहीं जैसैंघटपद
कावाच्यघटव्यक्तिकी औवाच्यतावछेदकघटत्वकीप्रतीतिघटपदसैंहोवैहै पृथिवीत्ववाच्यनहीं औवाच्यतावछेदकनहीं
यातैंघटपदसैंपृथिवीत्वकीप्रतीतिहोवैनहीं वाच्यतासैंन्यूनवृत्ति औअधिकवृत्तिनहोवै किंतुजितनैंदेशमैंवाच्यताहोवै उ
तनैंदेशमैंरहैसोवाच्यतावछेदकहोवैहै घटपदकी वाच्यतासकलघटव्यक्तिमैंहै औघटत्ववीसकलघटव्यक्तिमैंरहैहै या
तैंघटकीवाच्यतासैंन्यूनवृत्ति औअधिकवृत्ति घटत्वनहीं किंतुसमानदेशवृत्तिहोनेतैं घटपदकावाच्यतावछेदकघटत्वहै
घटपदकीवाच्यतापटमैंनहीं औपृथिवीत्वपटमैंहै यातैंअधिकवृत्तिहोनेतैं घटपदकावाच्यतावछेदकपृथिवीत्वनहीं गो
पदकीवाच्यतासकलगोव्यक्तिमैंहै औगोत्ववीसकलगोव्यक्तिमैंहै यातैंगोपदकावाच्यतावछेदकगोत्वहै औअश्वमैंगोप
दकीवाच्यतानहींतासैंपशुत्वरहैहै यातैंगोपदकीवाच्यतासैंअधिकवृत्तिहोनेतैंगोपदकावाच्यतावछेदकपशुत्वनहीं तैसैं

1595

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ब्राह्मणपदकीवाच्यतासकलब्राह्मणव्यक्तिमेंहै औब्राह्मणत्वभीसकलब्राह्मणव्यक्तिमेंहै यातेंब्राह्मणपदकावाच्यतावच्छे
दकब्राह्मणत्वहै औक्षत्रियादिकनमेंब्राह्मणपदकीवाच्यतानहीं तहांमनुष्यत्वरहैहै यातेंअधिकवृत्तिहोनेतेंब्राह्मणपदकावा
च्यतावच्छेदकमनुष्यत्वनहीं इसरीतिसेंघटादिकपदनतेंघटत्वादिकनकीप्रतीतिहोवैहै औसक्तिनहींहोनेतेंघटादिपदनके
वाच्यनहीं किंतुवाच्यतावच्छेदकहैं यहशिरोमणिभट्टाचार्यकामतहै औघटादिपदनकीजातिमात्रमेंशक्तिहैव्यक्तिमेंनहीं
यहमीमांसाकामतहै शंका जिसअर्थमेंजिसपदकीशक्तिकाज्ञानहोवैतिसअर्थकीतिसपदसेंस्मृतिहोयकेशाब्दीप्रमाहोवैहै
पदकीशक्तिविनाव्यक्तिकीपदसेंस्मृति औशाब्दीप्रमानहींहुईचाहिये समाधान शब्दप्रमाणसेंतोजातिकाहीज्ञानहोवैहै त
थापि अर्थापत्तिप्रमाणतेंव्यक्तिकाज्ञानहोवैहै जैसेंदिनमेंअभोजीपुरुषकूंरात्रिभोजनविनास्थूलतासंभवैनहीं तैसेंव्य
क्तिविनाकेवलजातिमेंकोईक्रियासंभवैनहीं यातेंअर्थापत्तिप्रमाणतेंव्यक्तिकाबोधहोवैहै गामानयइसवाक्यतेंगोत्वके
आनयनकाबोधहोवैहै सोगोव्यक्तिकेआनयनविनाबनेंनहीं गोव्यक्तिकाआनयनसंपादकहै गोत्वकाआनयनसंपाद्य
है संपादकज्ञानकाहेतुसंपाद्यज्ञानअर्थापत्तिप्रमाणकहियेहै संपादकज्ञानप्रमाहै यास्थानमेंजातिकाज्ञानप्रमाणहै औ
व्यक्तिकाज्ञानप्रमाहै यहभट्टमीमांसककामतहै औरकोईजातिशक्तिवादीअनुमानतेंव्यक्तिकाबोधमानैहैं सोग्रंथांतरमें
स्पष्टहै कठिनप्रसंगलिख्यानहीं केवलजातिमेंशक्तिमानैंताकेमतमेंव्यक्तिकाबोधशाब्दप्रमाणतेंहोवैनहीं किंतु अर्थापत्ति
वा अनुमानसेंव्यक्तिकाबोधहोवैहै परंतु कोईग्रंथकारजातिमेंकुछशक्तिमानैंहैं ताकेमतमेंव्यक्तिकाज्ञानवीशब्दप्रमा ३
णतेंहीहोवैहै ताकायहअभिप्रायहै सकलपदनकीशक्तितोजातिविशिष्टव्यक्तिमेंहै परंतु शक्तिकाज्ञानजाकूंहोवैता

1596

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कूंपदसें अर्थकी स्मृति औ शाब्दबोध होवैहै अन्यकूं नहीं नहां घटपदकी घटत्वमें शक्ति है इसरीतिसें जातिशक्तिका ज्ञान पदा
र्थकी स्मृतिका औ शाब्दबोधका हेतु है औ व्यक्तिमें शक्तिके ज्ञानका उपयोग नहीं औ व्यक्ति अनंत हैं यातें सकल व्यक्तिका
ज्ञान संभवै नहीं इस कारणतें व्यक्तिकी शक्तिस्वरूपसें पदार्थकी स्मृति औ शाब्दबोधका हेतु है ताका ज्ञान हेतु नहीं इसरीति
सें घटपदकी घटत्वविशिष्टमें शक्ति होनेतें घटपदके वाच्य तो घटत्व औ घट दोनूं हैं यातें घटपदका वाच्य जो घटत्व औ घटति
नकै शाब्दबोधका हेतु घटत्वमें शक्तिका ज्ञान है या पक्षकूं कुब्जशक्तिवाद कहै हैं औरमकारसें कुब्जशक्तिवाद गदाधरभट्टाचा
र्यनें शक्तिवादके अंतमें लिख्या है सो कठिन है यातें इहां लिख्या नहीं औ घटादिक पदनतें जैसें जातिविशिष्ट व्यक्तिका बोध हो
वैहै तैसें जातिका व्यक्तिमें जो समवायादिक संबंध ताका बी बोध होवैहै यातें जाति व्यक्ति संबंध इन तीनूंमें घटादि पदनकी
शक्ति है यह गदाधरभट्टाचार्यका मत है सर्व मतनमें जातिविशिष्ट व्यक्तिमें घटादिक पदनकी शक्ति है यह मत बहुत ग्रंथका
रोंनें लिख्या है यातें घटपदकी घटत्वविशिष्टमें शक्ति कहीहै नीलके अभेदवाला एक घट है यह नीलो घट इस वाक्यका अर्थ
है तैसें वज्रहस्तः पुरंदरः यह वैदिक वाक्य है जैसें नीलो घटः या वाक्यमें विशेषणबोधक नील पद है औ घटपद विशेष्य
बोधक है तैसें वज्रहस्त पद विशेषणबोधक है औ पुरंदर पद विशेष्यबोधक है विशेषण पदके आगे विसर्ग निरर्थक है अथवा
अभेदार्थक है विशेष्यबोधक पदके आगे विसर्गका एकत्व अर्थ है वज्रहस्तके अभेदवाला एक पुरंदर है यह वा
क्यका अर्थ है इसरीतिसें लौकिक वैदिक वाक्यनकी समान रीति हैं परंतु वैदिक वाक्य दोप्रकारके हैं एक व्यावहारिक
अर्थके बोधक हैं दूसरे परमार्थतत्त्वके बोधक हैं ब्रह्मसें भिन्न सारा व्यावहारिक अर्थ कहियेहै परमार्थतत्त्व ब्रह्म कहिये

1597

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वृत्ति. हैं ब्रह्मबोधकवाक्यबीदोप्रकारकेहैं तत्पदार्थवात्वंपदार्थकेस्वरूपकेबोधकअवांतरवाक्यहैं जैसें सत्यंज्ञानमनंतंब्र प्र.
४ ह्म यहवाक्यतत्पदार्थकाबोधकहै यएषत्हृद्यंतर्ज्योतिःपुरुषः यहवाक्यत्वंपदार्थकेस्वरूपकाबोधकहै तत्पदार्थत्वंपदार्थ ३
केअभेदकेबोधकतत्त्वमसिआदिकमहावाक्यहैं जाअर्थमेंजापदकीवृत्तिहोवैताअर्थकीतापदसेंप्रतीतिहोवेहै शक्तिऔ
लक्षणाभेदतेंसोवृत्तिदोप्रकारकीहै ईश्वरकीइच्छा अथवावाच्यवाचकभावसंबंधमूलतादात्म्य अथवा पदार्थबोधहेतुसा
मर्थ्यकूं शक्तिकहैहैं जिसअर्थमेंपदकीशक्तिहोवैसोअर्थपदकाशक्यकहियेहै शक्यसंबंधकूंलक्षणाकहैहैं जैसेंगंगा
पदकीशक्तिप्रवाहमेंहै यातेंगंगापदकाशक्यप्रवाहहै तासेंसंयोगसंबंधतीरकाहै इसरीतिसेंपदकाजोअर्थसेंपरंपरासंबं
धसोलक्षणाहै जैसेंगंगापदकातीरसेंपरंपरासंबंधहै सोईतीरमेंगंगापदकीलक्षणाकहिये काहेतें साक्षात्संबंधवालेसें
जोसंबंधसोपरंपरासंबंधकहियेहैं गंगापदकाशक्तिरूपसंबंधप्रवाहसेंहै तासेंसंयोगतीरकाहै यातेंस्वशक्यसंयोगरूपगं
गापदकातीरसेंपरंपरासंबंधहै सोईलक्षणाकहियेहै यातें यहसिद्धहुवाजाअर्थसेंजिसपदकाशक्तिरूपसाक्षात्संबंध
होवैसोअर्थतिसपदकाशक्यकहियेहै जाअर्थसेंजिसपदकेशक्यकासंबंधहोवैसोअर्थतिसपदकालक्ष्यकहियेहै जैसें
गंगापदकाशक्यजोप्रवाहताकातीररूपअर्थसेंसंयोगसंबंधहै यातेंगंगापदकाशक्यप्रवाहहै औतीरलक्ष्यहै इसरीतिसें
पदकासाक्षात्संबंधऔपरंपरासंबंधरूपशक्तिलक्षणाभेदतेंवृत्तिदोप्रकारकीहै जापदकीवृत्तिजिसपुरुषकूं अज्ञातहोवैता
पदकातिसपुरुषकूंसाक्षात्कारहुयेंबीपदार्थकीस्मृतिऔशाब्दबोधहोवैनहीं यातेंशक्तिलक्षणारूपवृत्तिकाज्ञानपदा ५
र्थकीस्मृतिऔशाब्दबोधकाहेतुहै शाब्दबोधकायहक्रमहै जापुरुषकूंपदकीवृत्तिज्ञानहोवैतापुरुषकूंवाक्यकेसकलपद

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हृति. नवाक्यार्थज्ञान कहियेहै ताहीकूं शाब्दीप्रमा कहेहैं जैसें नीलो घटः यह वाक्यहै तामैं च्यारिपदहैं नीलपदहै १ ओकारपदहै म.
२ २ घटपदहै ३ विसर्गपदहै ४ नीलरूपविशिष्टमैं नीलपदकी शक्तिहै ओकारपद निरर्थकहै यह बात व्युत्पत्तिवादादिक ग्रंथन २
मैं स्पष्टहै अथवा ओकारपदका अभेद अर्थहै घटपदकी घटत्वविशिष्टमैं शक्तिहै विसर्गकी एकत्वसंख्यामैं शक्तिहै शक्ति
का ज्ञान कोश व्याकरणादिकननैं होवैहै नीलपीतादिक पदनकी वर्णमैं औ वर्णवालेमैं शक्तिहै यह कोशमैं लिख्याहै औ वि
सर्गकी एकत्वसंख्यामैं शक्तिहै यह व्याकरणतैं जानीजावैहै घटपदकी घटत्वविशिष्टमैं शक्तिहै यह व्याकरणग्रंथनमैं औ
शक्तिवादादिक तर्कग्रंथनमैं लिख्याहै औ न्यायसूत्रमैं गोतमनैं यह कह्या जाति आकृति व्यक्तिमैं सकलपदनकी शक्तिहै
अवयवकै संयोगकूं आकृति कहेहैं अनेकपदार्थनमैं रहै जो नित्य एकधर्म सो जाति कहियेहै जैसें अनेक घटनमैं नित्य
औ एक घटत्वहै सो जातिहै जातिके आश्रयकूं व्यक्ति कहेहैं यामतमैं घटपदकी शक्ति कपालसंयोगसहित घटत्वविशिष्ट
घटमैंहै औ दीधितिकार शिरोमणि भट्टाचार्यके मतमैं सकलपदनकी व्यक्तिमात्रमैं शक्तिहै जाति औ आकृतिमैं नहीं या
मतमैं घटपदका वाच्य केवलव्यक्तिहै घटत्व औ कपालसंयोग घटपदके वाच्य नहीं काहेतें जिसपदकी जिस अर्थमैं
शक्ति होवै तिसपदका सो अर्थ वाच्य कहियेहै औ शक्य कहियेहै केवलव्यक्तिमैं शक्तिहै यातैं केवलव्यक्तिही वाच्यहै घ-
का घटपदके उच्चारणतें घटत्वकी गोपदके उच्चारणतें गोत्वकी ब्राह्मणपदके उच्चारणतें ब्राह्मणत्वकी प्रतीति होवैहै सो
यामतमैं नहीं हुई चाहिये काहेतें अवाच्य अर्थकी लक्षणाबिनापदसैं प्रतीति होवै नहीं जो अवाच्य अर्थकी लक्षणा २
बिनापदसैं प्रतीति मानैं तौ घटपदके अवाच्य घटत्वकी जैसें घटपदसैं प्रतीति मानीतैसैं घटपदके अवाच्य पटादिक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शक्ति कहिहै औ अद्वैतसिद्धांतमैं सारे अपना कार्य करनेंकी सामर्थ्य ही शक्ति है जैसें तंतुमैं पट करणेंकी सामर्थ्यरूपशक्ति है व
न्हिमैं दाह करणेंकी जो सामर्थ्य सो शक्ति है तैसें पदनमैं अपनें अर्थके ज्ञानकी सामर्थ्य ही शक्ति है परंतु इतना भेद है वन्हि आदि
क पदार्थनमैं जो सामर्थ्यरूप शक्ति ताके ज्ञानकी अपेक्षा नहीं शक्ति ज्ञात होवै अथवा अज्ञात होवै दोनूं स्थानमैं वन्हि आदिक
नसें दाहादिक कार्य होवै है औ पदकी शक्तीका ज्ञान होवै तब तो अर्थकी स्मृतिरूप कार्य होवै है शक्तिका ज्ञान होवै नहीं तब अर्थ
की स्मृतिरूप कार्य होवै नहीं यातें पदकी सामर्थ्यरूप शक्ति ज्ञात होवै तब पदार्थकी स्मृतिरूप कार्य होवै है शंका जहां अतीतप
दकी स्मृति होवै तहां पदके स्मरणरूप ज्ञानतें अर्थकी स्मृति होवै है सो नहीं हुई चाहिये काहेतें सामर्थ्यरूप शक्तिवाले पदका
ध्वंस होय गया यातें अर्थकी स्मृतिका हेतु जो पद ताका अभाव है समाधान मीमांसाके मतमैं सारे पद नित्य है तिन्हकी उत्पत्ति
नास होवैं नहीं यातें पदका ध्वंस बनैं नहीं औ जो पदनकूं अनित्य मानें तो यह समाधान है पदार्थस्मृतिकी सामर्थ्य पदमैं नहीं
है किंतु पदज्ञानमैं पदार्थकी स्मृतिकी शक्ति है जहां पदका ध्वंस हुया है तहां वी पदका स्मरणरूप ज्ञान है जहां वर्त्तमान पद है तहां
पदका श्रावण साक्षात्कार ज्ञान है ता ज्ञानमैं पदार्थकी स्मृतिकी सामर्थ्य है सोई शक्ति है या पक्षमैं शक्तिवाला पद नहीं किंतु पद
का ज्ञान है यह पक्ष गदाधरभट्टाचार्यनें शक्तिवाद ग्रंथमैं ज्ञानशक्तिवाद करिके लिख्या है इस रीतिसें पदकी सामर्थ्य वा पदके-
ज्ञानकी सामर्थ्य शक्ति कहिये है दूसरे पक्षमैं वी पद शक्तिवाला है इस व्यवहारकी सिद्धिवास्ते पदका धर्म शक्ति अपेक्षित होवै तो जिस
पदका ज्ञान जिस अर्थकी स्मृतिमैं समर्थ होवै तिस पदकी तिस अर्थमैं शक्ति कहिये है इस रीतिसें शक्तिसहित पदज्ञानतें पदा
र्थकी स्मृति होवै है जितनें पदार्थनकी स्मृति होवै उननें पदार्थोंके संबंधका ज्ञान अथवा संबंधसहित सकल पदार्थनका ज्ञा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नेंतें परस्परविवेकहोवेनहीं यातेंब्रह्मसेंकूटस्थकेमुख्यसमानाधिकरणकाजीवमेंव्यवहारकरेंहें औजीवमेंकूटस्थधर्मकेआरोपवि
नामिथ्याजीवकासत्यब्रह्मसेंमुख्यसमानाधिकरणसंभवेनहीं यातेंस्वाश्रयअंतःकरणकाअधिष्ठानजोकूटस्थताकेधर्मकीविवक्षासेंजीव
काब्रह्मसेंमुख्यसमानाधिकरणकह्याहे इसरीतिसेंचित्रदीपमेंविद्यारण्यस्वामीनेंविवरणकारकेवचनतेंअविरोधकाप्रकारलिख्याहे औ
विवरणग्रंथकूंपूर्वउत्तरदेषेंयहप्रकारसंभवेनहीं काहेतेंविवरणग्रंथमेंबिंबकास्वरूपहीप्रतिबिंबमान्याहे यातेंताकेमतमेंप्रतिबिंबत्व
रूपजीवत्वतोमिथ्याहें औप्रतिबिंबरूपजीवकास्वरूपमिथ्यानहीं किंतुताकास्वरूप सत्यहे यातेंजीवकाब्रह्मसेंमुख्यसमानाधिकरण
संभवेहै औविद्यारण्यस्वामीनेंजोविवरणग्रंथकाउक्तअभिप्रायकह्यासोप्रौढिवादसेंकह्याहे तथाहि प्रतिबिंबकूंमिथ्यात्वमानेंवीजीवमेंकूट
स्थत्वविवक्षातेंमहावाक्यनमेंविवरणउक्तमुख्यसमानाधिकरणसंभवेहै यातेंमुख्यसमानाधिकरणकीअनुपपत्तिसेंप्रतिबिंबकूं
सत्यत्वअंगीकरणीयनहीं इसप्रौढिवादसेंविद्यारण्यस्वामीनेंउक्तअभिप्रायविवरणकालिख्याहे औविवरणग्रंथकाउक्तअभिप्रा
यहैनहीं प्रौढिकहियेउत्कर्षसेंजोवादकहियेकथनताकूंप्रौढिवादकहेहें प्रतिबिंबकूंमिथ्यात्वमानिकेमहावाक्यनमेंमुख्यसमाना
धिकरणवीप्रतिपादनकरिशकेंहे इसरीतिसेंअपनाउत्कर्षबोधनक्रियाहे इसरीतिसेंअंतःकरणमेंआभासजीवहे सोविज्ञानमय
कोशरूपहे बुद्धिवासनाविशिष्टअज्ञानमेंआभासईश्वरहे सोआनंदमयकोशरूपहे दोनूंकास्वरूपमिथ्याहे कूटस्थऔजीवकाअन्यो
न्याध्यासहे औब्रह्मचेतनईश्वरकाअन्योन्याध्यासहे यातेंजीवमेंकूटस्थधर्मनकेआरोपतें कहूंपारमार्थिकब्रह्मताकहीहें तैसेंईश्वर
मेंअध्यासिकब्रह्मत्वकीविवक्षातें कहूंवेदांतवेद्यत्वादिकधर्मकहेहें यातेंचेतनकेच्यारिभेदहें यहप्रक्रियाचित्रदीपमेंकहीहें परंतुबु
द्धिवासनामेंप्रतिबिंबकूंईश्वरतासंभवेनहीं तैसेंआनंदमयकोशकूंईश्वरताकथनवीसंभवेनहीं तथाहि बुद्धिवासनाविशिष्टअज्ञानमें

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1602

प्रतिबिंबकूं ईश्वरकहे हें ताकूं यहपूछ्याचाहिये ईश्वरभावकी उपाधि केवलअज्ञानहै अथवावासनासहितअज्ञानहै अथवाकेवलवासनाहै
जोप्रथमपक्षकहेहैंतोबुद्धिवासनाविशिष्टअज्ञानमें प्रतिबिंबकूंईश्वरताकथनसेंविरोधहोवैगा जोद्वितीयपक्षकहैहैं तोकेवलअज्ञानकूंही
ईश्वरभावकी उपाधिमाननाचाहिये बुद्धिवासनाविशिष्टअज्ञानकूंईश्वरकी उपाधिकहनानिष्फलहै जोविद्यारण्यस्वामीका भक्तइसरीति
सेंकहै केवलअज्ञानकूंईश्वरकीउपाधिमानैंतोईश्वरमेंसर्वज्ञतासिद्धहोवैनहीं यातेंसर्वज्ञताकेलाभअर्थ बुद्धिवासनावीअज्ञानकी विशे
षणमानीहैं यहकथनवीअसंगतहै काहेतें अज्ञानस्थसत्त्वअंशकी सर्वगोचरवृत्तिसेंही सर्वज्ञताकालाभहोनेतैंबुद्धिवासनाकूंअज्ञा
नकी विशेषणतामाननानिष्फलहै औ अज्ञानस्थसत्त्वअंशकी वृत्तिसेंही सर्वज्ञतासंभवहै बुद्धिवासनातेंसर्वज्ञतासिद्धहोवैनहीं काहे
तैं एकएकबुद्धिवासनाकूंतोनिखिलपदार्थगोचरतासंभवैनहीं सर्वज्ञतालाभकेअर्थसकलवासनाकूंअज्ञानविशेषणतामान्याचाहि
ये सोप्रलयकालविनाएककालमेंसर्ववासनाकासद्भावसंभवैनहीं यातेंसर्वज्ञताकीसिद्धिवासनातेंहोवैनहीं इसरीतिसेंधीवासना
सहितअज्ञानईश्वरकीउपाधिहै यहद्वितीयपक्षवीसंभवैनहीं जोकेवलवासनाईश्वरकीउपाधिहै यहतृतीयपक्षकहै तथापि यहपू
छ्याचाहिये एकएकवासनामें प्रतिबिंबईश्वरहै अथवासकलवासनामें एकप्रतिबिंबईश्वरहै जोप्रथमपक्षकहैहैंतो जीवजीवकीबु
द्धिकीवासनाअनंतहोनेतैं तिनमेंप्रतिबिंबईश्वरवीअनंतहोवैंगे और एकएकवासनाकूंअल्पगोचरताहोनेतैं तिनमें प्रतिबिंबरूप
अनंतईश्वरवीअल्पज्ञही होवैंगे सर्ववासनामें एकप्रतिबिंबमानैंतोसर्ववासनाप्रलयविनायुगपत्होवैनहीं औअनेकउपाधिमें
अनेकही प्रतिबिंबहोवैहै यातें सर्ववासनामें एकप्रतिबिंबसंभवैनहीं इसरीतिसेंकेवलअज्ञानहीईश्वरकीउपाधिहै विद्यारण्यस्वामीनैं
चित्रदीपमेंवासनाकानिष्फलअनुसरणकस्याहै तैसेंआनंदमयकोशकूंईश्वरताकथनवीअसंगतहै काहेतैंजाग्रत्स्वप्नमेंस्थूलावस्थावि-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्रीगणेशायनमः॥ श्रीरामोजयति॥ अथ षष्ठमप्रकाशप्रारंभः॥ अनुपलब्धिप्रमाणतें अभावकीप्रमाहोवैहै यातें अभावकी
प्रमाके असाधारणकारणकूं अनुपलब्धिप्रमाणकहैहैं न्यायवेदांतकेसंस्कारहीन अभावकेस्वरूपकूंजानेंनहीं यातें प्रथम अभावका
स्वरूपकहैहैं निषेधमुखप्रतीतिकाविषयहोवै अथवाप्रतियोगिसापेक्षप्रतीतिकाविषयहोवै सोअभावकहियेहै प्राचीनम
तसें प्रथमलक्षणहै नवीनमततें ध्वंसऔप्रागभावनशब्दजन्यप्रतीतिकेविषयनहीं यहअर्थआगेस्पष्टहोवैगा यातें दूसराल
क्षणकह्याहै प्रतियोगिकूंत्यागिकें अभावकीप्रतीतिहोवैनहीं यातें प्रतियोगिसापेक्षप्रतीतिकेविषयसकलअभावहैं यद्यपिअभा
वकीनांई संबंधऔसादृश्यवीप्रतियोगिनिरपेक्षप्रतीतिकेविषयनहीं किंतुप्रतियोगिसापेक्षप्रतीतिकेविषयहैं तिनमें अभावल
क्षणजावैहै तथापिसंबंधऔसादृश्यकीप्रतियोगितासें अभावकीप्रतियोगिताविलक्षणहै सोन्यायग्रंथनमें अभावाभावरूपता
अभावकीप्रतियोगिताकास्वरूपआचार्यनेंलिष्याहै ऐसीप्रतियोगितासंबंधकीऔसादृश्यकीहैनहीं यातें संबंधकीऔसादृश्य
कीप्रतियोगितासेंविलक्षणप्रतियोगितावालाजाकाप्रतियोगिहोवैसोअभावकहियेहै स्थूलरीतियहहै संबंधसादृश्यतें भिन्नहो
वैऔप्रतियोगिसापेक्षप्रतीतिकाविषयहोवैसोअभावकहियेहै सोअभावदोप्रकारकाहै एकसंसर्गाभावहै दूसराअन्योन्याभा
वहै तिनमें अन्योन्याभावतोएकहीविधहै संसर्गाभावकेच्यारीभेदहैं एकप्रागभावहै १ प्रध्वंसाभावहै २ सामयिकाभावहै ३ अ
त्यंताभावहै ४ इसरीतिसें च्यारिप्रकारकासंसर्गाभावऔअन्योन्याभावमिलिकेपांचप्रकारकाअभावहै कपालमें घटकीउत्पत्तिसें
पूर्वघटकाअभावहै औकचेकपालमेंरक्तरूपकीउत्पत्तिसेंपूर्वरक्तरूपकाअभावहै सोप्रागभावहै घटकीउत्पत्तिसेंउत्तरमुद्गरा
दिकतेंकपालमें घटकाअभावहै सोप्रध्वंसाभावहै औपक्वकपालमें स्यामरूपकाअभावहोवैहै सोस्यामरूपकाप्रध्वंसाभाव

1603

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वृत्ति· हैं नैयायिकमतमें प्रध्वंसाभाव सादि है औ अनंत है काहेतें घटके ध्वंसकी उत्पत्ति तो मुद्गरादिकनतें होवै है यह अनुभवसिद्ध है प्र.
१ औ ध्वंसका ध्वंस संभवै नहीं काहेतें प्रागभाव प्रतियोगि ध्वंस इन तीनूंमें एकका अधिकरणकाल अवश्य होवै है प्रागभाव ध्वंस ६
का अनाधारकाल प्रतियोगिका आधार होवै है यह नियम है जैसे घटकी उत्पत्ति हुये नाशतें पूर्व घटके प्रागभावका अनाधारकाल
है काहेतें प्रागभावका नाश होय गया औ घटका ध्वंस हुया नहीं यातें घटध्वंसका अनाधारकाल है सो घटका आधारकाल है जो
घटके ध्वंसका ध्वंस मानैं तौ घटध्वंसके ध्वंसका अधिकरणकाल घटप्रागभावका औ घटध्वंसका अनाधार होनेतें घटका आ
धार हुया चाहिये इस रीतिसें ध्वंसका ध्वंस मानें प्रतियोगिका उन्मज्जन हुया चाहिये इसीवास्ते प्रागभावकूं अनादि मानैं हैं जो
सादि मानैं तौ प्रागभावकी उत्पत्तिसें प्रथमकाल प्रागभाव औ ध्वंसका अनाधार होनेतें प्रतियोगिका आधार हुया चाहिये यातें प्रा
गभाव अनादि सांत है ध्वंस अनंत सादि है भूतलादिकनमें जहां कदाचित् घट होवै तहां घटशून्यकालमें घटका सामयिकाभा
व है किसी समयमें होवै सो सामयिकाभाव कहिये है वायुमें रूप कदाचित् बी होवै नहीं यातें वायुमें रूपका अत्यंताभाव है घ
टसें इतर पदार्थनमें जो घटका भेद सो घटका अन्योन्याभाव है सामयिकाभाव तौ सादि सांत है अत्यंताभाव अन्योन्याभाव दो
नूं अनादि अनंत हैं इस रीतिसें पांच प्रकारका अभाव है तिनकी परस्पर विलक्षणताकी साधक विलक्षणप्रतीति कहै हैं कपाल
में घटकी उत्पत्तिसें पूर्व कपालमें घट नास्ति ऐसी प्रतीति होवै है ताका विषय घटका प्रागभाव है काहेतें प्रतियोगिके उपादानकार
णमें सामयिकाभाव औ अत्यंताभाव तौ रहैं नहीं यह अर्थ आगे कहैंगे किंतु अपनें प्रतियोगिके उपादानकूं त्यागिके अन्य स्था १
नमें दोनूं अभाव रहै हैं यातें कपालमें घट नास्ति इस प्रतीतिके विषय सामयिकाभाव अत्यंताभाव नहीं औ घटकी उत्पत्तिसें पूर्व

ध्वंसका संभव नहीं काहेतें ध्वंसका प्रतियोगि निमित्त कारण होवे है कारणतें पूर्व कार्य संभवे नहीं यातें घटकी उत्पत्तिसें पूर्व क-
पाले घटो नास्ति इस प्रतीतिका विषय घटध्वंस बी नहीं औ घटका अन्योन्याभाव यद्यपि कपालमें सर्वदा है तथापि कपालो न-
घटः ऐसी अन्योन्याभावकी प्रतीति होवे है कपाले न घटः ऐसी प्रतीति अन्योन्याभावकी होवे नहीं जो ऐसी प्रतीतिका विषय है
सो प्रागभाव कहिये है तैसें मुद्गरादिकनतें घटका अदर्शन होवे तब कपाले घटो नास्ति ऐसी प्रतीति होवे है ताका विषय प्रागभाव
नहीं है काहेतें प्रागभावका नाश प्रतियोगिरूप होवे है घटकी उत्पत्तिसें उत्तर प्रागभावका संभव नहीं औ जो तीनि अभाव हैं
तिनका बी पूर्व उक्त प्रकारसें संभव नहीं यातें मुद्गरादिजन्य घटके अदर्शनकालमें कपाले घटो नास्ति ऐसी प्रतीति होवे है ता-
का विषय प्रध्वंसाभाव है इसरीतिसें प्रागभाव औ प्रध्वंसाभाव बी नशब्दजन्य प्रतीतिके विषय हैं यह प्राचीनका मत है औ न-
वीन मतमें प्रतियोगिके उपादान कारणमें बी अत्यंताभाव रहै है काहेतें अत्यंताभावका प्रतियोगिसें विरोध है अन्यतें नहीं जहां प्रति-
योगी नहीं होवे तहां सारे अत्यंताभाव होवे है यातें घटकी उत्पत्तिसें पूर्व औ प्रतियोगिके नाशकालमें बी प्रतियोगीका अत्यंताभाव
होनेतें कपाले घटो नास्ति इस प्रतीतिका विषय अत्यंताभाव है ऐसी प्रतीतिसें प्रागभाव प्रध्वंसाभावकी सिद्धि होवे नहीं किंतु
कपाले घटो भविष्यति ऐसी प्रतीति घटकी उत्पत्तिसें पूर्व होवे है ताका विषय प्रागभाव है औ घटो ध्वस्तः ऐसी प्रतीतिका विषय ध्वं-
स है इसरीतिसें घटकी उत्पत्तिसें प्रथम कपालमें घटका अत्यंताभाव औ प्रागभाव दोनूं है तिनमें कपाले घटो नास्ति इस प्रती-
तिका विषय कपालमें घटका अत्यंताभाव है औ कपाले घटो भविष्यति इस प्रतीतिका विषय कपालमें घटका प्रागभाव है तैसें मु-
द्गरादिकनतें कपालमें घटका अदर्शन होवे तिसकालमें बी कपाले घटो नास्ति कपाले घटो ध्वस्तः इसरीतिसें द्विविध प्रतीति होवे है

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तिनमैंआद्यप्रतीतिकाविषयघटकाअत्यंताभावहै औद्वितीयप्रतीतिकाविषयकपालमैंघटकाप्रध्वंसाभावहै इसरीतिसैंनवीन मतमैंप्रागभावप्रध्वंसाभावनशब्दजन्यप्रतीतिकेविषयनहीं यातैंप्रथमलक्षणप्राचीनमतकेअनुसारीहै उभयमतानुसारी द्वितीयलक्षणहै यातैंद्वितीयलक्षणहीसमीचीनहै संबंधऔसादृश्यतैंभिन्नजोअन्यसापेक्षप्रतीतिकाविषयहोवैसोअभावक हियेहै यहद्वितीयलक्षणहै भूतलेघटोनास्तिइसप्रतीतिकेविषयप्रागभावऔध्वंसनहीं काहेतैंप्रतियोगिकेउपादानमैंदोनूंअभा वरहैहैं घटाभावकेप्रतियोगीघटकाउपादानभूतलनहीं यातैंउक्तप्रतीतिकेविषयदोनूंअभावनहीं अत्यंताभावअन्योन्याभाव तौनित्यहैं औभूतलमैंघटाभावअनित्यहै यातैंघटकासामयिकाभावहीउक्तप्रतीतिकाविषयहै वायौरूपंनास्तिइसप्रतीति काविषयकेवलअत्यंताभावहै अनंतहोनेतैंप्रागभावनहीं अनादिहोनेसैंध्वंसनहीं सर्वदाहोनेतैंसामयिकाभावनहीं यातैं उक्तप्रतीतिकाविषयअत्यंताभावहै तैसैंवायुर्नरूपवान्इसप्रतीतिकाविषयअन्योन्याभावहै उक्तप्रतीतिसैंवायुमैंरूपव त्काभेदभासैहै तैसैंघटःपटोनइसप्रतीतिकाविषयअन्योन्याभावहै अन्योन्याभावकूंहीभेदकहैहै अभेदकानिषेधकजोअ भावसोअन्योन्याभावकहियेहै घटःपटोनऐसाकहनेतैंघटमैंपटकेअभेदकानिषेधहोवैहै यातैंघटमैंपटकेअभेदकानिषेध घटमैंपटकाअन्योन्याभावहै काहेतैंनशब्दविनाजोजोप्रतीतहोवैनशब्दसैंताकानिषेधहोवैहै जैसैंनशब्दविनाघटःपटःया वाक्यतैंनीलोघटःइत्यादिकनकीनांईपटमैंघटकाअभेदवाघटमैंपटकाअभेदप्रतीतहोवैहै तिसअभेदकानिषेधनशब्द सैंहोवैहै परंतुइतनाभेदहैजापदसैंनशब्दकासंबंधहोवैतापदकेअर्थकेअभेदकानिषेधहोवैहै जैसैंघटःपटोनयावाक्य २ मैंपटपदसैंनशब्दकासंबंधहै तहांघटमैंपटपदकेअर्थकेअभेदकानिषेधहोवैहै औपटोघटोनयावाक्यमैंनशब्दकासबं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1607

धघटपदसैंहै तहां घटः पदके अर्थकै अभेदकानिषेध पटमैंहोवैहै इसीवासतैं घटः पटोन यावाक्यतैंजोअन्योन्याभाव प्रतीत हो
वैताका घट अनुयोगिहै औपटप्रतियोगिहै तैसैंपटो घटोन यावाक्यतैंप्रतीत हुयेअन्योन्याभावकापट अनुयोगिहै घट
प्रति योगिहै जामैंअभाव होवै सो अभावका अनुयोगिकहियेहै जाका अभावहोवै सो प्रति योगिकहियेहै शंकाजाकानिषेध
करियेताका अभावकहियेहै सोई अभावकाप्रतियोगिकहिये औपूर्वयह कह्याघटः पटोनयावाक्यतैंघटसैं पटके अभेदकानिषे
धकरियेहै औपटो घटोनयावाक्यतैं पटसैं घटके अभेदकानिषेधकरियेहै यातैंघटः पटोनयावाक्यतैं प्रतीतहुये अभावकाप्रतियो
गीपटका अभेदहै पटनहीं तैसैंपटोघटोनयावाक्यतैंप्रतीतहुये अभावकाप्रतियोगी घटका अभेदहै घटनहीं यातैंदोनूंवाक्यन
मैंअभेदकानिषेधकहैं पटमैंऔघटसैंक्रमतैंप्रतियोगिताकथनसैंविरोधहोवैगाताकासमाधान अभेदनाम असाधारणधर्म
काहै जो अपने आत्माविनाकिसीपदार्थमैंनहींरहैकेवल अपनेमैंहीरहै सो अपना असाधारणधर्मकहियेहै घ
टका अभेद घटमैं ही रहेहै अन्यमैंनहीं यातैं घटका अभेद घटका असाधारणधर्महै सो असाधारणधर्मरूप अ
भेदहीसकलपदार्थनका अपनेमैंसंबंधहै इसरीतिसैं सारेपदार्थनका असाधारणधर्मरूप अभेदसंबंध अपनैंस्वरूपमैंरहेहै जा
पदार्थकाजोसंबंधजामैंरहैहै सोपदार्थतासंबंधसैंतिसमैंरहेहै जैसैं घटकासंयोग संबंधभूतलमैंहोवै तहांसंयोगसंबंधसैं
भूतलमैंघटरहैहै यहव्यवहारहोवैहै यातैंघटकाभूतलमैंसंयोगसंबंधहै औसंयोगसंबंधतैंभूतलमैं घटहै याकहनेमैं अर्थ
काभेदनहीं तैसैं संयोगसंबंधतैंभूतलमैंघटाभावहै औभूतलमैं घटसंयोगका अभावहै याकहनेमैंएकहीअर्थहै इसप्रकारतैं
पटमैंअभेदसंबंधतैंघटाभाव औघटके अभेदसंबंधकापटमैं अभावदोनूंसमनियतहोनेतैंएकही पदार्थहै समनियतन अभाव

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नका भेद होवै नहीं जैसें घटत्वात्यंताभाव औ घटान्योन्याभाव दोनूं घटसें भिन्न सकल पदार्थनमें रहे हैं यातें समनियत होनेतें
परस्पर भिन्न नहीं किंतु एकही अभावमें घटत्वात्यंताभावत्व औ घटान्योन्याभावत्व दो धर्म हैं औ एकही अभावके घटत्व औ घट
दोनूं प्रतियोगी हैं घटत्वात्यंताभावत्वरूपतें जिस अभावका घटत्व प्रतियोगी है तिसी अभावका घटान्योन्याभावत्वरूपतें घट
बी प्रतियोगी हैं औ जिसरीतिसें एकही अभावके रूपभेदसें दो प्रतियोगी हैं तैसें रूपभेदसें एकही अभावके प्रतियोगितावच्छे
दक दो संबंध हैं घटत्वात्यंताभावत्वरूपतें प्रतियोगितावच्छेदक समवाय संबंध है औ घटान्योन्याभावत्वरूपतें तिसी अभाव ॥
का प्रतियोगितावच्छेदक समवाय संबंध है इसरीतिसें पटादिक सकल पदार्थनमें घटाभेदका अत्यंताभाव औ घटान्योन्या
भाव बी एक है तिस एक अभावमें घटाभेदात्यंताभावत्व औ घटान्योन्याभावत्व दो धर्म हैं औ घटाभेदात्यंताभावत्वरूपतें तिस
अभावका घटाभेद प्रतियोगी है प्रतियोगितावच्छेदक स्वरूप संबंध है औ घटान्योन्याभावत्वरूपतें तिसी अभावका घट प्रतियो
गी है प्रतियोगितावच्छेदक अभेद संबंध है तिस अभेद संबंधकूंही तादात्म्य कहे हैं तद्व्यक्तित्व कहे हैं इसरीतिसें घटके अभेदके निषेध
का घट प्रतियोगी है यह कथन बी संभवे है विरुद्ध नहीं यास्थानमें यह निष्कर्ष है जिस वाक्यतें नशब्द बिना जा पदार्थमें जा संबंधसें
जो पदार्थ प्रतीत होवे नशब्द सहित तिस वाक्यतें ता पदार्थमें ता संबंधसें तिस पदार्थका निषेध प्रतीत होवे है जैसें नीलो घटः या वा
क्यतें घट पदार्थमें अभेद संबंधसें नील पदार्थ प्रतीत होवे है काहेतें अभेद संबंधसें नीलविशिष्ट घट है यह वाक्यका अर्थ है नस
हित घटो न नीलः या वाक्यतें अभेद संबंधतें नीलका निषेध घटमें प्रतीत होवे है तैसें घटः पटः या वाक्यतें बी नशब्द बिना पट पदा ३
र्थमें अभेद संबंधतें घट पदार्थ प्रतीत होवे है काहेतें जहां दोनूं पदनमें समानविभक्ति होवे तहां एक पदार्थमें अभेद संबंधसें अ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1609

घटपदार्थप्रतीतहोवैहै यहनियमहै नीलोघटः यावाक्यकीनांई घटः पटः यावाक्यमें दोनूं पदसमानविभक्तिवालेहैं यातेंनशब्द
विनाघटःपटः यावाक्यतेंवीपटपदार्थमेंअभेदसंबंधसें घटपदार्थप्रतीतहोवैहै यद्यपिअभेदसंबंधसेंपटपदार्थमेंघटपदार्थ
संभवैनहीं तथापिएकपदार्थमें अभेदसंबंधसेंअपरपदार्थकीप्रतीतिकीसामग्रीसमानविभक्तिहै सोघटः पटः यावाक्यमेंवी
है यातेंनशब्दविनाघटःपटः यावाक्यतेंपटपदार्थमेंअभेदसंबंधसेंघटप्रतीतहोवैहै परंतुपटपदार्थमेंअभेदसंबंधसेंघटपदा
र्थकीप्रतीतिभ्रमरूपहोवैगीप्रमानहीं यातेंनशब्दविनाएकपदार्थमेंजासंबंधसेंअपरपदार्थकीप्रतीतिभ्रमरूपवाप्रमारूप
होवै तहांनशब्दमिलेंएकपदार्थमेंतासंबंधसेंअपरपदार्थकानिषेधहोवैहै इसरीतिसेंएकपदार्थमेंअभेदसंबंधसेंअप
रपदार्थकानिषेधकअभावअन्योन्याभावकहियेहै तासेंभिन्नजोअभाव ताकूंसंसर्गाभावकहेहैं संसर्गाभावप्राचीनम
तमेंच्यारिप्रकारकाहै अनादिसांतजोअभावसोप्रागभावकहियेहै अपनेंप्रतियोगिकेउपादानकारणमेंप्रागभावरहेहैं जै
सेंघटकेप्रागभावकाप्रतियोगिघटहै ताकेउपादानकारणकपालमें घटकाप्रागभावरहेहै कपालकीउत्पत्तिसेंवीप्रथमक
पालकेउपादानकारणसें घटकाप्रागभावरहेहै इसरीतिसेंसृष्टितेंप्रथमघटारंभकपरमाणुसमुदायमें घटकाप्रागभाव
रहेहै औपरमाणुघटकेमध्यजोद्व्यणुकादिकपालांतअवयवीहैं तिनसर्वकेप्रागभावसृष्टितेंप्रथमपरमाणुमेंरहेहैं इ
सरीतिसें प्रागभावअनादिकहियेउत्पत्तिरहितहै औसांतकहियेअंतवालाहै अंतनामध्वंसकाहै जाकूंनासकहेहैं जोघटकी
उत्पत्तिकीसामग्री तासें घटकेप्रागभावकाअंतहोवैहै यातें घटकेप्रागभावकाअंतघटरूपहीहै घटकेप्रागभावकाध्वंसघट
सेंपृथक्नहीं यद्यपिप्रध्वंसाभावअनंतहै औघटसांतहै घटकेप्रागभावकाध्वंसघटरूपहोवैतोप्रध्वंसाभाववीसांतहोवै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA.

1610

वृ०सि० गा प्रध्वंसाभाव अनंत है या नियम का भंग होवेगा तथापि ध्वंस नाश अंत ये पर्यायशब्द हैं सो ध्वंस दो प्रकार का होवे है एक तो म०
५ भावपदार्थ का नाशरूप ध्वंस होवे है औ दूजा अभाव का नाशरूप ध्वंस होवे है भावपदार्थ का नाशरूप ध्वंस तो अभावरूप हो ६
वे है ताही कूं प्रध्वंसाभाव कहे हैं जैसे घटादिक भावपदार्थन का नाश अभावरूप है ताकूं प्रध्वंसाभाव कहे हैं औ अभावपदा
र्थ का नाशरूप ध्वंस भावरूप होवे है ताकूं ध्वंस प्रध्वंस तो कहे हैं औ ध्वंसाभाव प्रध्वंसाभाव कहे नहीं जैसे घट का प्रागभा
व अभावपदार्थ है ताका नाशरूप ध्वंस घट है सो भावरूप है ताकूं प्रध्वंसाभाव नहीं कहे हैं किंतु घट के प्रागभाव का नाशरूप
घट कूं स्वप्रागभाव का ध्वंस औ प्रध्वंस ही कहे हैं इसरीतिसैं दो प्रकार का ध्वंस होवे है तिनमैं भावरूप ध्वंस तो सांत है परंतु
अभावरूप ध्वंस अनंत है यातें घट के प्रागभाव का ध्वंस घटरूप तो सांत है तथापि प्रध्वंसाभाव अनंत है या नियम की हानि
नहीं इसरीतिसैं अनादि सांत जो अभाव सो प्रागभाव कहिये है अनादि अभाव तो अत्यंताभाव वी है सो सांत नहीं औ सांत
अभाव सामयिकाभाव वी है सो अनादि नहीं औ वेदांत सिद्धांत मैं अनादि औ सांत माया है सो अभाव नहीं किंतु जगत का
उपादानकारण माया है जो अभावरूप माया होवे तो उपादानकारणता संभवे नहीं काहेतें घटादिकन के उपादान कारण क
पालादिक भावरूप ही प्रसिद्ध हैं अभाव किसी का उपादानकारण नहीं यातें माया अभावरूप नहीं किंतु भावरूप है यद्यपि-
माया भाव अभाव सैं विलक्षण अनिर्वचनीय है यातें भावरूपता वी माया विषै संभवे नहीं तथापि अभावरूप माया नहीं
यातें प्रागभाव के लक्षण मैं अभावपद के प्रवेसतें माया मैं प्रागभाव का लक्षण जावे नहीं औ मायाभावरूप नहीं या कथन
का यह अभिप्राय है कालत्रय मैं जाका बाध न होवे सो परमार्थ सत् कहिये है औ भाव कहिये है ऐसा ब्रह्म है माया नहीं काहे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तैं ज्ञानतें उत्तरकालमैं मायाका बाध होवैहै यातें परमार्थसत्स्वरूपभाव तौ यद्यपि माया नहीं तथापि विधिसुखप्रतीतिका जो वि
षय होवै सो वी सत् कहियेहै औ भाव वी कहियेहै निषेधमुखप्रतीतिका विषय होवै सो अभाव कहियेहै निषेधमुखप्रतीति की
विषयता मायामैं नहीं यातें माया वी भावरूपहै यद्यपि माया प्रकृति अविद्या अज्ञान ये शब्दपर्यायहैं औ अविद्या अज्ञान श
ब्दनमैं अकार निषेधका वाचक है यातें माया वी निषेधसुखप्रतीतिका विषय होनेतें अभावरूप कह्या चाहिये तथापि अका
रका केवल निषेध अर्थ नहीं है किंतु विरोधि भेदवान् अल्प वी अकारके अर्थहैं जैसें अधर्मशब्दमैं अकारका विरोधी अर्थहै
धर्मविरोधीकूं अधर्म कहैहैं औ अब्राह्मणोनाचार्य यास्थानमैं अकारका भेदवान् अर्थहै ब्राह्मणसैं भिन्न आचार्यताके
योग्य नहीं यह वाक्यका अर्थहै औ अनुदरादेवदत्तकन्या यास्थानमैं अकारका अल्प अर्थहै अल्पउदरवाली देवदत्तकी कन्या
है यह वाक्यका अर्थहै जैसें इतनें स्थानोंमैं अकारका निषेध अर्थ नहीं तैसें अविद्याशब्द औ अज्ञानशब्दमैं वी अकारका नि
षेध अर्थ नहीं किंतु विरोधी अर्थहै मायाका ज्ञानसैं बध्यघातकभाव विरोध है यातें अज्ञान कहैहैं माया बध्य है औ ज्ञान घातक
है वेदांतवाक्यजन्य ब्रह्माकारवृत्तिकूं विद्या कहैहैं सो मायाकी विरोधिनी है यातें अविद्या कहैहैं अज्ञानशब्द औ अविद्याशब्दका
वाच्य वी माया है तौ वी अकारका विरोधि अर्थ होनेतें माया भावरूप है भावरूप वी ब्रह्मकी नांई परमार्थसत्रूप नहीं किंतु विधि
सुखप्रतीतिका विषय होनेतें व्यावहारिकसत्रूप है प्रागभावके लक्षणमैं अभावपद नहीं होता तौ मायामैं लक्षणकी अति
व्याप्ति होती काहेतैं माया अनादि है औ सांत है यातें अनादि सांत जो अभाव सो प्रागभाव कहियेहै सादि अनंत जो अभाव सो प्र
ध्वंसाभाव कहियेहै घटादिकनका ध्वंस मुद्गरादिकनतें होवैहै यातें सादि है औ अनंतता मैं जक्ति पूर्व कही है अनंत अभाव कूं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वृ॰नि॰ ५

प्रध्वंसाभाव कहैं तौ अत्यंताभावमैं अतिव्याप्तिहोवैगी यातैं प्रध्वंसाभावकेलक्षणमैं सादि कह्याचाहिये अत्यंताभावसादिनहीं किंतु अनादिहै औ सादिअभावकूं प्रध्वंसाभाव कहै तौ सादिअभावसामयिकाभावभीहै तहां अतिव्याप्तिहोवैगी सामयिकाभाव अनंतनहीं किंतु सांतहै सादिअनंतकूं प्रध्वंसाभाव कहैं तौ मोक्षमैं अतिव्याप्तिहोवैगी काहेतैं ज्ञानतैं मोक्षहोवैहै यातैं सादिहै औ मुक्तकूं फेरिसंसारहोवैनहीं यातैं अनंतहै परंतु मोक्षभावरूपहै अभावरूपनहीं यातैं प्रध्वंसाभावकेलक्षणमैं अभाव कह्याचाहिये यद्यपि अज्ञान औ तिसकेकार्यकी निवृत्तिकूं मोक्ष कहैहैं औ निवृत्तिनाम ध्वंसकाहै यातैं मोक्षभी अभावरूपहै यातैं प्रध्वंसाभावके लक्षणमैं अभावपद नहीं गेरै तौभी मोक्षमैं अतिव्याप्तिरूपदोषनहीं काहेतैं अलक्ष्यमैं लक्षणजावै ताकूं अतिव्याप्तिकहैहैं अज्ञान औ ताके कार्यकेध्वंसमोक्षकूं लक्ष्यतास्पष्टहीहै सकलनाशध्वंसाभावकेलक्षणकेलक्ष्यहैं सकलनाशनकेअंतर्भूतही कार्यसहित अज्ञानकानाशरूपमोक्षहै तथापि कल्पितकी निवृत्ति अधिष्ठानरूपहोवैहै अज्ञान औ ताकाकार्यकल्पितहै यातैं तिन्हकीनिवृत्ति अधिष्ठानब्रह्मरूपहै यातैं अभावरूपमोक्षनहीं किंतुब्रह्मरूपहोनेतैं भावरूपहै तामैं ध्वंसकालक्षणजावै तौ अतिव्याप्तिहोवैगी यातैं सादिअनंतजो अभावसो प्रध्वंसाभाव कहियेहै उत्पत्ति औ नाशवालाजो अभावसो सामयिकाभाव कहियेहै जहां किसीकालमैं पदार्थहोवै औ किसीकालमैं नहोवै तहां पदार्थशून्यकालमैं तिसपदार्थकासामयिकाभावहोवैहै जैसे भूतलादिकनमैं घटादिक किसीकालमैंहोवैहैं किसीकालमैं नहीं होवैहैं तहां घटशून्यकालसंबंधी भूतलादिकनमैं घटादिकनका सामयिकाभावहै समयविशेषमैं उपजै औ समयविशेषमैं नष्टहोवै सो सामयिकाभाव कहियेहै भूतलसैं घटकूं अन्यदेशमैं लेजावैं तब घटका अभाव भूतलमैं उपजैहै औ तिसी भूतलमैं घटकूं ले आवैं तब घटका अभाव भूतलमैं नष्टहोवैहै इसरीतिसैं सामयिका

1612

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भावउत्पत्तिनाशवालाहैं उत्पत्तिवालाअभावप्रध्वंसाभावभीहै तहांअतिव्याप्तिपरिहारवास्तेंसामयिकाभावकेलक्षणमेंनाशप
दकह्याहै प्रध्वंसाभावयद्यपिउत्पत्तिवालाअभावहै तथापिनाशवालानहीं यातेंनाशपदकूंहैं अतिव्याप्तिदोषनहीं नाशवाले
अभावकूं सामयिकाभाव कहैं तौ प्रागभाववेंमेंअतिव्याप्तिहोवेगी यातेंसामयिकाभावकीलक्षणमेंउत्पत्तिपदकह्याहै लक्षणमें
उत्पत्तिपदकेप्रवेशतेंप्रागभाववेंमेंअतिव्याप्तिनहीं काहेतेंप्रागभावकानाशतोहोवैहै परंतुअनादिहोनेतेंउत्पत्तिहोवैनहीं औ
सामयिकाभावकेलक्षणमेंअभावपदनहींगेरैं किंतुउत्पत्तिनाशवालेकूंसामयिकाभावकहैंतौघटादिकनमेंअतिव्याप्तिहोवैगी काहे
तेंघटादिकभीभूतभौतिकअनंतपदार्थउत्पत्तिऔनासवालेहैं औअभावपदकेप्रवेशतेंघटादिकनकूंभावरूपताहोनेतेंतिनमें
सामयिकाभावकेलक्षणकीअतिव्याप्तिनहीं इसरीतिसें भूतलादिकनमें घटादिकनकाउत्पत्तिऔनाशवालाअभावसामयिका
भावहै अन्योन्याभावसेंभिन्नजोउत्पत्तिशून्यऔनाशशून्यअभावसोअत्यंताभावकहियेहै जहांकिसीकालमें जोपदार्थनहो
वें तहांतिसपदार्थकाअत्यंताभावकहियेहै जैसेंवायुमेंरूपकिसीकालमेंनहीं होवैहै तहांरूपकाअत्यंताभावहै तैसेंगंधभीवा
युमेंसर्वदानहीं होवैहैयातेंगंधकावायुमेंअत्यंताभावहै स्नेहगुणकेवलजलमेंहीरहेहै अन्यमेंकदीरहेनहीं यातेंजलभिन्न
अन्यपदार्थनमेंस्नेहकाअत्यंताभावहै आत्मामेंरूपरसगंधस्पर्शशब्दकदीभीरहेंनहीं यातेंरूपादिकनकेअत्यंताभावआ
मेंरहेहैं पृथिवीऔजलमेंरसरहेहै अन्यमेंकदीरहेनहीं यातेंपृथिवीजलभिन्नपदार्थनमेंरसकाअत्यंताभावहै पृथिवीत्वजा
तिकेवलपृथिवीमेंरहेहै जलादिकनमेंकदीरहेनहीं यातेंजलादिकनमेंपृथिवीत्वकाअत्यंताभावहै ब्राह्मणभिन्नक्षत्रिया
दिकनमेंब्राह्मणत्वकदीरहेनहीं यातेंक्षत्रियादिकनमेंब्राह्मणत्वकाअत्यंताभावहै आकाशकालदिशाआत्माव्यापकहैंति

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नमें कदीबी क्रिया होवै नहीं यातें आकाशादिकनमें क्रियाका अत्यंताभाव है पृथिवी जल तेज पवन मनमें क्रिया होवैहै औ कदाचि
त् क्रियाका अभाव होवैहै यातें पृथिवी आदिक निष्क्रिय होवैं तब पृथिवी जल तेज पवनमें मनमें क्रियाका अत्यंताभाव नहीं तैसें सामयिका
भावबी नहीं काहेतें सामयिकाभाव केवल द्रव्यका होवैहै क्रियाका सामयिकाभाव संभवै नहीं यह वार्ता आगें कहेंगे यातें सामयि
काभावबी नहीं किंतु पृथिवी आदिक पांचमें क्रियाका प्रागभाव औ प्रध्वंसाभाव है इसरीतिसें भूतलादिकनमें जहां कदाचि... यातें
दादिक होवै कदाचित् नहीं होवै तहां सारे सामयिकाभाव है अत्यंताभाव नहीं काहेतें अभावका प्रतियोगिसें विरोध है जहां प्रति
योगि होवै तहां अभाव होवै नहीं किंतु अभावका अभाव होवैहै औ जहां भूतलादिकनमें कदाचित् घटादिक होवैं औ कदाचित न
हीं होवै तहां अत्यंताभाव मानें तौ अत्यंताभाव नित्य है यातें घटकालमेंबी घटका अत्यंताभाव होनेंतें अत्यंताभावका अपनें
प्रतियोगिसें विरोध नहीं होवैगा यातें भूतलादिकनमें घटादिकनका अत्यंताभाव संभवै नहीं जैसें घटकी उत्पत्तिसें प्रथम
कपालमें घटका प्रागभाव होवैहै घटरूप प्रतियोगिके उपजें कपालमें घटका प्रागभाव रहै नहीं ताका नाश होय जावैहै यातें प्रा
गभावका प्रतियोगिसें विरोध है तैसें कपालमें घटका प्रध्वंसाभाव होवै तब घट रहै नहीं औ घट रहै जितनें काल कपालमें घ
टका प्रध्वंसाभाव होवै नहीं यातें प्रध्वंसाभावका बी प्रतियोगिसें विरोध स्पष्ट है तैसें भूतलादिकनमें संयोगसंबंधसें घटादि
क रहैं जितनें भूतलादिकनमें घटादिकनके सामयिकाभाव रहै नहीं किंतु जितनें काल घटादिक प्रतियोगि भूतलादिकनमें न हो
वैं उतनें काल सामयिकाभाव रहैहै औ घटादिक प्रतियोगि आय जावैं तब सामयिकाभावका नाश होवैहै आये घटकूं उठाय लेवै तब ६
व घटका सामयिकाभाव औरउपजैहै इसीवास्तें सामयिकाभावके उत्पत्ति औ नाश मानेंहैं इसरीतिसें सामयिकाभावकाबी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अभावनिश्चयमें इंद्रियजन्यता प्रतीत होवैहै नैयायिककीशंकाका यहसमाधान सर्वत्रव्यापकहै औ अधिकरणज्ञानकी इंद्रियजन्यता अभा
वज्ञानमैंभासैहै यहभेदधिक्कार वेदांतपरिभाषादिकनका समाधानसर्वत्रव्यापकनहीं किंतु जहांप्रत्यक्षयोग्यभूतलादिक अभावके अ
धिकरणहैं तहांतो यहसमाधानसंभवैहै औजहांप्रत्यक्षअयोग्यवायुआदिक अभावके अधिकरणहैं तहांउक्तसमाधानसंभवैनहीं औ
अनुपलब्ध्यारसनेंद्रियेणाम्लरसाभाववन्माम्रंजानामि यास्थानमैंवी अधिकरणकाज्ञान रसनेंद्रियजन्यसंभवैनहीं काहेतैं अम्लरसके
अभावका अधिकरण आम्रफलहै ताके ज्ञानकेसामर्थ्य रसनेंद्रियमैंनहीं रसनेंद्रियमैं केवलरसज्ञानकी सामर्थ्यहै द्रव्यज्ञानकी सामर्थ्य
नहीं यातें रसनेंद्रियजन्याम्लरसोपलब्धिके अभावतें आम्रफलमैं रसके अभावका निश्चयवालोमैंहूं यहतात्पर्यसैंउक्तव्यवहारहोवैहै यद्य
पि उक्तवाक्यके अक्षरमर्यादासैंउक्तअर्थक्लिष्टहै तथापि अन्यगतिके असंभवतैं उक्तअर्थही मान्याचाहिये यातैंनैयायिककीशंकाका अ
स्मदुक्तही समाधानहै इसरीतिसैं अनुपलब्धिप्रमाणतैं अभावकानिश्चयहोवैहै यहपक्षनिर्दोषहै औजोनैयायिकसंकाकरै अभाव
प्रमाकापृथक्प्रमाणमाननेंमैं गोरवहै औ घटादिकनकी प्रत्यक्षप्रमामैंइंद्रियकी प्रमाणता निर्णीतहै तानिर्णीतप्रमाणसैं अभावप्र
माकीउत्पत्तिमानेंलाघवहै ताशंकाका यहसमाधानहै इंद्रियकूं प्रमाणता कहनेवालानैयायिकवी अनुपलब्धिकूं कारणता तौमानेहैं
अनुपलब्धिकूं करणतानहींकहेहैं अद्वैतवादी इंद्रियकूं अभावकीकरणता नहींमानेंहै यातें इंद्रियका अभावतें स्वसंबद्धविशेषणता
औसंबद्धविशेषणता संबंधनहींमानना होवैहै नैयायिककूं अप्रसिद्धसंबंधकी कल्पनागोरवहै औ अनुपलब्धिमैं सहकारीकारणता तौनैयायिकवी
मानेंहै तिसकूं अद्वैतवादी करणतानाम धरिके प्रमाणता कहेहैं यातें नैयायिकमतमैंही गोरवहै अद्वैतमतमैं नहीं औरवेदांतपरिभाषा
काटीकाकार मूलकारकापुत्रहुयाहै तिसकूं अद्वैतशास्त्रके संस्कारन्यूनहुयेहैं औ न्यायशास्त्रके संस्कार अधिकरहेहैं यातें मूलकाव्या

1615

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वृत्तिः ख्यान करिकैं नैयायिकमतका तिसनैं इसरीतिसैं उज्जीवन लिख्या है अनुपलब्धि पृथक् प्रमाण नहीं अभावका ज्ञान इंद्रियतैं हीहोवै है प्र.
३७ औ जो कहै है अभावके साथि इंद्रियका संबंध नहीं है विषयतैं संबंधविना इंद्रियजन्यज्ञान होवै नहीं विशेषणता औ स्वसंबद्धविशेषणता जो ६
नैयायिक संबंध मानैं हैं सो अप्रसिद्ध है यातैं अप्रसिद्धकी कल्पना गौरव है सो असंगत है काहेतैं घटाभाववत् भूतलं यह प्रतीति सर्वकूं सं
मत है या प्रतीतिसैं घटाभावमैं आधेयता भासै है औ भूतलमैं अधिकरणता भासै है परस्पर संबंधविना आधाराधेयभाव होवै नहीं
यातैं भूतलादिक अधिकरणमैं अभावका संबंध सर्वकूं इष्ट है जो अभावकूं प्रत्यक्ष नहीं मानैं तिनकूं वी अभावका तो अंगीकार है औ भू
तलादिकनमैं अभावकी अधिकरणताका अंगीकार है यातैं अधिकरणसैं अभावका संबंध सर्वकूं इष्ट है ता संबंधका व्यवहार यासतैं को
ई नाम कह्या चाहिये यातैं अधिकरणमैं अभावके संबंधकूं विशेषणता कहैहैं इसरीतिसैं विशेषणता संबंध अप्रसिद्ध नहीं यातैं अप्रसिद्धक
ल्पनारूप गौरव नैयायिकमतमैं नहीं अभावका अधिकरणसैं संबंध सर्वमतसिद्ध है औ इंद्रिय अधिकरणका संयोगादि संबंध वी सर्वम
तसिद्ध होनेतैं स्वसंबद्धविशेषणता दोनूं संबंध अप्रसिद्ध नहीं औ निर्घटं भूतलं पश्यामि ऐसा अनुव्यवसाय होवै है यातैं भूतलादिकन
मैं अभावका ज्ञान नेत्रादिजन्य है जहां नेत्रजन्यज्ञान होवै तहां हि पश्यामि ऐसा अनुव्यवसाय होवै है औ अद्वैतमतमैं भूतलका ज्ञान ने
त्रजन्य है घटाभावका ज्ञान अनुपलब्धिजन्य है नेत्रजन्य नहीं यातैं अनुव्यवसायज्ञानमैं अपनें विषयव्यवसायकी विलक्षणता भा
सी चाहिये जैसैं पर्वतो वन्हिमान् यह ज्ञान पर्वत अंसमैं प्रत्यक्ष है वन्हि अंसमैं अनुमिति है ताका पर्वतं पश्यामि वन्हिमनुमिनोमि
ऐसा अनुव्यवसाय होवै है तामैं व्यवसायकी विलक्षणता भासै है सो विलक्षणता इहां नेत्रजन्यत्व औ अनुमानजन्यत्व है तैसैं अ ३७
भावज्ञानमैं नेत्रजन्यत्व औ अनुपलब्धिजन्यत्व रूप विलक्षणता होवै तौ अनुव्यवसायमैं भासी चाहिये औ केवल नेत्रजन्यत्व ही अ

1616

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नुव्यवसायमेंभासेहै यातेंअभावकाज्ञानवीइंद्रियजन्यहै पृथक्प्रमाणजन्यनहीं औअभावज्ञानकूंइंद्रियजन्यनहींमानेंतोवीअद्वैतवादीअनुपल
ब्धिजन्यमानिकेप्रत्यक्षरूपकहैहैं सोवीअसंगतहै काहेतेंजोप्रत्यक्षज्ञानहोवेसोइंद्रियजन्यहोवेहै यानियमकाबाधहोवेगा यातेंअभाव
काज्ञानइंद्रियजन्यहै इसरीतिसें वेदांतपरिभाषाकीटीकामेंनैयायिकमतकाउज्जीवनसकलअद्वैतग्रंथनसेंविरुद्धलिख्याहै सोयुक्ति
सेंविरुद्धहै काहेतेंप्रथमजोकह्याअभावकाअधिकरणसेंसंबंधसर्वकूंइष्टहै यातेंअप्रसिद्धकल्पनानहींसोअसंगतहै काहेतेंअभा
वऔअधिकरणकासंबंधतोइष्टहै परंतुविशेषणतासंबंधमेंप्रत्यक्षज्ञानकीकारणताअप्रसिद्धहै काहेतेंजोअभावज्ञानकूंइंद्रियज
न्यतामानेंतिसीकेमतमेंविशेषणतासंबंधइंद्रियजन्यज्ञानकाकारणमाननाहोवेहै अन्यमतमेंविशेषणतासंबंधमेंइंद्रियजन्य
ज्ञानकीकारणतामाननीहोवेनहीं यातेंअप्रसिद्धकल्पनाकापरिहारनैयायिकमतमेंहोवेनहीं औजोअभावज्ञानकूंपृथक्प्रमाणज
न्यतामाननेंमेंदोषकह्यानिर्घटंभूतलंपश्यामिऐसाअनुव्यवसायनहींहुयाचाहियेसोवीसंभवेनहीं काहेतेंघटाभावविशिष्टभूतलके
चाक्षुषज्ञानवालेमेंहुं ऐसाअनुव्यवसायहोवे उक्तवाक्यकावीयेहीअर्थहै याअनुव्यवसायमेंघटाभावविशेषणहैभूतलविशेष्यहै तावि
शेष्यभूतलमेंचाक्षुषज्ञानकीविषयताहै घटाभावविशेषणमेंनहींहै तोवीघटाभावविशिष्टभूतलमेंप्रतीतहोवेहै कहुंविशेषणमा
त्रकाधर्मकहुंविशेष्यमात्रकाधर्मकहुंविशेषणविशेष्यदोनूंकाधर्मविशिष्टमेंप्रतीतहोवेहै जैसेंदंडीपुरुषयाज्ञानमेंदंडविशेषणहै
औपुरुषविशेष्यहै जहांदंडनहींहैपुरुषहै तहांदंडीपुरुषोनास्तीऐसीप्रतीतिहोवेहै यातेंदंडरूपविशेषणकाअभावहै पुरुषरूपवि
शेष्यकाअभावनहीं तथापिविशेषणमात्रवृत्तिअभावदंडविशिष्टपुरुषमेंप्रतीतहोवेहै जहांदंडहैपुरुषनहींहै तहांविशेष्यमात्रकाअ
भावहै औदंडीपुरुषोनास्ती इसरीतिसेंदंडविशिष्टपुरुषमेंप्रतीतहोवेहै जहांदंडनहीं औपुरुषवीनहींहै तहांविशेषणविशेष्यदोनूं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

काअभावविशिष्टमेंप्रतीतहोवेहै तैसेविशेष्यभूतलमेंचाक्षुषज्ञानकीविषयताहै औविशेषणजोघटाभावतामेंनहींहै तौबीघटाभाववि
शिष्टभूतलमेंप्रतीतहोवैहै जैसेंवन्हिमंतंपर्वतंपश्यामि इसरीतिसेंपर्वतकेप्रत्यक्षकाअनुव्यवसायहोवेहै तहांचाक्षुषज्ञानकीविषय
ताविशेष्यपर्वतमेंहै औविशेषणजोवन्हितामेंनहींहै तथापिवन्हिविशिष्टपर्वतमेंचाक्षुषज्ञानकीविषयताप्रतीतहोवैहै औजोदोषकह्या
घटाभावऔभूतलविजातीयज्ञानकेविषयहोवैंतौ पर्वतंपश्यामिवन्हिमनुमिनोमि इसरीतिसेंविलक्षणव्यवसायज्ञानकूंविषयकरनेंवा
लाअनुव्यवसायहुयाचाहिये यहकथनबीअद्वैतग्रंथनकेसिथिलसंस्कारवालेकाहै काहेतेंअभावकाज्ञानअनुपलब्धिप्रमाणजन्य
हैइसअर्थकूंजोमानेताकूंघटानुपलब्ध्याघटाभावंनिश्चिनोमिनेत्रेणभूतलंपश्यामि ऐसाअनुव्यवसायअबाधितहोवेहै तासेंव्य
वसायज्ञानकीविषयताघटाभावमें औभूतलमेंविलक्षणमानेहैं औजोदोषकह्या है अनुपलब्धिजन्यतामानिकेअद्वैतवादीअभाव
ज्ञानकूंप्रत्यक्षमानेहैं औजोप्रत्यक्षज्ञानहोवेसोइंद्रियजन्यहोवेहै यातेंउक्तनियमकाअनुपलब्धिवादिकेमतमेंबाधहोवेगा सोबीसिद्धां
तकेअज्ञानतेंहै यातेंअसंगतहै काहेतेंअनुपलब्धिप्रमाणजन्यअभावकाज्ञान सारेप्रत्यक्षनहींहै किंतुकोईज्ञानप्रत्यक्षहै औवायुमेंरू
पाभावकाज्ञानपरमाणुमेंमहत्त्वाभावकाज्ञानइत्यादिकअनुपलब्धिजन्यहैं तथापिपरोक्षहैं अथवाअनुपलब्धिप्रमाणजन्यबीअभा
वकाज्ञानसारेपरोक्षहै यहपूर्वप्रतिपादनकरिआयेहैं यातेंअनुपलब्धिवादीअभावज्ञानकूंप्रत्यक्षमानेंयहधर्मराजकेपुत्रकाकथनसिद्धां
तकेअज्ञानसेंहै औवेदांतपरिभाषादिकग्रंथनमेंजोकहूंअभावज्ञानकूंप्रत्यक्षताकहीहै सोप्रौढिवादसेंकहीहै जोअनुपलब्धिप्रमाणज
न्यअभावज्ञानकूंप्रत्यक्षतामानिलेवेतौबीवक्ष्यमाणरीतिसेंअभावज्ञानमेंइंद्रियजन्यतासिद्धहोवेनहीं यहग्रंथकारनकाप्रौढिवादहै प्रति ३८
वादीकीउक्तिमानिकेबीस्वमतमेंदोषकापरिहारकरेताकूंप्रौढिवादकहेहैं औअभावज्ञानकूंप्रत्यक्षतामानिकेइंद्रियजन्यतानहींमानेतौप्र

1618

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त्यक्षज्ञान इंद्रियजन्य होवैहै यानियमका बाध होवैगा यह कथन बी असंगत है काहेतें ताकूं यह पूछै है जो प्रत्यक्षज्ञान होवै सो इंद्रियजन्य होवै
है इंद्रियजन्यसें भिन्न प्रत्यक्ष होवै नहीं ऐसा नियम है अथवा जो इंद्रियजन्यज्ञान होवै सो प्रत्यक्ष होवै है प्रत्यक्षसें भिन्न इंद्रियजन्य होवै नहीं
यह नियम है तिनमें प्रथमपक्ष कहैं तौ असंगत है ईश्वरका ज्ञान प्रत्यक्ष है इंद्रियजन्य नहीं है न्यायमतमें नित्य है औ सिद्धांतमतमें मायाजन्य है ईश्व
रकै इंद्रियनका अभाव है यातें ताका ज्ञान इंद्रियजन्य नहीं औ दशमस्त्वमसि या वाक्यतें उत्पन्न हुया ज्ञान प्रत्यक्ष है इंद्रियजन्य नहीं जो ऐ
सें कहै दशमपुरुषकूं अपने शरीरमें दशमताका ज्ञान होवै है सो शरीर नेत्रके योग्य है यातें दशमका ज्ञान बी नेत्रइंद्रियजन्य है सो संभवै न
हीं काहेतें निमीलितनयनकूं बी वाक्यसुनिके दशमका ज्ञान होवै है जो नेत्रजन्य होवै तौ नेत्रव्यापारविना नहीं हुया चाहिये यातें दशम
काज्ञान नेत्रजन्य नहीं औ जो ऐसें कहै दशमका ज्ञान मनोजन्य है यातें इंद्रियजन्य है सो बी संभवै नहीं काहेतें दे[व]दत्त यज्ञदत्तादिक नाम आत्माके नहीं किंतु
न्यायमतमें शरीरविशिष्ट आत्माके वेदांतमतमें सूक्ष्मविशिष्टस्थूलशरीरके हैं तैसें त्वं अहं यह व्यवहार बी सूक्ष्मविशिष्टस्थूलशरीरमें हो
वैहै तास्थूलशरीरका ज्ञान मनसें संभवै नहीं बाह्यपदार्थके ज्ञानका मनमें सामर्थ्य नहीं जो ऐसें कहैं मनका अवधान होवै तौ वाक्यसें दश
मका ज्ञान होवै विक्षिप्तमनवालेकूं होवै नहीं यातें अन्वयव्यतिरेकतें दशमज्ञानका हेतु मन होनेतें दशमका ज्ञान मानस है यातें इंद्रियज-
न्य है सो बी संभवै नहीं इसरीतिके अन्वयव्यतिरेकतें सकलज्ञानोंका हेतु मन है विक्षिप्तमनवालेकूं किसी प्रमाणतें ज्ञान होवै नहीं सा
वधानमनवालेकूं सकलज्ञान होवै हैं यातें सारे ज्ञान मानस कहे चाहिये यातें सर्वज्ञानका साधारण कारण मन है इंद्रिय अनुमानादिक
सकलप्रमाणका सहकारी है मनसहित नेत्रतें जो ज्ञान होवै सो चाक्षुषज्ञान कहियेहै मनसहित अनुमानप्रमाणतें होवै सो अनुमिति
ज्ञान कहियेहै मनसहित शब्दप्रमाणतें होवै सो शाब्दज्ञान कहियेहै अन्यप्रमाणविना केवलमनतें जो ज्ञान होवै सो मानसज्ञान कहि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

येहै सोकेवलमनतेंआंतरपदार्थसुखादिकनकाज्ञानहोवे यातेंआंतरपदार्थकाज्ञानहीमानसहोवैहै बाह्यपदार्थकाइंद्रियानुमानादिक-
विनाकेवलमनतेंज्ञानहोवैनहीं यातेंदशमकाज्ञानमानसहै यहकहनासंभवैनहीं आंतरपदार्थकाज्ञानमानसहोवैहै यहवीनेयायि
करीतिसेंकह्याहै सिद्धांतमेंतोकोईज्ञानमानसनहीं काहेतेंशुद्धआत्मातोस्वयंप्रकाशहै ताकेप्रकाशमेंकिसीप्रमाणकीअपेक्षानहीं
यातेंआत्माकाज्ञानमानसनहीं औसुखादिकसाक्षीभास्यहैं जिसकालमेंइष्टपदार्थकेसंबंधतेंसुखाकारअंतःकरणकापरिणामहोवे
औअनिष्टपदार्थकेसंबंधतेंदुःखाकारअंतःकरणकापरिणामहोवेतिसीसमेंसुखदुःखकूंविषयकरनेंवालाअंतःकरणकेसत्त्वगुणका
परिणामवृत्तिहोवैहै तावृत्तिमेंआरूढसाक्षीसुखदुःखकूंप्रकासैहै सुखदुःखकीउत्पत्तीमेंइष्टसंबंधऔअनिष्टसंबंधनिमित्तहै तिसीनि
मित्तसेंसुखऔदुःखकूंविषयकरनेंवालीअंतःकरणकीवृत्तिहोवैहै ताकीउत्पत्तिमेंकिसीप्रमाणकीअपेक्षानहीं यातेंसुखदुःखसा
क्षीभास्यहैं यद्यपिघटादिकनकाप्रकाशभीकेवलवृत्तिसेंहोवैनहीं किंतुवृत्तिमेंआरूढचे[illegible]सेंहीसर्वकाप्रकाशहोवैहै यातेंसारेपदार्थ
साक्षीभास्यकहेचाहियें तथापिघटादिकनकाज्ञानरूपअंतःकरणकीवृत्तिउपजैतामेंइंद्रियअनुमानादिकप्रमाणकीअपेक्षाहै औसु
खादिकनकेज्ञानरूपवृत्तिकीउत्पत्तिमेंकिसीप्रमाणकीअपेक्षानहीं इतनाभेदहै जावृत्तिमेंआरूढसाक्षीविषयकूंप्रकाशैसोवृत्तिज
हांइंद्रियअनुमानादिकप्रमाणसेंहोवे तहांविषयकूंसाक्षीभास्यनहींकहैहैं किंतुप्रमाणजन्यज्ञानकाविषयकहैहैं जहांप्रमाणके
व्यापारविनावृत्तिकीउत्पत्तिहोवैतावृत्तिमेंआरूढसाक्षीजिसकूंप्रकासैसोसाक्षीभास्यकहियेहै घटादिगोचरअंतःकरणकीवृत्तिइं
द्रियअनुमानादिकप्रमाणतेंहोवैहै तावृत्तिमेंआरूढसाक्षीप्रकासैहै तथापिघटादिकप्रमाणगोचरकहियेहैं साक्षीभास्यनहीं ३९
औसुखादिगोचरवृत्तिप्रमाणजन्यनहीं किंतुसुखादिजनकधर्मादिजन्यहैं यातेंसुखादिकसाक्षीभास्यहैं इसरीतिसेंसुखादिक

1620.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1621

औतिनकेज्ञानसमानसामग्रीसेंहोवेहै यातेंअज्ञातसुखादिकहोवेंनहीं किंतुज्ञातहीहोवेहै औ सु
पूर्वकालमें सुखादिकहोवें तोस्वज्ञानकेहेतुहोवें सुखादिकऔतिनकाज्ञानसमानकालमेंसमानसाम
तोनहीं औघटादिकनकेप्रत्यक्षज्ञानमेंघटादिकहेतुहैं काहेतें प्रत्यक्षज्ञानतें प्रथमघटादिकउपजें
घटादिकनकेजहां अनुमितिआदिज्ञानहोवेंतिनकेहेतुघटादिकनहीं अनुमितिज्ञानमेंतैसेंशाब्दज्ञा
गतपदार्थकेअनुमितिआदिकज्ञाननहींहुयेचाहिये यातेंअनुमितिज्ञानशाब्दज्ञानादिकनमें
न्तरज्ञानकेकारणनहीं पूर्वप्रसं[illegible]यहहै सुखादिकनकाज्ञानमानसनहीं किंतुसुखादिकसाक्षी
नहीं इसकारणतें सर्वज्ञानोंकाउपादानरूपअंतःकरणतोहै औज्ञानकास्वतंत्रकरणरूपइंद्रि
तेंदशमकाज्ञानमानसनहीं किंतुवाक्यजन्यहै औप्रत्यक्षहै इसरीतिसेंजोप्रत्यक्षज्ञानहो
जोऐसेंकहै जोइंद्रियजन्यज्ञानहोवेसोप्रत्यक्षहोवे इंद्रियजन्यज्ञानकोईअप्रत्यक्षनहींहोवेहै
ज्ञानकूं अप्रत्यक्षताहमवीनहींकहैहैं इंद्रियजन्यज्ञानतोसारेप्रत्यक्षहैं कहूंशब्दादिकनमें
काविरोधनहीं इसरीतिसेंनैयायिकानुसारीधर्मराजकेपुत्रकीउक्तिअसंगतहैयातेंअभाव
पृथक्प्रमाणजन्यहै जहांप्रतियोगीहोतातोताकाउपलंभहोता इसरीतिसेंप्रतियोगीके
ज्ञानयोग्यानुपलब्धिप्रमाणजन्यहै औअंधकारमेंघटाभावकाज्ञानअनुमानादिजन्य
सरीतिसेंघटरूपप्रतियोगीकेआरोपतेंघटकेउपलंभकाआरोपसंभवैनहीं इसरीतिसें

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized

वृत्ति- तनेंहीज्ञानवेदांतमतमेंकेवलअनुपलब्धिजन्यहैं नैयायिकमतमेंइंद्रियकरणहैं अनुप
४० लब्धिमेंप्रमाणतानहींहैं वेदांतमतमेंअनुपलब्धिमेंप्रमाणताअधिकमाननीहोवे
न्यायमतमेंविशेषणतासंबंधकूंज्ञानकीकरणताअधिकमाननीहोवैहे औविशेषणताम
हे इसरीतिसेंवेदांतीकूंअनुपलब्धिमेंप्रमाणताअधिकमाननीऔनैयायिककूंविशेषणत
ध्वगौरवकिसीकूंनहीं दोनूंकासमानकल्पनाहै तथापिअभावज्ञानकीकरणताइंद्रियमें
हे औवायुमेंरूपाभावकाज्ञाननेत्रव्यापारसेंविनाहोवैहे औताकूंनैयायिकचाक्षुषज्ञानव
व्यापारसेंविनाहोवैहे ताकूंबीनैयायिकचाक्षुषज्ञानकहेहैं इसरीतिसेंअनेकस्थानमें
ताकूंतिस इंद्रियजन्यकहेहैं सोअनुभवविरुद्धहै जिसइंद्रियव्यापारतेंजोज्ञानहोवे तिस
रविनाजोज्ञानहोवे तिसइंद्रियजन्यताज्ञानकूंमानैतोसकलज्ञानसकलइंद्रियजन्यहुयेचा
यायिकमतसमीचीननहीं इसरीतिसेंअभावकाज्ञानअनुपलब्धिप्रमाणजन्यहै परंतुअभ
कारणअनुपलब्धिहै यातेंअभावज्ञानकीअसाधारणकारणताअनुपलब्धिप्रमाणकालक्षण
उपयोगहै नेहनानास्तिकिंचनइत्यादिकश्रुतिप्रपंचकात्रैकालिकअभावकहेहैं अनुभवसिद्धप्र
चकास्वरूपसेंनिषेधनहींकरेहै किंतुप्रपंचपारमार्थिकनहीं यातेंपारमार्थिकत्वविशिष्टप्रपंच
तिसेंपारमार्थिकत्वविशिष्टप्रपंचकाअभावश्रुतिसिद्धहै औअनुपलब्धिप्रमाणसेंबीसिद्धहै

नहीमानसहोवैहे बाह्यपदार्थकाइंद्रियानुमानादिक- प्र
ौं आंतरपदार्थकाज्ञानमानसहोवैहै यहबीनैयायि ६
काशहै ताकेप्रकाशमेंकिसीप्रमाणकीअपेक्षानहीं
र्थकेसंबंधतेंसुखाकारअंतःकरणकापरिणामहोवै
दुःखकूंविषयकरनैंवालाअंतःकरणकेसत्वगुणका
नीमेंइष्टसंबंधऔअनिष्टसंबंधनिमित्तहै तिसीनि
किसीप्रमाणकीअपेक्षानहीं यातेंसुखदुःखसा
चे... ऐसेंहीसर्वकाप्रकाशहोवैहे यातेंसारेपदार्थ
ंद्रिय अनुमानादिकप्रमाणकीअपेक्षाहै औसु
मेंआरूढसाक्षीविषयकूंप्रकाशेसोवृत्तिज
ाजन्यज्ञानकाविषयकहेहैं जहांप्रमाणके
हियेहे घटादिगोचरअंतःकरणकीवृत्तिइं
प्रमाणगोचरकहियेहैं साक्षीभास्यनहीं ३९
कसाक्षीभास्यहैं इसरीतिसेंसुखादिक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जैसें प्रपंचकी स्वरूपसें उपलब्धि होवे है तैसें पारमार्थिक प्रपंचकी बी उपलब्धि होती औ स्वरूपसें
रूपतें प्रपंचकी उपलब्धि होवे नहीं यातें पारमार्थिकत्वविशिष्ट प्रपंचका अभाव है इसरीतिसें
है औरबी अनेक अभावनका ज्ञान जिज्ञासूकूं इष्ट है ताका हेतु अनुपलब्धि प्रमाण है
विरचिते वृत्तिप्रभाकरे अनुपलब्धिनिरूपणं नाम षष्टः प्रकाशः समाप्तः॥ श्रीकृष्णार्प

CC ... yar Collection. Digitized

1624

तहीमानसहोवैहै बाह्यपदार्थकाइंद्रियानुमानादिक-
ोंआंतरपदार्थकाज्ञानमानसहोवैहै ५ हवीनैयाथि
काशाहै ताकेप्रकाशमैंकिसीप्रमाणकीअपेक्षानहीं
र्थकेसंबंधतैंसुखाकारअंतःकरणकापरिणामहोवै
ःखकूंविषयकरनैवालाअंतःकरणकेसत्वगुणका
तीमैंइष्टसंबंधऔअनिष्टसंबंधनिमित्तहै तिसीनि
किसीप्रमाणकीअपेक्षानहीं यातैंसुखदुःखसा
तै...ऐसैंहीसर्वकाप्रकाशाहोवैहै यातैंसारेपदार्थ
द्रिय अनुमानादिकप्रमाणकीअपेक्षाहै औसु
पैंआरूढसाक्षीविषयकूंप्रकाशैसोवृत्तिज
जन्यज्ञानकाविषयकहैहैं जहांप्रमाणके
इयेहै घटादिगोचरअंतःकरणकीवृत्तिइं
माणगोचरकहियेहै साक्षीभास्यनहीं

साक्षीभास्यहै इसरीतिसैंसुखादिक

1620.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA